जैनाचार्यरचित शुभाशुभ वर्ष जाननेका अपूर्व ग्रंथ.

मेघमहोदय-वर्षप्रबोध.

कर्त्ता—

श्रीमन्महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि.

(हिन्दी अनुवाद सहित)

यदि आपको वर्षा कब और कौनसी बरसेगी, सुकाल होगा या दुष्काल ये जानना हो तथा समस्त प्रकार के धान्य, सोना चांदी आदि धातु, रूई कपड़ा आदि वस्तु ये महँगा होगा या सस्ता इत्यादि बहुत उपयोगी विषयों को जानने की उत्कंठा हो तो इसको अवश्य मंगवा कर पढ़िये ।

पृष्ठ ४२५ पक्की जील्द की कीमत ४) रुपिया पोस्ट खर्च अलग ।

मिलने का पत्ता—

पं० भगवानदास जैन.

सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस.

बीकानेर. (राजपूताना)

इस किताब छपवाने के लिए जिन२
महाशयोंने सहायता दी है
उनकी शुभनामावली.

१५१ किताब फलोदी-निवासी सुगनमलजी गोलेछा की धर्मपत्नी राधाबाई की तरफ से भेंट।

१०१ किताब बीकानेर-निवासी सेमकरणजी सावण सुखा की तरफ से भेंट।

५१ किताब कोटा के श्रीसंघ तरफ से भेंट।

५१ किताब लोहावट निवासी लूणीया आशारामजी मगीदानजी की तरफ से भेंट।

४०१ किताब बीकानेर के श्रावक श्राविकाओं की तरफ से भेंट।

[illegible]—

श्रीयुत रतनलालजी मिसरूप
बांठों की गवाड़
बीकानेर (राजपूताना)

इस किताब छपवाने के लिए जिन२ महाशयोंने सहायता दी है उनकी शुभनामावली.

१५१) किताब फलोदी-निवासी सुगनमलजी गोलेछा की धर्मपत्नी राधाबाई की तरफ से भेंट।

१०१) किताब बीकानेर-निवासी मेघराजजी सावणसुखा की तरफ से भेंट।

५१) किताब कोटा के श्रीसंघ तरफ से भेंट।

५१) किताब लोहावट निवासी लूणीया आसारामजी सवाईदानजी की तरफ से भेंट।

४०) किताब बीकानेर के श्रावक श्राविकाओं की तरफ से भेंट।

इस पुस्तक मिलने का ठिकाना—

श्रीयुत रतनलालजी मिसरूप

कोचरों की गवाड़

बीकानेर (राजपूताना)

प्रस्तावना .

प्रियवर जैन बन्धुओ!

यह " पूर्णक्षेमवल्लभविलास " नामक छोटासा ग्रन्थ प्रकाशित कर भेंट रूपमें आपकी सेवा में उप-स्थित किया जाता है, पूर्ण आशा है कि इसका अव-लोकन तथा नैत्यिक क्रिया आदि विषय में सदुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ।

चिरकाल पूर्व इस ग्रंथ का संग्रह कर श्रीमान् मान्यवर, गुरुवर्य प्रातःस्मरणीय श्री१००८श्री क्षेमसागरजी महा-राज ने परम कृपा कर मुझे इसे इसलिये सौंपा था कि मैं इसका प्रकाशन कर जैन समाज की सेवामें उपस्थित करूँ। मैं भी अपने ऊपर स्थित भार से उऋण होनेके लिए चिर समय तक इच्छा और चेष्टा करता रहा, पर-न्तु दैवयोग से अब तक अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सका ।

क्षेत्रस्पर्शना के अनुसार संवत्१९८२का मेरा चातु-र्मास्य श्री बीकानेर नगरमें हुआ और वहां के कनि-

जब सुयोग्य धर्मशील श्रावक वर्ग को यह बात किसी प्रकार विदित हो गई कि हम सब लोगों के लिए अत्युपयोगी तथा जैन समाज के लिये परम लाभदायक ग्रन्थ प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है, फिर तो क्या था, अधिकांश श्रावक समुदाय इस के प्रकाशन के लिये अनुरोध करने लगा. ऐसा होने पर मैंने भी यह निश्चय कर लिया कि अब इसको शीघ्र ही प्रकाशित कर अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये, इस निश्चय के कर लेने पर भी मैं अपनी संकोचशील प्रकृति के कारण एतदर्थ सहायता प्राप्ति के विषय में कुछ कहने सुनने में सङ्कोच ही करता रहा. अतः फिर भी कुछ दिनों तक असमंजस में ही पड़ा रहा तथा श्रावक वर्ग से एतदर्थ हां हां ही करता रहा, अन्ततः कतिपय धर्मशील श्रावक जनों ने स्वयमेव इस कार्य को अपने हाथ में ले कर इस के लिये उद्यम करना प्रारंभ किया. बस ऐसा होते ही कार्य का आरंभ हो गया और केवल यहीं से नहीं किन्तु बाहर से भी सहायता प्राप्त होने लगी, प्रति फल यह हुआ कि लग भग पांच मास में ही ग्रन्थ मुद्रित हो कर तैयार हो गया और मैं इसे आप की सेवा में उपस्थित कर अपने कर्तव्य का पालन करने में समर्थ हो सका।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन २ महानुभाव स- ज्जनों तथा बाइयों ने आर्थिक सहायता प्रदान कर अपनी धर्मशीलता का परिचय दिया है उनको इस ध- र्म कार्य में योग देने के हेतु धन्यवाद है,उनकी नामा- वली भी ज्ञानार्थ पहले प्रकाशित की गई है।

इस ग्रन्थ में-देववंदन, गुरुवंदन, सामायिक विधि, रायसी देवसी प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, गुरुवर कृत स्तवन, अष्टक, थुइयां, वासक्षेप पूजा, नवपद ओली विधि,. प्रत्याख्यान पारणविधि, चौवीस महाराज के १५० कल्याणक तथा बीस विहरमाणजी के नाम, इत्यादि अनेक उपयोगी विषयों का संग्रह है, जिनकी उपयोगीता का निश्चय पाठक जन अवलोकनके द्वारा स्वयमेव कर सकेंगे।

मेरा विचार यह भा था कि—ग्रन्थ के अन्त में आचार्योंके निर्मित नीति और वैराग्य के उपदेशदायक कतिपय उत्तमोत्तम श्लोकों का भी अर्थ सहित संग्र ह कर संयोजन किया जाता कि जिससे गृहस्थ श्राव कों को नैत्यिक क्रिया के ग्रन्थ के द्वारा ही उक्त विष य के उत्तमोत्तम श्लोकोंका भी अभ्यास होकर लाभ पहुँचता; परन्तु पुस्तकप्रकाशन की शीघ्रता आदि का कारणों से ऐसा नहीं हो सका, अस्तु- आशा है कि

किसी अन्य उपयोगी पुस्तक के साथ में एसा करनेका शुभावसर शीघ्र ही प्राप्त होगा।

अन्त में इस कार्य में योगदाता सज्जनों को तथा पालीताना निवासी पं० भगवानदास जैन ने इसका प्रूफ देखने में परिश्रम लिया है इसलिये उन को भी धन्यवाद प्रदान कर पाठकवर्ग से मेरा निवेदन है कि ग्रन्थ में लेखन, शोधन और मुद्रण आदि के द्वारा जो २ त्रुटियां रही हों उनका संशोधन कर तथा ग्रन्थ का अवलोकन और सदुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करें। किमधिकं विज्ञेषु.

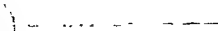
निवेदक—

वीर संवत् २४५८ }
द्वितीय चैत्र शुक्ला १५ }

मुनि वल्लभसागर.
बीकानेर.

विषयानुक्रमणिका.





पूज्यपाद संविग्न [illegible] महाराज

स्वर्गवास वि. सं. १९८९



श्रीपञ्चपरमेष्ठिभ्यो नमः ।
श्रीजिनदत्त-कुशल-गुरुभ्यां नमः ।

श्रीदेव-गुरु-धर्म-वन्दनविधिः ।

प्रथम पाठः ।

किसी स्थान में श्रीदेव-गुरु-धर्म भक्त दो श्रावक रहते थे, दोनों सगे भाई थे, उनमें से बड़े का नाम विवेकचन्द्र और छोटे भाई का नाम विनयचन्द्र था, दोनों भाई सार्थक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई अत्यन्त ही विवेकवान् था, तथा छोटा भाई परम विनयसंपन्न था, बड़ा भाई विवेकचन्द्र प्रतिदिन की श्रीदेव गुरु-धर्म वन्दनक्रिया को विशुद्ध भाव से किया करता था, किन्तु छोटा भाई विनयचन्द्र छोटी अवस्था का होने के कारण उक्त क्रिया से अनभिज्ञ था, अर्थात् उक्त क्रिया के गौरव और लाभ को नहीं समझता था इसलिए बड़े भाई विवेकचन्द्र की यह इच्छा थी कि मेरे समान मेरा छोटा भाई भी उक्त क्रिया के महत्त्व और लाभ को समझे, तथा प्रतिदिन उसे अवश्य कर्त्तव्य जान कर पूर्ण करे, अतएव एक दिन प्रातःकाल विवेकचन्द्र ने जिस प्रकार प्रतिबोध देकर अपने छोटे भाई को इस क्रिया का महत्त्व बतला कर इस में प्रवृत्त किया वह इस प्रकार है:—

विवेकचन्द्र— भाई विनयचन्द्र! उठो प्रातःकाल होने को आया है अब तक सोते रहना उचित नहीं है, क्यों की मनुष्य को प्रातःकाल शीघ्र ही उठकर शौच आदि आवश्यक क्रिया से निवृत्त होकर जिनेन्द्र और गुरु आदि की वन्दन क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिये।

विनयचन्द्र— (उक्त बात को सुनते ही शीघ्र उठ बैठा और बोला) हाँ भाई साहब! मैं उठ बैठा आज्ञा दीजिये।

विवेकचन्द्र— अच्छा चलो पहिले अपने परमदेव वीतराग परमात्मा के दर्शन करें पीछे अन्य काम को करेंगे, क्योंकि शान्त और अलौकिक शोभावाले देव के मुखारविन्द का दर्शन करेंगे तो अपने को सिद्धि और समृद्धि प्राप्त होगी और उन के प्रभाव से अपना सब दिन का व्यवहार सुखकारी होगा, नीतिशास्त्र में कहा है की— [illegible] महात्मा महानुभाव का दर्शन होने से मनुष्य का तमाम दिन अच्छे प्रकार बीतता है, उस को इतना लाभ होता है, तथा बुद्धि निर्मल होती है तो भला अपने भगवान देव के मुखारविन्द का दर्शन करने से कैसा ही लाभ नहीं होगा।

विनयचन्द्र— हे भाई साहब! आप का वचन सत्य है, [illegible] अनुसार [illegible], तथा मैं भी [illegible] परमात्मा का दर्शन कर अपने को कृतार्थ करेंगे, (यह कह [illegible])।

विवेकचन्द्र— [illegible] है [illegible]

[illegible] चाहिये, [illegible]

"रिक्तहस्तेन नो पश्येद् राजानं देवता गुरुम्।" इस लिए देवदर्शन के लिए चलते समय अपने को खाली हाथ नहीं चलना चाहिये कुछ चावलोंको ले लेना चाहिये।

जिनचन्द्र— जी साहब! लाता हूँ (चावल ले कर दोनों भाई चले और मन्दिरमें पहुँच कर नीचे लिखे अनुसार वन्दन किया की, इसी प्रकार सब को करना चाहिये।

द्वितीयपाठः।

'निसीहि निसीहि निसीहि' १ यह पाठ मन्दिर में प्रवेश करना। (देवमन्दिर में जाकर विनय के साथ यह वाक्य बोले) —

त्रैलोक्य आर्ति हर नाथ! तुझे नमूँ मैं,
हे भूमि के विमल रत्न! तुझे नमूँ मैं।
हे ईश! सर्वजगत के तुझे नमूँ मैं,
मेरे भवोदधि नाशक! तुझे नमूँ मैं॥ १॥

प्रभुमुद्रा को देखते ही दोनों हाथों को जोड़ कर तथा मस्तक को नमाकर फिर तीन प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथमप्रदक्षिणां ददामि।

दूसरी प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीयप्रदक्षिणां ददामि।

तीसरी प्रदक्षिणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो! चारित्रगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयप्रदक्षिणां ददामि ।

इस के पश्चात् साथिया करे और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ– हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साथिया बनाता हूँ।

इस के पीछे तीन पुंज (ढिगली) करे और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुंजं रचयामि ।

अर्थ -हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिए मैं तीन ढिगलियों को बनाता हूँ।

और एक ढिगली पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे करुणासिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं करोमि। पुञ्जमेकं च सिद्धस्थित्यर्थं करोमि।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं अर्द्धचन्द्र के समान आकार करता हूँ और एक ढिगली सिद्धसमान स्थिति के लिये करता हूँ।

इस के पीछे भगवान् की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर तथा स्त्री हो तो भगवान् की बाईं भुजा की तरफ खड़ी होकर हाथ जोड़कर तथा दोनों गोड़ा को और मस्तक को नमाकर यह बोले—

च्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
मत्थएण वंदामि।

न वाक्य को उठ कर के साथ में तीन बार कहना चाहि-
र के पीछे इरियावही कहना चाहिये।

इरियावहियाए।

च्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडि-
म ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए,
णाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरिय-
ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा
णे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइं-
चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया,
या, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया,
णं ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स
मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरी।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोही-
णं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए,
उस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं,
, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भम-

लिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

फिर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारके एक लोगस्स प्रगट कहे।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तिय वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

फिर नीचे बैठ के 'भगवन्! चैत्यवन्दन करूं' जीमणा गोडा नीचा करके, डावा गोडा ऊंचा करके, अंजलि बांध के नीचे प्रमाणे चैत्यवन्दन करे -

अनन्तगुणी श्रीशान्तिजिन नर नारी गुण गावे, हृदय भाव शुचि प्रेमसु अजर अमर पद पावे। सुख संपत्ति कारक तुम प्रभु पूर्ण प्रीति विसराम, क्षेम कुश-ल नित चाहिये करूं वन्दन शिर नाम ॥ १ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधरा-णं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तार-याणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह-मपुणराविसिअं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो

जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइयाइं उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि।

भगवन्!— जावन्त केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ २ ॥

चौबीस भगवान् का स्तवन।

प्रह उठी मैं सदा नमूं चारि हाथ जोड के साम। चोवीसों जिनराज को मैं नित्य करूं परणाम ॥ १ ॥ (टेक) १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन अरु ५ सुमति महाराज। ६ पद्म ७ सुपारस ८ चंदाप्रभुजी से लग न लगी है आज ॥२॥ प्र० ॥ ९ सुविधि १० शीतल ११ श्रेयांस सवाई दीजे मुक्ति नाथ। १२ वासुपूज्य जिन बारमा वारि १३ विमल १४ अनन्त ज नाथ ॥३॥ प्र० ॥ १५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्थु जिनेश्वर १८ अर १९ मल्लि महाराज। २० मुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेमजी

२३ पार्श्व२४वीर जिनराज ॥४॥ प्र०॥ कहे पाठक क[illegible]
की, निधान पूरो आस। कर जोडी गुण गावसां, [illegible]
चंद गोपालदास ॥ ५ ॥ प्र० ॥

उवसग्गहरस्तोत्र।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥
विसहर- फुल्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होई।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥ ३ ॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुओ महायस, भत्तिभरनिब्भरेण हियएण।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द ॥ ५ ॥

पीछे दोनों हाथ जोड़ मस्तक लगा के निम्न पाठ बोलना—

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥

पीछे गोडा नीचे कर हाथ जोडकरके यह बोलना —

अरिहंत चेइआणं करेमि

आए पुन्नवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्ति
आए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥ १ ॥
सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणी
ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीए
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छा
ए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचा
लेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगा
रेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥
जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

इस के पीछे काउस्सग्ग में दोनों हाथों को नीचे की ओ
लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होंठ और जीभ को बिन
हिलाये यह चिन्तवन करना। काउस्सग्ग पार के (पीछे दोनों हाथ
को जोड़ कर यह बोले—

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥
श्रीशान्तिनाथजी, साताकारक देव।
मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्त्ति सेव ॥
मुख रोम हुलसिया, वन्दूँ प्रणमूँ नाथ।
शुद्ध समकित माँगूँ, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥ २ ॥

इस प्रकार दर्शन कर तथा पीछे पच्चक्खाण कर के "आवस्सही"

कर तीन बार कह कर मन्दिर से बाहर जावे।

तृतीय पाठ।

पूर्वोक्त रीति से देववन्दनविधि को पूर्ण करने के पीछे गु
विधि को करना चाहिये, अर्थात् गुरुमहाराज के सामने नी
नीचे लिखे वाक्य से दो बार खमासमण देना चाहिये।

**इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए नि
सिहिआए मत्थएण वंदामि ॥ १ ॥**

इस प्रकार खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोलकर
महाराज से सुखसाता पूछनी चाहिये –

**इच्छाकार भगवन्! सुह राइय, सुह देवसिय सुख
शरीर निराबाध सुख संयमयात्रा निर्वहो छो जी स्वामि
साता छे जी ॥ २ ॥**

पूर्वोक्त पाठ को पढ़ कर श्रीगुरुजी को नमस्कार करे, पीछे नीचे
बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे रखकर बायें हाथ को मुहपत्ती पर मुख
पर लगाकर। नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

**इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि
अब्भिंतर राइयं खामेउं इच्छं खामेमि देवसियं, जं किं-
चि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे**

---

1 दिन के बारह बजे तक यह पाठ पढ़ना चाहिये, किन्तु बारह
बजने के पीछे "राइयं" की जगह "देवसियं" शब्द [illegible]
चाहिये।

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावनियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं,मणेणं वाय ए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमा निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इस के पश्चात् खमासमण देकर नीचे लिखे हुए सूत्रों को कह चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि क्कमामि। इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिया विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्क मणे ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणासंक मणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिय चउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइ या संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ णं संकामिया जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायण ट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं,खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमु च्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

यहां पर चार "नवकार" अथवा एक "लोगस्स" का काउस्सग्ग करके "णमो अरिहंताणं" कहकर काउस्सग्ग को पारना चाहिये पीछे प्रकटरूप से नीचे लिखे हुए 'लोगस्स" इत्यादि पाठ को कहना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा

२

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं, मणेणं वाया-ए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इस के पश्चात् खमासमण देकर नीचे लिखे हुए सूत्रों को कहना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि-क्कमामि। इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्क-मणे ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणासंक-मणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइ-या संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओठा-णं संकामिया जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायण-ट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमु-च्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं

ुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवं-
ताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं
ाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

यहां पर चार " नवकार" अथवा एक " लोगस्स" का काउस्सग्ग
रके " नमो अरिहंताणं" कहकर काउस्सग्ग को पारना चाहिये
ादि प्रकटरूप में नीचे लिखे हुए " लोगस्स" इत्यादि पाठको कहना
ाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे
ंभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं,
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल
सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं
च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-
जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
ुवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तिय
वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बो-
हिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा
आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
जावनियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं, मणेणं वाया-
ए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इस के पश्चात् खमासमण देकर नीचे लिखे हुए सूत्रों को कहना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि-
क्कमामि। इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए
विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्क-
मणे ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणासंक-
मणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया
चउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइ-
या संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओठा-
णं संकामिया जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि
दुक्कडं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-
हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायण-
ट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, पित्तमु-
च्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं,

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
वनियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं, मणेणं वाया-
काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि
न्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इस के पश्चात् खमासमण देकर नीचे लिखे हुए सूत्रों को कहना
हिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि-
ामि। इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए
ाहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्क-
ा ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणासंक-
ा, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया
रिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइ-
संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओठा-
संकामिया जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि
डं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-
करणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायण-
ए ठामि काउस्सग्गं।

...ससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
...णं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमु-
... सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

यहां पर चार "नवकार" अथवा एक "लोगस्स" का काउस्सग्ग करके "नमो अरिहंताणं" कहकर काउस्सग्ग को पारना चाहिये पीछे प्रगटरूप से नीचे लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठ को कहना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा

सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पश्चात् एक एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठों को बोलना चाहिये—

१- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणो संदिसाउं? इच्छं।

२- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बेसणे ठाउं? इच्छं।

३- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाउं? इच्छं।

४- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूँ।

फिर पाँचवाँ खमासमण देकर आठ बार नवकार मन्त्र को बोले।

॥ इति प्रथम सामायिकविधि सम्पूर्ण ॥

सामायिक ४८ मिनिट की होती है जिसमें ज्ञान ध्यान करना। इसके पश्चात् सामायिक को पारना चाहिये उसकी विधि यह है— कि खमासमण देकर मुहपत्ती की पडिलेहणा करनी चाहिये, फिर दूसरा खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोले —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूँ, यथाशक्ति।

इस के पीछे फिर खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिकं पारेमि, तहत्ति।

इस के पीछे खड़े होकर थोड़ासा झुककर तीन बार नवकार मंत्र का गुणे पीछे गोड़ाली आसनसे नीचे बैठकर [illegible] नमाकर नीचे लिखे पाठ का बोले

भयवं दसन्नभद्दो, सुदंसणो थूलभद्द वइरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥१॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय-मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥४॥ सामाइय पोसहसंठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधे लीधुं, विधे पार्युं, विधि करतां, जे कोइ अविधि आशातना लागी होय, दस मनके, दस वचनके, बारह कायाके, बत्तीस दूषण मांहि जो कोई दूषण लगा होय सो सहु, मनकर वचनकर कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं।

। राई प्रतिक्रमणविधि ।

पांचवां पाठ

उक्त प्रकार से सामायिक ग्रहण करने के पीछे एक राम.समय

देकर नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवन्दन करूँ, इच्छं।

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए सूत्रों को क्रमशः बोले—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जंति पहु नेमिजिण जयउ वीर सच्चउरि-मंडण ॥ १ ॥ भरुअच्छहि मुणिसुव्वय, मुहरि पास दुह-दुरिय-खंडण। अवरविदेहिं जे तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि। तीयाऽणागय-संपइ य वंदूं जिण सव्वेवि ॥२॥

कम्मभूमीहिं कम्मभूमीहिं पढम-संघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ। नव-कोडीहिं केवलीण, कोडी- सहस्स नव साहु-संपइ। संपइ जिणवर वीसमुणि, बिहुं कोडीहिं वरनाण। समणाह कोडीसहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्चविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ। चउसयछायासीया, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥२॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडी लक्ख तेवन्ना। अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ४ ॥

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवर-नाणदंसण-धराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥ १ ॥

(जावंति चेइआइं)

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह सन्तो तत्थ सन्ताइं ॥१॥

(जावंत केवि साहू)

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥

(परमेष्ठि नमस्कार)

म्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७॥

इसके पीछे पडिक्कमण के ठावणे की विधि को करनी चाहिये, उस की विधि यह है कि—

१- प्रथम खमासमण देकर "श्री आचार्यजी मिश्र" कहकर वन्दन करना चाहिये।

२- दूसरा खमासमण देकर "श्रीउपाध्यायजीमिश्र" कहकर वन्दन करना चाहिये।

३- तीसरा खमासमण देकर "जङ्गमयुगप्रधान वर्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजी" का नाम लेकर वन्दन करना चाहिये।

४-चौथा खमासमण देकर सर्वसाधुओं को वन्दन करना चाहिये।

इस प्रकार चार खमासमण देकर पडिक्कमण को ठाकर गोदोहन- आसन से बैठकर मस्तक को नमाकर दोनों हाथों से मुंहपत्ती को मुखपर देकर नीचे लिखे हुए "सव्वस्सवि" इत्यादि वाक्य को बोलना चाहिये—

हरियसयवि राइय-दुविहिय-दुक्खाविय-दुविहिय,
इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे दूर लिखा हुआ "णमोत्थु णं" पाठ बोलना चाहिये। तदनन्तर खड़े होकर नीचे लिखा हुआ "करेमि भंते" का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेयं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखा हुआ "इच्छामि ठामि" का पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥१॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ 'तस्स उत्तरी' का पाठ बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ "अन्नत्थ ऊससिएणं" का पूरा पाठ बोलना चाहिये।

इसके पीछे चारित्रशुद्धि के निमित्त चार नवकारमन्त्र अथवा पूर्व लिखे हुए एक "लोगस्स" का काउस्सग्ग करके उसको पार कर फिर दर्शनशुद्धि के लिये प्रकटरूपसे पूर्व लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये।

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ पाठको बोलना चाहिये—

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ "अन्नत्थऊससिएणं" इत्यादि पाठ बोलना चाहिये।

तदनन्तर चार नवकारमन्त्र का अथवा पूर्व लिखा हुआ एक "लोगस्स" इत्यादि पाठ का काउस्सग्ग करके, पारके पीछे ज्ञानाचार के निमित्त नीचे लिखा हुआ पाठ बोलना चाहिये—

यसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिया जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

फिर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ती पडिलेहणा करनी चाहिये बायें हाथ में मुंहपत्ती को लेकर उस से बायें कान से दाहिने कान तक मस्तक को ढूंककर मुंहपत्ती को आगे रखलेना चाहिये और उस के मध्यभाग में गुरुचरण की कल्पना करलेनी चाहिये॥

गुरुवन्दना का पाठ यह है—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि। अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं, आवस्सियाए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे अठारह पाप स्थानक की आलोचना नीचे लिखे हुए पाठ से करनी चाहिये—

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्व शल्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय, ते सव्वे हुं मन वचन कायें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नवकारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनरे कर्मादानों की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परिग्रहादि कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय मो-नसे मने वचने काया से करके ३ त्रि अतिचार आलोच-ना कर के पडिक्कमता में आलोउं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

इत्यादि पाठ को पढ़ कर " इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ"! इत्यादि " इच्छामि ठामि" इत्यादि सम्पूर्ण पाठ को बोल कर नीचे लिखाहुआ वंदित्तु सूत्र को बोलना चाहिये, तथा इस सूत्र को ४२ वीं गाथा तक बैठ कर ही पढ़ना चाहिये, तथा शेष आठ गाथाओं को खड़े हो कर पढ़ना चाहिये—

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइयं सव्वं॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि॥ ४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ५ ॥ संकाकंखविगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सऽइआरे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइआरे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइयं सव्वं॥ ८॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअम-

प्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहबंधछविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिकमे राइयं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलग अलिअवयणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीयवयस्सऽइआरे, पडिकमे राइयं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुल कूडमाणे, पडिकमे राइयं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ । आयरियमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग विवाह तिव्व अणुरागे । चउत्थवयस्सइआरे, पडिकमे राइयं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वये पंचमंमि आयरियमप्पसत्थंमि । परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू-रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे । दुपए चउप्पयंमि य, पडिकमे राइयं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स य परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च । वुड्ढिसइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि य मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ । उवभोगपरिभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे

॥ २० ॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोलिदुप्पोलियं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगाली-वणसाडी-भाडी-फोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव दंत-लक्ख-रस-केस-विस-विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ २४ ॥ न्हाणुव्वट्टण-वन्नग-विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइ विहूणे। सामाइयवितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे। देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही-पमाय तह चेव भोयणाभोए। पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो,

नकओो तवचरणकरणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे,
निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जीवि
मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा म
हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे व
यस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइ
रस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्ना कसाय दं
। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३
सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्प
होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६
तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं
खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो॥३
जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा ह
हंति, तो तं हवइ निव्विसं॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं क
रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं
णइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलो
निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरि
भरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण सा
अ बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अ
रेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य
डिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे
च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्न

अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावन्त केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए, भवसयसहस्समहणीए । चउवीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीअपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इस के पीछे दो बार नीचे लिखा हुआ "सुगुरुवन्दन" का पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि । अहो कायं-कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहु-



सुमेण मे राई वइक्कंता, जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो राइयं वइक्कमं, आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइ आए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे अवग्रह में ही रहते हुए नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओम्हि अब्भिंतरराइयं खामेउं, इच्छं, खामेमि राइयं। जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस पाठ को बोलकर संडासा का प्रमार्जन कर गोदोह-आसन से बैठकर दोनों हाथों का पडिलेहण कर मुहपत्ती को बायें हाथ से मुख पर देकर और दाहिने हाथ को गुरु के सामने रखकर तथा नीचे को नमकर "जं किंचि अपत्तियं" इत्यादि 'अब्भुट्ठिओऽम्हि" का सम्पूर्ण पाठ कहना चाहिये, फिर दोबार "सुगुरुवादणा" देकर भूमि

का प्रमार्जन करते हुए पीछे पगसे अवग्रह के बाहर आना चाहिये, तथा नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे य। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १॥ सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलि करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिय नियचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

इस के पीछे नीचे लिखा हुआ "करेमि भंते" का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए "इच्छामि ठामि" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये —

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे राइओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं

कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

इनके पीछे नीचे लिखे हुए "तस्स उत्तरी" इत्यादि पाठ को योजना चाहिये —

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे यह योजना चाहिये कि—

श्रीमहावीरस्वामि- छम्मासीतप- चिन्तन- निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए "अन्नत्थ" इत्यादि पाठ को योजना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठ को पढ़कर कायोत्सर्ग करना चाहिये तथा उस में श्रीमहावीर स्वामी के किये हुए छमासी तप का चिन्तन करना चाहिये, अथवा चौबीस नवकार या छ " लोगस्स" का कायोत्सर्ग करना चाहिये, तथा कायोत्सर्ग को पारकर नीचे लिखे हुए " लोगस्स" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

उक्त पाठ को पढ़कर गुरुजी की प्रतिलेखना कर के नीचे लिखे हुए "मुहपत्ती" पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज
हिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि
कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अ
पहुसुभेण भे राई वइक्कंता, जत्ता भे जव
खामेमि खमासमणो राइयं वइक्कमं, आ
पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आस
त्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए
कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
ए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए
ए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासम
मि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिर

इस प्रकार दो बार गुरुवन्दन देकर "सकलती
नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

सकलतीर्थवन्दना—सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्त
ये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारका
पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्त
श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्य
वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले ह
वक्षारे कूटनन्दीश्वरकनकगिरौ नैषधे नील
शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिम
र्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि

ले विन्ध्यशृङ्गे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा,
ते नारके या कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले।
ग्रे श्रोत्रयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ,श्रीम-
ङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ३ ॥
पाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे
' च वाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे। कर्णाटे हेम-
विकटतरकटे चित्रकूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां
दिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे
मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले
कुवलयतिलके सिंहले केरले वा। डाहले कोशले वा
लितसलिले जङ्गले वाढमाले, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां
दिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ५ ॥ अङ्गे वङ्गे कलिङ्ग
तजनपदे सत्प्रयागे तिलङ्गे, गौडे चौडे मुरण्डे वरतर-
ड्डे उड्रियाणे च पौण्ड्रे। आर्द्रे माद्रे पुलिन्द्रे द्रविड़
लये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदि-
महं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ६ ॥ चम्पायां चन्द्रमुख्यां
पुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशाम्ब्यां कोशलायां
कपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम्। नासिक्ये राजगेहे
पुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्याम्, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां
तदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥७॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्त-
े,गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके

जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे । ग्रामेऽरण्ये वने
स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्तीर्थङ्करा
प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥ ८ ॥ श्रीमन्मे
कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जम्बूवृक्षे, चौग्र
चैत्यनन्दौ रतिकररुचके कुण्डले मानुषाङ्के । इक्षु
जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिल
भवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥ ६ ॥ इ
श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद
स्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसन्ध्यम्,
तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवान
कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारि

श्रीऋषभनाथ, श्रीअजितनाथ, श्रीसम्भवन
श्रीअभिनन्दननाथ, श्रीसुमतिनाथ, श्रीपद्मप्रभ
श्रीसुपार्श्वनाथ,श्रीचन्द्रप्रभनाथ, श्रीसुविधिनाथ, (
पुष्पदन्तनाथ),श्रीशीतलनाथ, श्रीश्रेयांसनाथ,श्रीव
पूज्यनाथ, श्रीविमलनाथ, श्रीअनन्तनाथ, श्रीधर्मन
श्रीशान्तिनाथ श्रीकुन्थुनाथ, श्रीअरनाथ, श्रं
ल्लिनाथ, श्रीमुनिसुव्रतनाथ, श्रीनमिनाथ, श्रीअ
नेमिनाथ, श्रीपार्श्वनाथ, तथा श्रीवर्द्धमाननाथ।

अमुकसंवत्सर अमुकमास अमुकपक्ष अमुका
तथा अमुकवार सम्बन्धिनी मेरी यात्रा सफल

उक्त वाक्य को भक्तिपूर्वक बोलना चाहिये ।

इस के पीछे गुरुमुख से पच्चक्खाण कर के "इच्छामो अ
सहिं" इस वाक्य को बोलना चाहिये ।

इस के पीछे "नवकारसी" से लेकर जो कोई पच्चक्खाण
ना हो उसे करना चाहिये, पच्चक्खाण की विधि यह है कि—

**नवकारसहियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाए चउव्विह
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगे
सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारे
वोसिरामि ॥ १ ॥**

पीछे "नमो ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य." इस पाठ को बोलकर नीचे लिखे हुए "परसमयतिमिरतरणिं
अथवा "संसारदावा" इत्यादि दोनों पाठों में से किसी एक पाठ
प्रारम्भ की तीन गाथाओं को बोलना चाहिये—

**परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणि
णिम् । रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १
निरुद्धसंसारविहारकारि-दुरन्तभावारिगणाः विकाम
निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भयावहं मोहभरं
॥ २ ॥ सन्देहकारिकुनयागमरूढगूढ-सम्मोहपङ्कहर
मलवारिपूरम्, संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरा
परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥**

इस के बाद नमोत्थुणं कहना ।

दिन नमन कल्लाण ॥ २ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविंत्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

जावंति चेइयाइं उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए य।
सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वंदामि ।

जावन्त केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वे-सिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

॥ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे धन्य भाग्य हमारां ॥ विमलाचल गिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा मोटो. कहेतां न आवे पारा । रायण रूंख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा । अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारा रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुणी गुण तहारा । पतित उद्धारण बिरुद तुमारो, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसे प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा । जात्रा करि भविजन शुभभावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढार ब्यासी मास आषाढे, वदि आठम सोमवारा । प्रभुके चरण प्रतापसे संघमें, क्षमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भय-वं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥

लोगविरुद्धचाओ,गुरुजणपूआपरत्थकरणं च। सुहगुरु-
जोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्ति-
आए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्ति-
आए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए ॥१॥
सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए
ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छा-
ए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सु-
हुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो-
णेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करके 'नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय
सर्वसाधुभ्यः', [illegible] नीचे मुजब [illegible]

शत्रुंजयगिरि नमिये, ऋषभदेव पुंडरीक । शुभ
फलो महिमा, सुणि गुरु मुख निरधार ॥ शुद्ध मन उ
पवासें, विविधं चैत्य संचार । करिये जिन आगल,
टाली वचन असार ॥१॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः।

पहिले प्रथम धर्मशाला में आकर वहां उसका प्रमार्जन कर वस्त्र आदि को पडिलेहण करनी चाहिए। यदि देर हो गई हो तो केवल दृष्टि प्रतिलेखना करलेनी चाहिए, इस के पीछे यदि गुरुजी विद्यमान हों तो उन के सामने (यदि वे न हों तो स्थापनाचार्य के सामने) आ कर भूमि का प्रमार्जन कर आसन को बायें पास में रखकर खमासमण देना चाहिए। यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक लेनी पड़े तो तीन बार नवकार मन्त्रको कहकर स्थापनाचार्यके प्रतिलेखन के तेरह बोलों का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्य की स्थापना करलेनी चाहिए, इस के पीछे खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये–

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं? इच्छं।

इस के पीछे फिर खमासमण दे कर मुहपत्ती का पडिलेहन करे, फिर एक खमासमण को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं? इच्छं। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? इच्छं।

इस के पीछे फिर एक खमासमण दे कर अर्द्धावनत हो कर तीन बार नवकार मन्त्र का गुणना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोले——

इच्छिउ जं न होइ मा तुह ओलग्गु, इग्गसं मह निय
कित्तिणोय जुत्तइ अथहीरगु ॥२९॥ एह महारिय जत्त
देव इहु न्हवणमहूसउ, जं आणन्दियगुणगहण तुह
मुणिजणअणिसिद्धउ । इम मह पसिहसुपासनाह
थंभणयपुरद्विअ, इय मुणिवरु सिरिअभयदेव विन्ना-
वइ अणिंदिअ ॥३०॥

इसके पीछे "जगमहायम" को बोलना चाहिये—

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय
चिंतियसुहफलय, जय समत्थपरमत्थ जाणय जय जय
गुरुगरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय
पास जिया, भवियह भीमभवत्थु भयअवं णंताणंत
गुण तुज्झ तिसंझ नमोत्थु ॥१॥

इसके पीछे नमोत्थुण को बोलना चाहिये—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं
तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
सीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं॥ ३॥
लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं,
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं,
मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचा-

हरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो- जिणाणं जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे अ भविस्संतिऽणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इसके पीछे "सव्वलोए" को बोलना चाहिये—

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥१॥

इस के पीछे "वंदणवत्तिआए" बोलना चाहिये—

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अन्नत्थ" को बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं

भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो-णेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, एक मनुष्य काउस्सग्ग को पार कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्यः" इस वाक्य को कह कर नीचे लिखी स्तुति को बोले—

श्री शान्तिनाथजी, माना कारक देव । मनमोहन स्वामी, अनुपम मूरति सेव ॥ मुझ रोम हुलसिया, ब-न्दूँ प्रणमूँ नाथ । शुद्ध समकित धरूँ, जोड़ प्रभु के हाथ ॥ १ ॥

उक्त स्तुति को सुन के पीछे अन्य लोग काउस्सग्ग को पारें। इस के पीछे "लोगस्स" को बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरि-हंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सु-पासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदियमहिया, जे ए लोगस्स

उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के [illegible] "[illegible] अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं" [illegible] कहना चाहिये

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अन्नत्थ" को कहना चाहिये

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छा[illegible] ए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्[illegible] अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंत[illegible] भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो[illegible] झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ २ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करके [illegible]
बाद एक मनुष्य पहिले काउस्सग्ग को पार कर नीचे लि[illegible]

दूसरी स्तुति को बोले और शेष मनुष्य जो सुन,क...
काउस्सग्ग को पारें–

भावमादिक जिनवर अनन्तगुणी महाराज। सं...
रसमुद्रे मरगा तारण जहाज ॥ सुगमन...
इहपरलोक दिणन्द। कर जोड़ी प्रणमुं अहोनि...
सकल जिणंद ॥ २ ॥

इस के पीछे "पुक्खरवरदीवड्ढे" को बोलना चाहिये–

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १॥ तम...
मिरपडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीम...
धरस्स वंदे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २॥ जाईजरा...
रणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहाव...
स्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार...
बलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जि...
णमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगण...
ब्भूअ-भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं ते...
लुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्त...
वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं

इस के पीछे नीचे लिखे हुए " वंदणवत्तिआए " बोल...
चाहिए—

णवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स, संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं नि-सीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउ-व्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

इस के पीछे "वेयावच्चगराणं" को बोलना चाहिये--

वेआवचगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अन्नत्थ ऊससिएणं" को बोलना चाहिये,

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचा-लेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अ-रिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव का-यं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे एक आदमी काउस्सग्ग को पारकर " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः " इस वा

यो कह कर [illegible] लिए हुए चौथी स्तुति कहे और फिर मनुष्य स्तुति [illegible] को कह—

श्री जिन शासनदेवी सकल मनोरथ पूर, कर मंगल माला सब सङ्कट को चूर । सुगुरु पूरण स्वामी खरतरगच्छ सुखदान, इन सब को वन्दे क्षेमसागर शुभध्यान ॥ ४ ॥

इसके बाद बैठ कर "नमोत्थुणं" कहना चाहिये—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइ-

या सिद्धा,जे अ भविस्संतिऽणागए काले। संपइ अ
माणा , सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इस के पीछे एक एक खमासमण देकर" श्रीआचार्यजी
"श्रीउपाध्यायजी मिश्र" "वर्त्तमान गुरुमहाराज को वंदू" और "सर्व
धुजी को वन्दू" कहकर उन्हें वन्दन करना चाहिये , इस के
गोडाली आसन से बैठ कर मस्तक को नमाकर नीचे लिखे
"सव्वस्सवि देवसिय " बोलना चाहिए—

सव्वस्सवि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठि
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो कर नीचे लिखे हुए " करेमि भंते
को बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं व
याए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्क
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १

इस के पीछे " इच्छामि ठामि " को बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अ
आरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो
म्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंति
अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे
दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्ती

पउणए कामयाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे "तस्स उत्तरी को" बोलना चाहिये

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोही-करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

इस के पीछे "अन्नत्थ ऊससिएणं" को बोलना चाहिए—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छी-एणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पि-त्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसं-चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगा-रेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे आठ नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये । पीछे "नमो अरिहंताणं" कह कर काउस्सग्ग को पार कर प्रकट रीति से "लोगस्स" को बोलना चाहिये

लोगस्स उज्जोअगरे,धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहं-ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं

च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पीछे संडासा का प्रमार्जन कर बैठ कर नीचे आवश्यक की मुहपत्ती का पडिलेहन करना चाहिये, इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए पाठ से 'गुरु वन्दना' करना चाहिये

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि। अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवस्सियाए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए ति-त्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए

कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

यह पाठ दो बार बोलना। इस में दूसरी बार 'आवस्सिआए' पद नहीं बोलना चाहिये।

इस के पीछे अवग्रह में ही खड़े रह कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअं आलोउं? इच्छं। आलोएमि ॥ १ ॥

इस के पीछे "जो मे देवसिओ" को बोलना चाहिये—

जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए "आजुगा धार मइ" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अनुक्रमे चार प्रहर दिन में मैंने जो विराध्या होय सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दोय लाख बेइन्द्रिय, दोय लाख तेइन्द्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यञ्चपञ्चेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति के चौरासी लाख जीवायोनि में मेरे जीव ने जे कोई जीव हण्यो होय हणाव्यो होय हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय ते सब्वे हूँ मने वचने काया यें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥

इस के पीछे नीचे लिखे पाठ का बालना चाहिये -

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्वशल्य, ये अठारे पापस्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय ते सब्वे हूँ मन वचन काया यें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये-

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नवकारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनरे

इस के पीछे "इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ" को बोलना चाहिये—

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए "वंदित्तुसूत्र" पाठको बोलना चाहिये—

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देवसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस

आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९
कयपावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे
होइ अइरेगलहुओ , ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥४०
आवस्सएण एएण सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाणमंतकिरिअं , काही अचिरेण कालेण ॥ ४१
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमण
। मूलगुण उत्तरगुणे , तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२

इस के पश्चात् खड़े हो कर " वंदित्तु " सूत्र का
लिखा हुआ अवशिष्ट पाठ बोलना चाहिए —

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स। अब्भुट्ठिओमि आरा
णाए,विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो,वंद
जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं , उड्ढे
अहे अ तिरियलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह सं
तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत के वि साहू, भरहेर
महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ , तिवि
तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीए
भव-सय-सहस्समहणीए । चउवीसजिणविणिग्गय
हाइं वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलम
ला , सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मदिट्ठी दे
दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं कर
किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, वि

रीयपरूयणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगं-छिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउ-व्वीसं ॥ ५० ॥

यहां दो बार "सुगुरुवांदणा" देना चाहिये और दूसरी बार वांदणा में 'आवस्सियाए' पद नहीं कहना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए नि-सीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि । अहो-कायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलं-ताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं आव-स्सियाए, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आ-सायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्क-डाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वध-म्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

अब वांदणा में दो गुरु के बाद नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि; अब्भिंतर देवसिअं खामेउं? इच्छं खामेमि देवसिअं॥१॥

उक्त पाठ को बोल कर गोडालो आसन से बैठ कर बाँये हाथ से मुहपत्ती को मुख पर रख कर तथा दाहिने हाथ को गुरु के सम्मुख रख कर " अब्भुट्ठिओ " बोलना चाहिये—

जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे दो बार 'सुगुरुवांदणा' देनी चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो। जत्ता भे जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो। देवसिअं वइक्कमं। आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो।

पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसि-
रामि ॥ १ ॥

इस के पीछे "खामिय उवज्झाए" को बोलना चाहिये

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ।
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥
सव्वस्स समणसंघस्स भगवओ अंजलिं करिअ सीसे।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥
सव्वस्स जीवरासिस्स भावओ धम्मनिहिअनिअचि-
त्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥

इस के पीछे "करेमि भंते" को बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वा-
याए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्क-
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे "इच्छामि ठामि" बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइ-
आरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उ-
म्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ
अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह
दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं
चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं

चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बोल कर " चारित्रशुद्धिनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं " कहे इसके पीछे "तस्स उत्तरी" बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ " बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे दो " लोगस्स " का अथवा आठ नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये । इस के पीछे दर्शनशुद्धि के निमित्त प्रकटरीति से " लोगस्स " बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सु-

पासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पया-सयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गव-त्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु-च्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं

भगवंमाणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणे-
णं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

यहां एक "लोगस्स" का ध्यान तथा नवकार का का-
उस्सग्ग करना चाहिये, फिर ज्ञानवृद्धि के निमित्त "पुक्खरवरदीवड्ढे"
बोलना चाहिये—

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबूदीवे अ ।
भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमति-
मिरपडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमा-
धरस्स वंदे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजराम-
रणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावह-
स्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमु-
वलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिण-
मए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्स-
ब्भूअ-भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलु-
क्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं
वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥

इस के पीछे "वंदणवत्तिआए" बोलना चाहिये—

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए
सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गव-
त्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए
वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ " बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक " लोगस्स " का अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये। काउस्सग्ग पारकर "सिद्धाणं बुद्धाणं" को बोलना चाहिए--

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स, संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंत-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छी
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्त
च्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचाले
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभ
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंत
भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणे
झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहि
यदि गुरुजी न हों तो एक श्रावक यह काउस्सग्ग को पार कर "
मोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः " इस वाक्य को कह
नीचे लिखी हुई स्तुति को बोले-

सुवर्णशालिनी देयात्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भव
श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेषश्रुतसम्पदम् ॥१॥

इस स्तुति को सुनने के बाद सब लोग काउस्सग्ग पारें,
के पीछे " खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं " इस वाक्य को
कर पूर्व लिखे हुए " अन्नत्थ " को बोलना चाहिये, तदन
पूर्व के समान एक नवकार का काउस्सग्ग पार कर नीचे लिखी
स्तुति को बोलना चाहिये-

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः ।

जिनाज्ञां साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु देवदेवताः ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो रह कर एक नवकार को कहना चाहिये . तथा संडासा का प्रमार्जन करते हुए बैठ कर छट्ठे आवश्यक की मुहपत्ती का पडिलेहन करना चाहिये , मुहपत्ती को छोड़कर बगाही रख कर दो बार वांदना नीचे मुताबिक देना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि। अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

(यदि पच्चक्खाण पहिले न किया हो तो यहां पर उसे ले लेना चाहिये) इस के पश्चात् " इच्छामो अणुसट्ठिं " इस को बोल कर नीचे बैठ जाना चाहिये, यहां पर गुरुजी विद्यमान हो तो नीचे लिखी हुई " नमोऽस्तु [illegible] " एक गाथा को बोलें— नहीं हो तो [illegible]

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १

येषां विकचारविन्दराज्या ज्यायःक्रमकमला
दधत्या । सदृशैरिति सङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु
वाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृ
करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भ
ष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥

तथा श्राविकाओं को "संसारदावा" की तीन गाथा
बोलना चाहिये—

संसारदावानलदाहनीरं, सम्मोहधूलीहरणे स
रम् । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरि
रधीरम्॥१॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलावि
लकमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमी
तानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥२॥
धागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा
रललहरीसङ्गमागाहदेहम् । चूलावेलं गुरुगममणी
कुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु
॥ ३ ॥

इस के पीछे "नमोत्थुणं" बोलना चाहिये एक श्र
नीचे लिखे हुए को बोले—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा , सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वृद्ध स्तवन भणुं ? ।

इस के पीछे आसन पर बैठ कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः "-इस को बोल कर कमसे कम ११ गाथावाले स्तवन को पढना चाहिये किन्तु यदि ग्यारह गाथा वाले स्तवन से

छोटा कोई स्तवन बोला जावे तो उस स्तवन को बोलने के पी
" वनकनक " बोलना चाहिये—

ॐ वरकणयसंखविद्रुम-मरगयघणसन्निहं विगय
मोहं । सत्तरि सयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे स्वाह
॥ १ ॥

अब स्तवन लिखा जाता है जिसे बोलना चाहिये—

श्री चिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ।

भविका श्री जिन बिंब जुहारो, आतमपरम आध
रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिस सारखी जाणो,
करो शंका कांई । आगमवाणी ने अनुसारें, रा
प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिनबिम्ब स्वरू
न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह भ्रमा
भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २
अम्बड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक
विविध परें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक
॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोतां,
निश्चय उपगार । परमारथ गुण प्रकटे पूरण, जो
आर्द्रकुमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आ
जलचर, छे बहु जलधि मझार । ते देखी बहुला
स्यादिक, पाम्या विरति प्रकार रे ॥ भ० श्री ॥ ५ ॥ पां

अंगे जिनप्रतिमा मां, प्रकट पणे अधिकार । सुरयाभ-सुरें जिनवर पूज्या, रायपसेणी मजार रे ॥भ०॥श्री० ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा दाखी, जिन पूजा जिन-राज । एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये केम अ-काज रे ॥भ० श्री०॥७॥ समकित धारी सती द्रौपदी, जिन पूजा मन रंगे । जो जो एहनो अरथ विचारी, छट्ठे ज्ञाता अंगे रे ॥ भ० श्री०॥८॥ विजय सुरें जिम जिनवर पूज्या, कीधो चित्त थिर राखी । द्रव्य भाव बिहुँ भेदें कीनी, जीवाभिगम छे साखी रे ॥भ० श्री० ॥९॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोई शङ्का मत कर जो । जिन प्रतिमा देखी जिन सरखी, प्रेम धणो चित्त धरजो रे ॥भ० श्री०॥१०॥ चिन्तामणि प्रभु पास पसा-यें, सरधा हो जो सवाई । श्री जिनलाभ सुगुरु उप-देशे, श्री जिनचन्द्र सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पीछे एक एक खमासमण से आचार्य उपाध्याय और सर्व साधुओं को वन्दन कर फिर खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसियपायच्छि-त्तविसुद्धिनिमित्तं काउस्सग्गं करूँ ? इच्छं, देवसियपाय-च्छित्त विसुद्धिनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ " बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छी· एणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पि· त्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसं· चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगा· रेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव का· ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे चार " लोगस्स " का या सोलह नवकार काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोग· बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे,धम्मतित्थयरे जिणे । अरि· ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजि· च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपा· जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदं· सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिण· धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वं· मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं त· वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमल· पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे·

पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! खुद्दोपद्दव उड्डावणार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ " बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे चार " लोगस्स " का अथवा सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये । इस के बाद लोगस्स बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,

सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जर-मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पीछे एक खमासमण दे कर बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवन्दन करूं !

श्री थंभणापार्श्वनाथजी का चैत्यवन्दन ।

श्री सेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ,
श्री पूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ।
संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणापल्लवः,
पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनो वाञ्छितम् ॥१॥
आधिव्याधिहरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः ।
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नितनाथो नृणां श्रिये ॥२॥

इस के पश्चात् पूर्व लिखे हुए [illegible]

बोलना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए " आवंति चेइयाइं " इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तदनन्तर पूर्व लिखे हुए " जावंत केवि साहू " इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तदनन्तर " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः " इस वाक्य को बोल कर पीछे लिखे हुए " उवसग्गहरंपासं " को बोलना चाहिये, इस के पीछे पूर्व लिखे हुए " जय वीयराय " इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, इस के पश्चात् खमासमण को देकर तथा इच्छाकार को कह कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

सिरिथंभणयट्ठियपाससामिणो सेसतित्थसामीणं ।
तित्थसमुन्नइ कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥
एसि अहं सरणत्थं काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ।
भत्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइ निमित्तं ॥२॥

श्रीथंभणपार्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे, चार " लोगस्स " का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोगस्स बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

श्रीचौरासीगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी चारित्रचूडामणि जी आराधनानिमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे "अन्नत्थ" बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक "लोगस्स" का अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये । काउस्सग्ग पारके पीछे प्रकट "लोगस्स" को बोलना चाहिए

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे

मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं त
वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयम
पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे
पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं
दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पया
सयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिंतु
॥ ७ ॥

श्रीवीरसींगच्छशृङ्गारहार अष्टमयुगप्रधान भट्टा
रक दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी चारित्रचूडामणिजी
आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस का कायस्सग्ग की विधि ऊपर मुजब जानना ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! चैत्यवन्दन करूं ?

चउकसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुम
रणु । सरसपियंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवण
त्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ
सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ । नं नवजलहर तडि
ल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः

पर्यंते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥१॥

इस के पीछे पूर्व लिखे हुए "नमोऽर्हत्" इत्यादि पाठ को
[illegible] कर "जय वीयराय" इत्यादि पाठ तक सम्पूर्ण पाठ बोलना चा
हिये । इस के पीछे यदि दीपक का अथवा बिजली का प्रकाश
[illegible] हो तो "इरियावहिया" करना चाहिये ।
[illegible] का पाठ, [illegible] का पाठ, [illegible] का पाठ बोल
[illegible] "[illegible]" का अथवा [illegible] [illegible]
[illegible] चाहिये, [illegible] "[illegible]" [illegible]
[illegible] चाहिये, फिर सामायिक को पारना चाहिये, यह प्रमाण से
सामायिक पारने की विधि [illegible] चाहिये । तथा [illegible]
[illegible] लिखा हुआ [illegible] को बोलना चाहिये

॥ श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज का स्तवन ॥

दर्शन पाया पाया दर्शन पाया है, कुशलसूरीश्वर
[illegible] तुम्हारे ॥ द० ॥ टेक ॥

[illegible] जिल्हागर पिता तुम्हारे जैतश्री है माता
[illegible] । [illegible] गोत्र में [illegible] [illegible] जाया है ॥ द०
॥१॥ [illegible] [illegible] गुरु से [illegible] [illegible] [illegible]
दिपाया है । [illegible] [illegible] गुरु को [illegible] [illegible]
[illegible] है ॥ द० ॥ २ ॥ स्थान स्थान में परचा तुम्हारा
[illegible] मन भाया है । [illegible] [illegible] गुरु चरण तुम्हारे

हर्ष न माया रे ॥ द० ॥ ३ ॥ चरण शरण गुरुराज तुम्हारे भविजन को सुख दाया रे । ऐसे चरणों में शीस नमा के आनन्द पाया रे ॥ द० ॥ ४ ॥ चरण की सेवा कर्म खपेया गुरुवर ध्याया रे । ध्यावो रु मंगल गावो पाओ वांछित माया रे ॥ द० ॥ ५ ॥ कर जोड़ी ने अर्ज मैं करता सङ्घ सकल सुख दाया रे । जिन शासन उजवालो स्वामी जय जयकार वर्त्ताया रे ॥ द० ॥ ६ ॥ माणिक्यकारी विघ्ननिवारी पूर्ण गुरु को पाया रे । सुरसागर ने शील शील के क्षेमाणंद गुण गाया रे ॥द०॥७॥

॥ इति देवसियपडिक्कमणविधि संपूर्ण ॥

दशवाँ पाठ ।

पच्चक्खाण-वर्णन ।

दिन के प्रत्याख्यान ।

जो मनुष्य चौदह नियमों को धारता हो उस को उन्हीं नियमों के अनुसार प्रत्याख्यानों को करना चाहिए, अथवा यदि वह दैवसी आदि का प्रत्याख्यान करना चाहे तो उस "नवकारसहिअं" के स्थान में "देसावगासिअं" आदि शब्दों को बोलना चाहिये।

नवकारसी का पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं—असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा-

भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं विगई ओपच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सह-सागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ अण्णत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

जो चौदह नियमों का धारण न करता हो उसे नवकारसी आदि का प्रत्याख्यान करना चाहिये, जो कि निम्नलिखित है—

देसावगासिकका पच्चक्खाण ।

देसावगासियं भोगं परिभोगं वा पच्चक्खाइ एक करण एक योग तीसरे भांगे अन्नत्थणाभोगेणं सह-सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वो-सिरामि ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

पोरसीसाढपोरसी का पच्चक्खाण ।

पोरिसियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं

हर्ष न माया रे ॥द०॥३॥ चरण शरण गुरुराज तुम्हारे भविजन को सुख दाया रे। ऐसे चरणों में शीस नमा के आनन्द पाया रे ॥द०॥४॥ चरण की सेवा कर्म खपेया गुरुवर ध्याया रे। ध्यावो ■ मंगल गावो पाओ वांछित माया रे ॥ द० ॥५॥ कर जोड़ी ने अर्ज मैं करता सद्गुरु सफल सुख दाया रे। जिन शासन उजवालो स्वामी जय जयकार वर्त्ताया रे ॥ द० ॥६॥ मासिक्यकारी विघ्ननिवारी पूर्ण गुरु को पाया रे। सुख सागर ने शील शील के क्षेमार्णव गुण गाया रे ॥द०॥७॥

॥ इति देवसियपडिक्कमणविधि संपूर्ण ॥

दशवाँ पाठ।

पच्चक्खाण-वर्णन।

दिन के पच्चक्खाण।

जो मनुष्य [illegible] की [illegible] हो [illegible] अनुसार पच्चक्खाण [illegible] चाहिए [illegible] "नमुक्कारसहिअं" के स्थान में "[illegible]" आदि [illegible] बोलना चाहिये।

नवकारसी का पच्चक्खाण।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं—असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा-

भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सह-सागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खियएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, देसावगासिअं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ अण्णत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति-यागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

जो चौदह नियमों का धारण न करता हो उसे नवकारसी आदि का प्रत्याख्यान करना चाहिये, जो कि निम्नलिखित है—

देसावगासिकका पच्चक्खाण ।

देसावगासिअं भोगं परिभोगं वा पच्चक्खाइ एक करण एक योग तीसरे भांगे अण्णत्थणाभोगेणं सह-सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वो-सिरामि ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरामि ॥ १ ॥

पोरसीसाढपोरसी का पच्चक्खाण ।

पोरिसिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं

·सहसागारेणं पच्छणणकालेणं दिसामोहेणं साहु
·वेयणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगई‌ओ पच्चक्ख
·अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ
सिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरा
रेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साढ पोरसी के प्रत्याख्यान को जानना चाहिये

पुरिमड्ढ अवड्ढ का पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाइ चउवि
हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा
भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं सा
हुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वि
गई‌ओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवा
लेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खि
एणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरा
॥ ३ ॥

एकासण बिआसणा का पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सू
चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न
त्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामो
हेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकास

पिआसणं या पच्चक्खाइ दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवे गं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं एगट्ठाणं पच्चक्खाइ दुविहं तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥५॥

सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं साहुव योणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पच्चखा अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थ सिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुचमक्खिएणं, महत्तरा रेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साढ पोरसी के प्रत्याख्यान को जानना चाहिये

पुरिमड्ढ अवड्ढ का पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाइ चउवि हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थण भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं सा वयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वि गईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेव लेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुचमक्खि एणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरा ॥ ३ ॥

एकासण बिआसणा का पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्डपोरिसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए च चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न त्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसा हेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पच्च

चिआसणं वा पच्चक्खाइ दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं एगट्ठाणं पच्चक्खाइ दुविहं तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥५॥

आंबिल का पच्चक्खाण ॥

. पोरसिं साढपोरसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छणणकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरइ ॥६॥

नीवी का पच्चक्खाण ॥

पोरसिं साढपोरसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छणणकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं निव्विगइयं पच्चक्खामि अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्च मक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं

एगासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहार-असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पच्छन्नकालेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि।

चउविहाहार उपवास का पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

तिविहाहार उपवास का पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पाणहारपोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ ९ ॥

इति पच्चक्खाण

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं अवड्ढं वा पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं

दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं एगट्ठाणं दत्तिंयं पचक्खामि तिविहंं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारि आगारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं महत्तरागारेणं विगईओ पचक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुचमक्खिएणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥१०॥

रात्री के पचक्खाण ।

चउव्विहाहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पचक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ।१।

दुविहाहार का पचक्खाण ।

दिवसचरिमं पचक्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

पाणहार का पचक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पचक्खामि अन्नत्थणाभोगे-

णं सागारियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥ ३ ॥

॥ ग्यारहवाँ पाठ ॥

। स्तवनसंग्रहः ।

। अथ श्री सद्गुरुगुणाष्टक ।

भजामि पूज्यं च नमामि नित्यं,
वक्ष्यामि भक्त्या प्रणतान्तरात्मा ।
यथाभिधानं किल सद्गुणीयं,
गाथ स्वरूपं शुभभावभाव्यम् ॥ १ ॥
पिता कुलीनश्च मनःसुखाख्यः,
सुशीलधर्मा जननी हि जेती ।
श्वाटीदवंश्यः सुरलालसञ्ज्ञो,
ग्रामः प्रसिद्धः सरसेति नाम्ना ॥ २ ॥
व्याख्यानधारी जिनधर्मरागी,
सम्यक्त्वधारी विरतिप्रभावी ।
संत्यज्य संसारमसारमृद्धीं,
रत्नाकराख्यस्य गुरोश्च पार्श्वात् ॥ ३ ॥
चारित्रमादाय सदा विहारी,
विनाऽतिचारं यतिधर्मधारी ।
श्रीमान् जिनाज्ञा शुभभूतपोतं,
संसारपाराय परं दधार ॥ ४ ॥

सुबुद्धिसङ्गी कुमतिप्रणाशी,
खलप्रबोधी शुभमार्गदर्शी ।
सार्थानि सूत्राणि पपाठ धीरः,
गजेन्द्रतुल्यो वचनेषु वीरः ॥ ५ ॥
रराज नित्यं करुणैकपात्रं,
जीवोपकारी सुखसागराख्यः ।
सत्यार्थवक्ता सुजनाभिनन्द्यः,
साधुप्रभायोज्झितमोहमायः ॥ ६ ॥
हन्तारिपून् बाह्यपरिग्रहादीन्,
त्यागी विरागी भविशर्मकारी ।
जगत्प्रसिद्धो बहुमानधाम,
एभिर्गुणैः सत्पथमाजगाम ॥ ७ ॥
त्रैलोक्यवन्द्यो हरिनाममुपेत्य,
आनन्ददात्री शुभभावभक्तिम् ।
कुर्वन्ति लोका नवतत्त्वसिद्धिं,
ते बहुधा ये हृतमाशुवन्ति ॥ ८ ॥

शिखरिणी वृत्तम्—

सुधर्मा वन्द्यात्मा मतिशुभगुणागारतरणि,
नतार्तीश ! स्वामिन् ! सुगणवृषवृद्धे सपदि ते ।
कथं मोदप्रदा ये तव शुभगुणा मङ्गलकराः,

गुरोः पूर्णाब्धेर्वै चरणयुगले क्षेमनमनम् ॥६॥

श्री कुशलसूर्याष्टकम् ।

शिखरिणी—सुखं सर्वा सम्पद्धसति पदयोर्यस्य भवने,
विनिद्रा वाणीशो हृदयकमले संविदधिकम् ।
विरागः सर्वाङ्गेष्वपि च भगवद्भक्तिरनिशं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥१॥
निशि स्वापार्थीनं ह्यनुदिनमधीनौ क्रमयिनौ,
परं वाणीलक्ष्म्यो-र्निलयमपि सदाननिपुणौ ।
सदा यौ वर्तेते जगत इव पाथोजयुगलं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥२॥
क्षिपन्तौ यौ मेघं सरसिजदलयोर्यौ मृदुलयोः,
जपापुष्पाभासौ किसलयजिनाङ्गोपमहसौ ।
लसद्भृङ्गालङ्कममकटितपरा श्रीमदनयोः,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥३॥
सुरेभ्यः स्वःश्रेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमयौ,
कदापिद्दत्ते द्राक् श्रियमपि दरिद्राय परमाम् ।
सुरस्तुं स्वयस्वा यौ बुधजनसुसेव्यौ शुचिगमौ,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥४॥
सुरर्षिस्याथान्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,

---

१ "चरणमजयोः क्षेमनमनम्" इति पाठान्तरम् ।

सदा कामं पीताम्बुनरसगरांशैरपि गिरः।
श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधि
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
निधी सर्वश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदां,
सुदृनिलयौ त्राणाबुपचितनखौ गूढघुटिकौ
समानौ मोक्षाम्बुरदपदशाखाविलसितौ,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ।
ययोरर्चा सूते घनसुखधरा धामरमणी,
शरीरारोग्यत्वं विनयनयविद्यानिपुणताम्
गुणानौदार्यादीनपि तनयलक्ष्मीं तनुभृतां,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
भयंकारागारामयसमरवारीन्द्रफणभृन्-
महापारावारविरदवनवैश्वानरभयम् ।
न शाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं यत्स्मरणतः,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥

। शार्दूलविक्रीडितम् ।

इत्थं श्रीजिनदत्तसूरिरचितं दिव्याष्टकं सद्गुरोः
पुण्यं मन्त्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंसनं
भक्त्या यः पठति प्रभातसमये स्वैरं नरः ...
स्वस्य भूरमणी ...

श्रीगौतमदेवस्तवनम् ।

श्रीइन्द्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नम् । स्तुवन्ति देवाः सुरमानवेन्द्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन । अङ्गानि पूर्वाणि चतुर्दशापि, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ २ ॥ श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मन्त्रं महाऽऽनन्दसुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥३॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानाम्बरपूर्णकामाः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥४॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवन्दनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥५॥ त्रिपञ्चसंख्याशततापसानां, तपःकृशानामपुनर्भवाय । अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ६ ॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं, साधर्मिकं सङ्घसपर्ययेति । कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ७ ॥ शिवंगते भर्तरि वीरनाथे, युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा । पट्टाभिषेको विदधे सुरेन्द्रैः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥८॥ त्रैलोपपदोऽजं सुभक्ता -

नयीजं, परमागमर्थीजं परमेष्ठिपीजम्। गयामम
छुरेन्द्रैः, स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥९॥
तमस्याष्टकमादरेण, प्रबोधकाले मुनिपुङ्गवा यं
ते सूरिपदं सदैवाऽऽनन्दं लभन्ते सुतरां क्रमे

श्रीगुरुगुणस्तवन ।

श्रीजिनदत्त के चरणों में आया चरणोंमें आय
स नमाया॥टेक॥ बाछग मंत्री पिता कहाया
वपरे जाया॥ श्री ॥१॥ हुम्मड़ वंश में आप
कल जीव हरपाया ॥ श्री० ॥२॥ गच्छ चौरा
हार हारा युगप्रधान पद छाया ॥ श्री० ॥३॥
में परचा पाया सकल संघ सुखदाया ॥ श्री० ॥
शरण ग्रही आज उमाया तारो मुझ को अ
॥ श्री० ॥५॥ हर्ष धरी दिल काय फुलाया
घजे में लाया ॥ श्री० ॥६॥ ध्यायो ध्यायो
हर्षाया पायो वाञ्छित माया ॥ श्री० ॥७॥
दर्शन पाया आनन्द हर्ष बधाया ॥ श्री० ॥८॥
धीसे वर्ष पायाला चैत्र चौथ सुदि आया ॥श्र
कृशाभिलाषी सद्गुण दाया सुखसागर मन
श्री०॥१०॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया क्षेमस
गाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

। जन्म महोत्सवस्तवनम् ।

आनन्द छाया अङ्ग न माया हर्ष दपाया रे (टेक)
वीर प्रभु का जन्म हुआ जब इन्द्र से आदेश पाया रे।
हरिणगमेषी देव ने जाकर घननन घंटा बजाया रे
॥ आ० ॥ १ ॥ सब देवों ने जान लिया सही मेरु शिखर पर आया रे। पंच रूप धरि वीर प्रभु को इन्द्र विनय से लाया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जल से आपूरित कलश को देखे मनमें संदेह दिल में आया रे। वीर प्रभु पर जावेंगे लघु है हम को पाया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अवधिज्ञान से जान लिया प्रभु अनन्त बली महा राया रे। वामाङ्गुष्ठे मेरु दबाया धर हर कर कंपाया रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अवधि लगा कर देख लिया बल प्रभुजी को नह पाया रे। अपराध क्षमावे काय झुकावे नमि नमि लागे पाया रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ नाचा गाया मङ्गल गाया प्रभु निरखी हरषाया रे। विधिपूं अभिषेक कर के इन्द्र जननी पासे लाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रैलोक्यनाथ हरि सुखकारी पूरण प्रेम बढ़ाया रे। सकल संघ मिलि जय जय बोलो क्षेमानन्द को पाया रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

। श्री पार्श्वप्रभुस्तवन ।



टीडयपास प्यारो है चेतन

धपार हे लौद्रव० (टेक) चौतीस अतिशय शोभता है प्रभु चे० पांत्रीस वाणी गुणखान हे ॥लौद्रव०॥१॥ कोस पांच जैसलमेरथी हे प्रभु चे० लौद्रवनगर महार हे ॥लौद्रव०॥२॥ देवविमान जिसो बन्यो हे प्रभु चे० मन्दिर अति सुखकार हे ॥ लौद्रव० ॥ ३ ॥ अनन्त गुणे करी दीपता हे प्रभु चे० सहस फणा श्रीपास हे ॥लौद्रव० ॥ ४॥ महिमा सुनि के आवियो हेप्रभु चे० संघ सकल बहु ठाठ हे ॥लौद्रव० ॥ ५ ॥ भव नाटक करता थका हे प्रभु चे० आयो श्रीदरबार हे ॥लौद्रव० ॥६॥ दीन की विनती धारजो हे प्रभु चे० भवसागर थी तार हे ॥लौद्रव० ॥७॥ संघ में मंगल कीजिये हे प्रभु चे० विधि वन्दन करूं नाथ हे ॥ लौद्रव० ॥ ८ ॥ वीर चौवीस चालीस माघ हे प्रभु चे० मार्गशर सुदि सुधार हे ॥लौद्रव॥ ९ ॥ पञ्चमी दिवसे भेटिया हो हे प्रभु चे० आनन्द अंग न मावा हे ॥लौद्रव०॥ १०॥ क्षेमसागर प्रभु प्रेमसुं हे प्रभु चे० मांगे अविचलराज हे ॥ लौद्रव० ॥ ११ ॥

श्री नेमिनाथस्वामि-स्तवन ।

नेमी जिणंद स्वामिन् चरणों में अब तो लेलो ॥टेक॥
कृपानिधे कर मेलो अर्जी दया कर लेलो ।

संसार पार मेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ १ ॥
रास्ता यही बना दो सुखी सदा बना दो ।
आयो विरुद सुन ली चरणों में अपनो लेलो ॥ २ ॥
गिरनार तीर्थ आया मन है सदा सुहाया ।
आनन्द हर्ष भरेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ३ ॥
मुख चन्द्र को मैं देखा निर्मल शान्त पेखा ।
नासाग्र ध्यान स्थिरेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ४ ॥
ऐसी हृदय में रेखा कर्मों की होगी लेखा ।
भव पार हूँगा चेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ५ ॥
मुक्ति से कर के मेला राजुल को मेली पेला ।
पशु पर दया करेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ६ ॥
अब तो मुझे भी तारो केवल के अंश डारो ।
कुछ ध्यान इधर भी देलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ७ ॥
अन्तः समय सुधारो यह विनती स्वीकारो ।
दुःखी सदा बनेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ८ ॥
अन्तिम प्रार्थना करता आशातना से डरता ।
दयालु दीन चेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ९ ॥
संवत् द्वयीमें चौतर माघ शुक्ला है सुखोत्तर ।
एकम को आया चेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ १० ॥
गुरुवर्य पूर्णसागर सच्छिष्य हेमसागर ।
शरणा शरण में लेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ११ ॥

स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शांतिजिनाय जयवते,यशस्विने स्वामिने दमिनाम्॥२॥ सकलातिशेषकमहासंपत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह,-स्वामिकसंपूजिताय निजिताय। भुव-नजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्ट-ग्रहभूतपिशाचशाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते जनहितमिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते। अपरा-जिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्व-स्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे । साधूनां च सदाशिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृतिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम् । अभय-प्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥९॥ भक्ता-नां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! । सम्यग्द-ष्टीनां धृति-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय॥ १० ॥ जिनशास-ननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् । श्री-संपत्कीर्तियशो-वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर- दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः ।
राक्षसरिपुगणमारी , चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांति च कुरु कुरु सदे-
ते। तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं-
न् ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति -तुष्टिपुष्टि-
स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् । ओमिति नमो नमो
ह्रौं ह्रीँ हूँ हः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥१४॥ एवं
यन्नामाक्षरपुरस्सरं संस्तुता जया देवी । कुरुते शांतिं
नमतां नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वसूरि-
दर्शित-मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः । सलिलादिभ-
यविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चै-
नं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् । स
हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
उपसर्गाः क्षयं यांति छिद्यंते विघ्नवल्लयः । मनः प्रस-
न्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमां-
गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं
जयति शासनम् ॥१९ ॥

॥ अथ श्रीगोडीपार्श्वजिन वृद्धस्तवन लि० ॥

॥ दोहा ॥

वाणी ब्रह्मावादिनी, जागे जगविख्यात ।
वासलणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥१॥

नारंगे अहमिनपुरे, अहिमदावादे पास ।
गौडीनो धणी जागतो, मछुनी पूरे आस ॥२॥
सुभ वेला सुभदिन घडी, महुरत एक मंडाण।
प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥

गुणाहि विशाला मंगलीक माला, वामानो सुत साचोजी । घण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणीं जाचोजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मांहि प्रतिमा, तुरक तणे घर हुंतीजी । अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी शालि विगूती जी ॥गु०॥५॥ जाग तो जक्ष जेहने कहियें, सुहणो तुरकने आपेजी । पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापे जी ॥गु०॥६॥ प्रह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजे जी। अधिको म लेजे ओछो म लेजे । टका पांचसे लेजे जी ॥ गु० ॥ ७ ॥ नहीं आपिस तो मारीस सुरडीस, मोरपंख पंशास्याजी । पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लछि धणी घर जास्येजी ॥गु० ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुझने मिलस्यें, सांडथवाह जे गोठीजी । तिलवट टीलो चोखा चोड्या, वस्तु वहे तसु पोठी जी ॥गु० ॥ ९॥

॥ दोहा ॥

मनसुं मोहनो तुरकडो, मांने अचन प्रमाण।

पीर्पानें सुहणा मणो, संभलावै सहि नाणं ॥१०॥
र्पायी पोले तुरकने, यहा देर हूं कोप।
म्रप सनाप परगटकरो, नहींतर मारे सोय ॥११॥
पाछली रात परांहीणे, पहली पंथे पाज।
सुहणा माहें सेठने, संभलावै जखराज ॥१२॥

॥ ढाल ॥

एम कही जख आयो रातें, सारथयाहुने सुहणें जी। पास मणी प्रतिमा मुंलेजे, लेनो सिरमन धूणे जी ॥ एम० ॥ १३ ॥ पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिम चाल्जी। जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारैजी ॥ एम० ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु फल-दायक, भाई गोठीने सुणजे जी। पूजीस प्रणमीस तेह-नापाया, प्रहउठीने थुणजे जी ॥ एम० ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुरचाल्यो, अपने थांनक पहुंनोजी। पाटण मांहें सारथवाहु, हींडे तुरकने जोतोजी ॥एम०॥१६॥ तुरके जानां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी। संकेत पहुनो माचो जाणि, बोलावे बहुंलाडे जी ॥एम०॥१७॥ तुझ घरि प्रतिमा तुमनें आपुं, पास जिणेसर केरीजी। पांचसै टका जो मुझ आपे, मोल न मागुं फेरीजी ॥ एम० ॥ १८ ॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुनो जी। केसरचंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगेजी।

॥ एम० ॥ १९ ॥ गादी रुडी स्नी कीधी, ते माहि प्रतिमा रावै जी। अनुक्रम आव्या परिकर माहैं, श्रीसंघने सुरसालै जी ॥ एम० ॥२०॥ ओच्छव दिन दिन अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम २ ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी ॥ एम० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

इकदिन देखी श्रावगिंजु, परिकरपुरनो भङ्ग।
जतन करूं प्रतिमा तणो, नीरथ थाके अभंग ॥२२॥
सुहणो आवै सेठनै, थल श्रटवी उज्जाड।
महिमा थासी अति घणी, प्रतिमा तिहां पुहचाड़॥२३॥
कुशल खेम तिहां अछे, तुमनै मुझनै जाणि।
संघ छांडी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥२४॥

॥ ढाल ॥

पास मनोरथ पूरा करै, पालण एक वृषभ जोतै। परिकरथी परिमाणो करै, एक थल चढ़ि धीसो सुतै ॥ २० ॥ थरि कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चालै तेतलै। कांठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावूं सही ॥ २१ ॥ आ आटवी किम करूं मगाण, कुरका कांई मळीसे पाहाण। देवल पास जिनेसर तणो, मंडावूं किम धर्णै किणो ॥२२॥ तव चिन श्रीसंघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवै इहां। पिणापुर

पयो निद्रा लहै , पक्षराज आवीने कहै ॥२८॥ गूंह
ऊपर नांगो जिहां, गरथ घणो जाणि जे तिहां । स
स्निक सोपरी सहीनांण, पाहाण तणो ढाकणे स्थाप
॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किण जूओ, कुसुन जल
नीमरमी कूओ । खाराकूया मलो इह सही-
नांण , भूमि पड्यो दै नीलो छाण ॥ ३० ॥ सि-
लावटो सीरोहि वसै, कोट पराभवियो किस
मिसै । तहां थकी तूं इहां आय जे, सत्यवचन मा-
हरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो ।
सेलावटने सुहणो दियो। रोगगमाडंने पूरूं आस । पास
तणो मंहे आवास ॥३२॥ सुपन मांहे मान्यो ते वेण,
हेमवरणा देखाड्यो नेण । गोठी मनह मनोरथ हुआ,
सिलावटने गया तेड्या ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवै
धरमो , जीमे खीरखांडघृत परमो । घडै घाट करै
कोरणी , लगन भलं पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २
कीधी पूतली , नाटक कौतुक करती रली । रंग रूपड-
रलियामणो रंगे , जोतां मानवनो मन वसे ॥३५॥
पाणो पूरो प्रासाद, स्वर्गसमो मंहे आवास । दिवस
चारी ईण्डो घड्यो, मनलिया देवल ऊपर चड्यो ॥३६॥
भ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण वैठा श्रीपास ।
दिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहै- थान

॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांभली , तवन मांहि स
सांकली। गोठी तणा गोतरीया अछे, यात्रा करीने प
पछै ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघनविडारण यक्ष जगि , तेहनो प्रकल सरूप।
प्रीत करै श्री संघने , देखाडै निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गोठी पास जिन , आपै अरथभंडार।
सानिध करे श्रीसंघने , आसा पूरणहार ॥४०॥
नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार।
मारग चूका मानवी, वाट दिखावणहार ॥४१॥

॥ ढाल ॥

चरण अढार तणो लहे भोग, विघन निवारै टा
रोग। पवित्र थई समरै जे जाप , टालै सगला पा
संताप ॥४२॥ निरधनने घरि धननो सूत , आपै अ
पुत्रीयाने पुत्र। कायरने सूरापण धरै , पार उतारै ल
च्छी वरै ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग, पग विहूणा
आपे पग। ठाम नहीं तेहने दे ठाम, मन वंछित पूरे अभि
राम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दे आधार, भवसागर उत्ता
पार। आरतीयानि आरत भंग । धरे ध्यान ते लहे
सुरंग ॥४५॥ समरथा सहाय दीये यक्ष राज, तेहना मोटा
गाजै दियाज। यदि ईणा ने यदि प्रकाश, गंगाने

दषन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भंजन रंजन अवतार । बंधन तूटे वेडी सखा, श्री पार्श्वनाम अक्षर समरणा ॥४७॥

॥ दोहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ।
इभिनृप दूरे टलै, दुर्द्धर सिंह सियाल ॥४८॥
चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उद्गार ।
विष धरनो विष उतरे, संग्रामे जयजयकार ॥४९॥
रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पुलाय ।
परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥

॥ ढाल ॥ (कडखानी चाल)

उंजिनु रे उंज उपसम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर जपंते । भूतने प्रेत झोटिंग व्यंतरसुरा, उपसमे वार इकवीस गुणंते ॥उं०॥५१॥ दुर्द्धरारोग सोगा जरा जंतने, ताव एकांतरा दुखपंते । गर्भबंधन वर्ण सर्व विचट्ट विधं, बालिका बालसेवा ऋणवंते ॥उं०॥५२॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते । दाढ उंदर तणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल बि- कराल दंते ॥उं०॥५३॥ धरणेंद्र पद्मावती समरशोभा- वती, वाट आघाट अटवी अटंते । लच्छमी लीला मिले सुजस वेलाउले, सफल आसा फलै मन हसंते ॥ उं०

॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरै कानपीडा टलै, ऊतरै सूल सीसग भणंते । वदत वर प्रीतसुं प्रीति विमल प्रभु, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्नै ॥ उंजितु ॥ ५५ ॥

इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवन सम प्तम्।

गोतमस्वामी का छंद।

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिस । जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मन वाञ्छित लीला संपजे । गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामे नावे ढूकडा । भूत-प्रेत नवी मंडे प्राण, ते गौतम ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे नीरमल काय, गौतम नामे वाधे आय । गौतम जिन शासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मन वाञ्छित कापड़ तंबोल । घरसुं घरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गोतम नाम जपो जग जाण । मोटा मंदिर मेरू समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मंगल घोड़ानी जोड़, वारू विलहे वाञ्छित कोड़ । महियल माने मोटा राय, जो तुठे गोतमना

पाप ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नरनी संगत मीले । गौतम नामे नीरमल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पून्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु । कहे लावण्य समय कर जोड़, गौतम तुठे संपति कोड़ ॥९॥ इति ॥

देसावगासी का पच्चक्खाण ।

श्रावक के तीन सामायिक लेनी हो तो तथा जितनी ज्यादा पचक्ख़नी हो तो उस की विधि —

उपासरे में आ कर तथा घर के एकान्त स्थान में करना हो तो प्रथम काजा निकाल कर बटासणा पर बाजू रख कर खमास-मण देवे—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए मत्थएण वन्दामि ।

बाद का ईरियावहिया करे —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं प-डिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहि-याए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणगदग मट्टीमक्कडा संता-णा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइं-दिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया,

मानस हंस सम वह, नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुण छत्तीसी धामोजी। चिदानन्द रसस्वादता, परभावे निःकामोजी ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी। निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी। भवि जीव बोधक तत्व शोधक सयल गुण संपत्ति धरा। संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तप गुण आगरा।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय आचार्यपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ खंति जुआ मुत्ति जुआ, अज्जव मद्दव जुआ जी। सच्चं सोयं अकिंचणा, तव गुण संजम रत्ताजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे रम्या ब्रह्म सु-गुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा, स्याद्वाद वादे तत्ववादक, आत्म पर विभजनकरा। भव भीरु साधन धीर शासन, वहन धोरी मुनिवरा। सिद्धान्त वायणदान समरथ, नमो पाठक पद धरा ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय उपाध्यायपदं वा-
सक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ सकल विषय विष वारिने, निःकामी निःसंगी जी । भव दव ताप शमावता । आतम साधन रंगी जी ॥१॥ (उलालो) जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा । काउसग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म झीपे, नैव छीपे पर भणी । मुनिराज करुणा सिन्धु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित भणी ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय साधुपदं वासक्षेपं
यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो, तत्त्व स्वरूप प्रतीत जी ॥ जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जी ॥१॥ (उलालो) जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल पर इहा टले । निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव, करुणा रुचिता उच्छले । बहु मान परिणति वस्तुतत्त्वे, अहवतसु कारण पणे । निज साध्य दृष्टे सर्वकरणी, तत्त्वता संपत्ति गणे ॥

मानस हंस सम यह , नमो सिद्ध महागुणी ॥ २॥
ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुण छत्तीसी धामोजी। चिदानन्द रसस्वादना, परभावे निःकामोजी ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी। निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी। भवि जीव बोधक तत्त्व शोधक सयल गुण संपत्ति धरा। संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तप गुण आगरा।
ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय आचार्यपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ खंति जुआ मुत्ति जुआ, अज्जव मद्दव जुत्ता जी। सच्चं सोयं अकिंचणा, तव गुण संजम रत्ताजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे रम्या ब्रह्म सु-गुत्ति गुत्ता, समिति समिता श्रुतधरा, स्याद्वाद वादे तत्त्ववादक, आत्म पर विभजनकरा। भव भीरु साधन धीर शासन, वहन धोरी मुनिवरा। सिद्धान्त वायणदान समरथ, नमो पाठक पद धरा ॥



ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय उपाध्यायपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ सकल विषय विष वारिने, निःकामी निःसंगी जी । भव दव ताप शमावता । आतम साधन रंगी जी ॥१॥ (उलालो) जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा । काउस्सग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म झीपे , नैव छीपे पर भणी । मुनिराज करुणा सिन्धु त्रिभुवन , बंधु प्रणमुं हित भणी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय साधुपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो , तत्त्व स्वरूप प्रतीत जो ॥ जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जो ॥१॥ (उलालो) जे अनुप श्रद्धा धर्म प्रगटे , सयल पर ईहा टले । निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव , करण रुचिता उच्छले । बहु मान परिणति वस्तुतत्त्वे , अहवतसु कारण पणे । निज साध्य दृष्टे सर्वकरणी , तत्त्वता संपत्ति गणे ॥

मानस हंस सम यह , नमो सिद्ध महागुणी ॥ १॥
ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धपदं यासेभ्यो यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुण छत्तीसी धामोजी । चिदानन्द रस स्वादना, परभावे निःकामोजी ॥ उल्लालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन , साध्य निज निरधारथी । निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधना व्यापारथी । भवि जीव बोधक तत्व शोधक सयल गुण संपत्ति धरा । संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तप गुण आगरा ।
ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय आचार्यपदं यासेभ्यो यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ खंति जुआ मुत्ति जुआ, अज्जव मद्दव जुआ जे । सच्चं सोयं अकिंचणा , तव संजम रया जे ॥ १ ॥ (उल्लालो) जे रमा ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता , समिति समिता श्रुतधरा, स्याद्वाद वादे तत्त्ववादक , आतम पर विभजनकरा । भव भीरु साधन धीर शासन , वहन धोरी मुनिवरा । सिद्धान्त वायणदान समरथ, नमो पाठक पद धरा ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दर्शनपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥६॥

नमोऽर्हत्०॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी। पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोधक भाव विलक्षणा। स्याद्वाद-संगीनत्व- रंगी, प्रथम भेदा भेदता। सविकल्पने अविकल्पवस्तु, सकल संशय छेदता।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय ज्ञानपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥७॥

नमोऽर्हत्० ॥ चारित्र गुण वली वली नमो, तत्व रमण जसु मूलोजी ॥ पर रमणीय पणुं टले, सकल सिद्ध अनुकूलोजी ॥१॥ (उलालो) प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम, तत्व थिरता दम मयी ॥ शुचि परम खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्वल, काम कश्मल चूर्णता ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-

जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारित्रपदं यामहे यजामहे स्वाहा ॥८॥

इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदैजी ॥ आतम सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ (उलालो) उच्छेदे कर्म अनादि संतति, जेह सिद्धपणुं वरे । योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे । अंतर मुहूरत तत्व साधे, सर्व संवरता करी । निज आत्म सत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय तपपदं यामहे यजामहे स्वाहा ॥९॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय २ श्री अरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकाशी ॥१॥ समुद्धात शुभ केवले, क्षयकृत मलराशी, शुक्ल चरम शुचि पादमें, भयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणीए, हुए अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥३॥ इति ॥ 'अरिहंति नमस्किरि'ये नमोऽर्हंत नमः ॥

जां ॥ इति अरिहंत पद स्तुति ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुत्रिभाग भागी ॥ पुव्व पउपपसंग में, ऊरध गन जागी ॥ १ ॥ समय एक में लोकवांत, गयां निगुण निरागी ॥ चेतनरूपं आत्मरूप, सुदिशा लही मागी ॥ २ ॥ केवल दंसणनाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धपद स्तवन ॥

(थांरे महिला ऊपर मेह झरोखे वीजली, ए चाल)

आठ परम नग माय हीला कीर्ती पूर्वमें ॥ म्हा० गलाल ही० ॥ उत्कृष्टी करे धाम सयोगी धामनें ॥ म्हा० स० ॥ अजोगी के अंत मजे भविजनपना ॥ म्हा० स० ॥ शैलेशी लही धर्म दहे गुण धेनिमा ॥ म्हा० द० ॥ १ ॥ लघ्वाक्षर पंच काल रहे ते योगमें ॥ म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अन्त करीने अन्तमें ॥ म्हा० ध० ॥ समय करे जगरहासे अक्रिय शासनें ॥ म्हा० ध० ॥ पुन्नपयोग आनेत स्वभाव अर्थपनें ॥ म्हा० स्व० ॥ २ ॥ स्युगुण लय परमाण योजन लहेरे वही ॥ म्हा० यो० ॥ चर्तुग्र विजदा भार निरालंबन सही ॥ म्हा० नि० ॥ सब्बे योजन सघघनाकृति अन्तमें ॥

म्हा० घ० ॥ मध्यी पक्ष थी हीन भणी सिद्धांतमें । म्हा० म० ॥ ३ ॥ ततुपब्भारा नाम शिलासें जोयनें । म्हा० शि०॥ युग लोचन में भाग अलोक कुं स्पर्शे ॥ म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहन ॥म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनुशतपंच गुणासें हीनता ॥म्हा ॥गु०४॥ मिलिया एकमें अनंत आबाधा ना लही ॥म्हा अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरोही जो सही ॥म्हा सि० ॥ बीजो पद श्री सिद्ध धरो मनगेह में ॥ म्हा धरो०॥ कुशल भये जग जीव मिलोगा तेहमें ॥म्हा मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवन ॥

॥ सिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी । अव्याबाधे सादिअनादि चिदानंद चिदरासीजी। परमातम पद पूरण विलाशी अघ घन दाघ विनाशी जी । अनंत चतुष्टमय शिवपद ध्यावो केवलज्ञानी भासीजी ॥१॥ इति सिद्धापद स्तुति ॥

॥ तृतीय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिन पद कुल मुखरम अनिल । मिनरस गुण धारी । प्रबल सबल घन मोहकी। जिणतें चमूहारी ॥ १ ॥ ऊज्यादिक जिनराज गीत । नयनन विस्तारी भय कूपे पापे पतंत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचा

धारी जीयकै, आचारिजपद सार । जिन कुं वंदे हीर धर्म, प्रह्लोसर सौ वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवन ॥

(नणदल बींदली दो, ए चाल)

त्रेसी छत्रीसी जेणें, हणमां संतेश सुभट सम देणो हो, गणपति गुण पेखो ॥ टेर ॥ मान महागिरि चपरे, अतिशोभन मदव वयरे हो ॥ग० ॥१॥ दंभलप विस वेली, पर अनुभव कोदे ठेली हो॥ग०॥ मुच्छा मदसो भरियो, लोह सागर मुनें नरियो हो ॥ग०॥२॥ मदन नाग मद हीनो, जिण दम जग जेर कीनो हो ॥ग०॥ मोह महामल्ल नाटगो, पुण वैराग मुगरें पाटगो हो । ग० ॥३॥ दोम गयंद वश कीनो, धरि उपशम अंकुश लीनो हो ॥ग०॥ अंतरंग रिपु अेसा, सुरवर विण जिण निरेया हो ॥ग०॥४॥ रम कृति सुधारसें लीनो, सम अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, भरी जीव कृपालता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवन ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पंचाचार कुं पालि उजवालें दोष रहित गुणधारी जी । गुण छत्तीसें आगमधारी द्वादश अंग विचारी

जी । प्रबल सबल घन मोह हरणकूं अनिल समो गुण खाणी जी । क्षमा सहित जे संजम पाले आचारज गुण ध्यानी जी ॥ इति आचार्यपद स्तुति ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

धन धन श्री उवज्झाय राय, शठता घन भंजन। जिनवर दिसन दुवाल संग, कर कुन जन रंजन ॥ १॥ गुणवण भंजण मत्त गयंद, सुय शुणि किय गंजण । कुणालंब लोय लोयणं, जन्थय सुयसंजण ॥२॥ सहा प्राणमें जिन लह्यो ए , आगमसें पद तुर्य । तिनमें अहनिश हीरधर्म वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

(सांवलिया अलगा रहोनें, ए चाल)

छुपने रे दूरी छुपने, चेतन भाप सठने ॥ दूरी छुपनें ॥तुं मुझ पास क्युं आवै॥दू० तुझने कुण घन लाये, दू०॥ए आंकणी॥तो संग निज पनंद्रीनो, रचना चरम सुलागो। नाणावरणी खय उपशमसे, भावेंद्री मंडाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ द्रव्ये ते परजासें कीना, जाति नाम व्यपदेश । पवंनो सो तुरग गजादिक, किण कर्म उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक बहु मुझकूं शंका, तेरे संगे लागी । नीलवर्णकी समता सेती, में भयो तोडं

रागी ॥दु०॥३॥ उपकारिमे हलियो अविगारो, अधि-
यो शामल आय । आपीना मन पोइानामें , मार्ग-
मेनविलाय ॥दु०॥४॥ आगिरगे ममर्गनं वर आगम,
सूत्रसेने उपउभाय । तम् सेवामें हति आटमार्नु, येनन
धूमालना पाम॥ दु० ॥५॥ इति उपाध्याय स्तवन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तुति ॥

धंग इग्यार चउदं पूरव गुण पचर्धारना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहिये जोग समाधि विचारी जी। तपगुण सुर आगम धर नय निक्षेप धारी जी,सुनि-गुण धारि बुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥

· ॥ अथ पंचम साधुपद चैत्यवंदन ॥

दंसण नाण चरित्त करी, पर शिवपद गामी, धर्म शुक्ल शुचि ध्यानधरं, आदित राग कामी ॥ १ ॥ गुणव-मल उपशमवंत, भये अंतरजामी । पालत इंद्रिय दम-नभून, समस्थ अभिरामी ॥२॥ आकति घन गुणगणा भर्यो ए, पंचम पद मुनिराज । सम्यग्दर्शन सहज है, शिवपर्म के काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदन ॥५॥

॥ साधुपद स्तवन ॥

(माल्हन मालन मनि करो , ए चाल)

निरुपाधी उपयत कहे, धीं चउगति मनन ह

रोमहो ॥मुनींदजी॥ राग द्वेष भय तुं करै ॥साधिजी॥ शिव रमणी में हेत हो ॥ मुनींदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै ॥ सा० ॥ छठे गुण ठोडहो ॥ मु० ॥ सात मोगम आगम करै ॥ सा० ॥ लघु काले गुण आदि हो ॥मु०॥२॥ स्त्यानर्द्धि निद्रा उदै ॥सा०॥ पामैं कर्म निकंद हो ॥ मु० ॥ प्रचला निद्रा में रही ॥ सा० ॥ पाम्म गुणना धाम हो ॥ मु० ॥३॥ थिरति रस धाम प्रमुख धरै ॥ सा० ॥ जो गुण संख्यातीत हो ॥ मु० ॥ सो पिण निज जगमें रही ॥ सा० ॥ अधिकधन गुणनी स्थान हो ॥मु०॥४॥ रयण त्रय में शिव पथे ॥सा०॥ साधन पर वर जोयहो ॥ मु० ॥ साधु सुधइ सद्गुधर्म में ॥सा०॥ कुशल भवतु जगतीयहो ॥मु०॥५॥इति पंचम साधुपद स्तवन ॥

। अथ साधुपद स्तुति ॥

सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीश टालै जी, षट्काया गोकुल रखवालै नवविध ब्रह्मव्रत पालैजी । पंच महाव्रत सुधा पालै धर्म शुक्ल उज-वालैजी । क्षपक श्रेणि कर कर्म खपावै इम पद गुण उपजावै जी ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ छट्ठे दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

इग पुग्गल परियह, अद्ध परमित संसार ।

गंठिभेद तव करि लहे , सव गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक भजि असंख,उपशम पण धार । विना-जैण चारित्र नाण , नही हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धर्मनीए , रुचि लक्षण अभिराम । दरशनकुं गणि हीरधर्म , भाव निज करत प्रणाम ॥इति दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ दर्शनपद स्तवन ॥

(रामचंद्रके बाग में आंबो मोहि रह्यो री,ए चाल)

देव श्री जिनराज , गुरु ते साधु भणोरी । धर्म जिनेश्वर प्रोक्त , लक्षण बोधि तणोरी ॥ १ ॥ बोधि लाभके काज , सधन नरक सलोरी । तेण विना सुर लोय , तांते अधिक कुवेरी ॥ २ ॥ मिथ्या ताते तप, पोथड़ी छांड लहेरी। उपशम क्षायक वेद , ईश्वर भीन कहेरी ॥ ३ ॥ भव सागर है अपार , कुण अरताग कलोरी । जग लाभे ते लोय , शीमपद साथ रमोरी ॥ ४ ॥ पद आवे अप्रमाण , नाण चारित्रभलारी । पोष धर्ममें जाय , लाभे कुशल कलारी ॥ ५ ॥ इति दर्शनपद स्तवन ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तुति ॥

जिनपण्णत्ततत्त्व सुधा सरधे समकित गुण उजवाले जो, भेद छेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावे

जी। प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो गणधर अरिह
सूरा जी, ए दर्शनपद निज निज वंदो भवसागर के
तीरा जी ॥ १ ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

क्षिमादिक रस राम वह्नि, मिल आदम नाण
भाव मिलापसें जिन जनित , सुय बीस प्रमाण ॥१॥
भव गुण पज्जवि ओहि दोय, मण लोचन नांग।लोका
लोक स्वरूप जाण, इक केवल भांग ॥२॥ नाणावर्ण
नासथी ॥, चेतन नाण प्रकाश। सप्तम पदमें हीरधर्म
नित चाहत अवकाश ॥३॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन।

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

(म्हारे अति उछरंगे, ए चाल)

जिनवर भाषित आगम भणिया, तत्व यथास्थित
गमिया जी ॥म्हारे जगजन साम्य॥ ते उत्तम घर नाण
कहाये, भविजन अहनिश चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥
भक्षाभक्ष कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी ॥म्हा०॥
देव कुदेव अहित हितधारी, जाणे जेण विचारी जी ॥
म्हा० ॥२॥ श्रुति मति दोय है इंद्री साम्य, तेण परोक्ष
विचारय जी ॥म्हा०॥ ओही मण केवल है याम्य, जीव
प्रत्यक्ष सुधाम्य जी ॥म्हा०॥३॥ अय विजरस यलं जग
जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥म्हा०॥ त्रिभुवन पूर्वे

जासु पसायें, भासि शुभ अध्यवसायें जी ॥म्हा०॥४॥ ज्ञानावरणी उपशम क्षयथी, केवल ज्ञानाकुं विलसे जी ॥म्हा०॥ सप्तम पदमें भवि जन हरखे, निशदिन कुशलता निरखे जी ॥म्हा०॥ ५ ॥ इति ज्ञानपद स्तवन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तुति ॥

मति श्रुति इंद्री जनित कहिये लहिये गुण गंभीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादश अंग विस्तारो जी । अवधि मन पर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकुं वंदो पूजो भविजनने सुखकारो जी ॥ इति ज्ञानपद स्तुति ॥

अथ अष्टमचारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जास पसायें साधु थाय, गुण ए नमिनंद । नमन करे शुभ भाव लाय, पूज नरपति वृंद ॥ १ ॥ अंब धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद । सुमति वेण गोम गुणि युत, दे सुख अमंद ॥ २ ॥ इसु कृति मान कल्याणको ए, रहित लेस सुविवेक । जीव चारित्रकुं धरभणि, न-मन चरन विन संग ॥३॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

चारित्रपद स्तवन ॥

निर्विकल्प ध्यान निगुणो । विद्याभाव निसंग, (सुज्ञानी सांभलो) रंग ॥ मुनि जिन चेतन करे, रूपी पुद्गल संग (सु०) ॥१॥ स्पर्श कषाया पांचो, वाणि करत न्याय (सु०)

कृत्वा जोग सुणा मना , लब्धा मंत्र स्वभाव (सु०) ॥ २॥ पर्यासा लघु जोग में, बृद्धि लहै जगमाव (सु०) मध्ये वसु समये लहै , अंते हौते जाण (सु०) ॥३॥ सहकारी मानसमुख्या , कारण रस्य बलेश (सु०)॥ग्रा घन्य प्रकारता , सम प्रभून का तेन (सु०) ॥४॥ गौ धन रूपी भलो, चेतन संयम धाम (सु०) श्र मन निज पद धर्म में ,कुशल भवतु अभिराम (सु०) ॥५॥ ॥ इति चारित्र पद स्तवन ॥

अथ चारित्रपद स्तुति ॥

करम अपचय दूर स्थावे आतम ध्यान लगावैजी। धारे भावना सुधी भावे सागर पार उतारैं जी। षटषंड राज कुं दूर तजी ने चक्री संयम धारैजी। ऐसा चारित्र पद नित वन्दो आतम गुण हितकारी जी। इति चारित्र पद स्तुति ॥

नवमो तपपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीआवआदिक तीर्थनाथ, तद्भव शिव जाण। ति धर्मरति धारा, भव्य द्वादश परिमाण ॥१॥ बाह्य अ भिन आभा सही , आदिक लब्धि निदान। भेदै मन युत निर्णो, दारुन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्री तप सलोण , इच्छा रोध लक्षण। चन्दन में निज आत्म दूर भवतु भवकृत ॥ ३ ॥ इति तप चैत्य०

अथ तपपद स्तवन॥

बारस भेद भएया जिनराजे, भाव्या तपा अघ काजे रे(शिव पदकेशि)। जिण भव सिद्धि लणा वर ज्ञाना। जिनवर पिण तपना कर्ता रे॥१॥(शि०)समता सहित जिनते भारी,भली कर्मचमू विणशारी रे(शि०)जीव कनक में कर्म कयोग। दहे तप पावक बड जोरा रे (शि०)॥२॥तप तरूवर ना कुसुम है ऋद्धि, देव नर नी फलसे सिद्धि रे(शि०) पाप मवास हे समर्थी रार्थी, तपभानू से जाय नाशी रे(शिव०) ॥३॥जसन पसाये लहिये पारू। लबधो सगली जग हित कारू रे(शि०) अति दुष्कर कृत आचरता हीना, बरम भावे वारे कि मारे (शि०) ॥४॥इच्छा रोधन मर्या कहिये,तपपद ही चेतन वहिये रे (शि०) पाठक धीरधर्म कृपा से। तब पद मुजाला सुं भासे रे॥शि०५॥इति तपपदस्तवन॥

अथ तपपद स्तुति ॥

इच्छारोधन तप से भाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य भावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी। चेतन निजगुण परिणत पेखी तेहीज तपगुण दाखी जी, लवधि सकलनो कारण देखी ईश्वर से मुख भाखी जी॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमा, नवपद अभिरामी रे लोय ॥ अहो नव० ॥ करुणासागर गुणनिधि, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकाशी रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्रीसे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारज त्रीजे पदे, वंद अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, नय दुविध प्रचारी रे लोय ॥ अहो न० ॥ चौथे पद पाठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ अहो सं० ॥५॥ पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अहो पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमुं वडभागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥६॥ निज पर गुणनें ओलखे, शुभ श्रद्धा आवे रे लोय ॥अ० शु०॥ छठे गुण दरसण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥७॥ ज्ञान नमो गुण सातमें, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥अ० अ०

॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो, परभव निवारी रे लोय ॥अ० प०॥ खांत्यादिक दस धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नवमे वलि तपःपद नमो, बाह्याभ्यंतर भेदे रे लोय ॥अ० बा०॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म उच्छेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावे शुभ भावे रे लोय ॥अ० ध्या०॥ नृप श्रीपालतणी परे, मन वंछित पावे रे लोय ॥अ० म० ॥११॥ आसू चैत्रक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव ओली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥अ० शि० ॥१२॥ सिद्धचक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० व० ॥ श्रीजिनलाभ कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥अ० अ०॥१३॥ इति नवपद स्तवन ॥

अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

मोक्षधनायक जिनवरू जी, अतिशय जास अनूप। सिद्ध अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप । भविक मन धारज्यो रे । धारज्यो नवपद ध्यान ॥ भ० ॥१॥ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गणधरू रे, गुण छत्तीस निवास । पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ भ० ॥ २॥ सुमति गुपति धर सोभता जी, साधु समभावंत।सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश

अंतोम ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना परण छे रे, सा
धसम विधि होय । ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक
सुख होय ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे,
मूल ए नवपद जाण । अविचल अनुभव कारणे जी,
नितप्रति नमन कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥रागप्रभाति॥ नवपद ध्यान धरीरे ॥भविका न०॥
मन वचन काया कर एकांते, विकथा दूर करीरे ॥भ०
न० ॥ १ ॥ मंत्र जड़ी अरु तंत्र घने रा । इन सब कुं
विसरी रे । अरिहन्तादिक नवपद जपने, पुण्य भंडार
भरीरे ॥ भ० ॥२॥ चार सिद्ध नव निध मंगल माला,
मंगलिक सहज वरीरे । बालचन्द्र गावे बलिहारी, शिव
पद वास करीरे ॥ भ० ॥ न० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥ जीवा चतुर सुजाण, नवपद के गुण गावो
॥ जी० ॥ नवपद महिमा आगमें मांही, गणधर गाय ब
ताय रे ॥ जी० ॥१॥ करम निकाचित दूर करण कुं,
सुन्दर शुद्ध उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पूजन आ
राधन करनां, अजरामर सुख पावे ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए
सिद्ध चक्र आराधि पावो, नवपद संग बसावो ॥जी०
॥४॥ परम भाग्य शिव सुख दायक है, बालचन्द्र गुण
गावे ॥ जीवा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीनवपद स्तुति ॥

मम मंगल हो सिद्धचक्रपदम्,
मन वांछित दे शिवराजपदम् ।
सहु मंगल में पद मंत्रपदम्,
शुभध्यान नमो शुभध्येयपदम् ॥ १ ॥
अरिहंतपदे दुय सिद्धपदम्,
तिय सूरिपदं चऊ उवझायपदम् ।
सहु साहु दरशनज्ञानचरम्,
तपकर्म दलं क्षय होय अरम ॥ २ ॥
आओ भव्यजनो नव आम्लकरो,
तनुरोग हरो कहे शास्त्र खरो ।
तुम ध्यान धरो बहुमान करो,
भवपार वरो शिवराज वरो ॥ ३ ॥
शहर लश्करमें सुख पूर्ण लियो,
विमलेश्वर प्रतमें साम्य दियो ।
जय हो जय हो मुझ प्राण प्रियो,
कहे क्षेमसागर आराम लियो ॥ ४ ॥

॥ श्री नवपदस्तुतिः ॥

सिद्धं चक्रं चाहं वन्दे ॥ १ ॥
श्रीमन्त्रैकं पादं नौमि ॥ २ ॥

शास्त्रे चोक्तं कर्तुं भव्याः ॥ ३ ॥
सानिध्यं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवपद चैत्यवन्दनानि ॥

उप्पन्नसन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरा
संठियाणं । सद्देसणाणंदियसज्जणाणं, नमो नमो हो
सया जिणाणं ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणं दरमाल
नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं । सूरीण दूरीकयकुग्ग
नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥ २ ॥ सुत्तत्थवित्थारण
राणं, नमो नमो वायगकुंजराणं । साहूण संसाहि
संजमाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥ ३ ॥ जिणुत्त
रुइ लक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स । अन्न
संमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ ४ ॥
आराहियाखंडियसक्कियस्स, नमो नमो संजमवी
यस्स । कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्व
तवोभरस्स ॥ ५ ॥ इय नवपयसिद्धं लद्धिविज्जाभिसि
पयडियसरवग्गं ह्रींतिरेहासमग्गं । दिसिवइ सु
सारं, खोणिपीढावयारं । तिजय विजय चक्कं, सि
द्धचक्कं नमामि ॥ ६ ॥ इति प्रथमम् ॥

॥ पुनः द्वितीयम् ॥

भावविहीन उत्तम करणि, चलि गुणरी
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ १ ॥

आचारज उवज्झाय साधु , समता रस धाम । जिन भाषित सिद्धान्त शुद्ध , अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ पंच बीज गुण भेदहाण, नाण चरण सय शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद , ए नव पद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह पर-भव आनन्दकन्द , जग माहि प्रसिद्धो । चिन्तामणि सम जाण जोग , बहु पुरायें लद्धो ॥ ४ ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मनधारो,परिहर पर जैजाल-जाल निज पद संभारो ॥५॥ सिद्धचक्र पद सेवना , सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याणनिधि , प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ त्रिर्गाथं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति॥

निरुपम सुखदायक जगनायक,लायक शिवगामि गामी जी । करुणासागर निजगुण आगर , शुभ समता रस धामी जी । श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर, ध्यावे जे मन रंगेजी । ते मानव श्रीपाल तणीपरें,पामे सुख सुरंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक , साधु महागुणवंताजी । दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी॥ एहनुं ध्यान धरतां लहिए, अविचल पद अविनाशीजी । ते सघला जिननायक नमिये , जिण ए नीति प्रकाशीजी ॥ २ ॥ आसु मास मनोहार तिम वलि,चैत्रकमास जगीशें जी।

शास्त्रे प्रोक्तं फलं भव्याः ॥ ३ ॥
सान्निध्यं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवपद चैत्यवन्दनानि ॥

उप्पन्नसन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरासण संठियाणं। सद्देसणाणं दियसज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणं दरमालयाणं, नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं। सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं नमो नमो सूरसमप्पहाणं ॥२॥ सुत्तत्थवित्थारणतप्पराणं, नमो नमो वायगकुंजराणं। साहूण संसाहिय संजमाणं, नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥३॥ जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स। अन्नाणसंमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥४॥ आराहियाखंडियसक्कियस्स, नमो नमो संजमवीरियस्स। कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥५॥ इय नवपयसिद्धं लद्धिविज्जाभिसमिद्धं पयडियसरवग्गं ह्रीं तिरेहासमग्गं। दिसिवइ सुरसारं, खोणिपीढावयारं। तिजय विजय चक्कं, सिद्धचक्कं नमामि ॥ ६ ॥ इति नवपद ॥

॥ पुनः [illegible] ॥

[illegible] उदार [illegible] . [illegible]
[illegible] ॥ १ ॥

आचारज उवज्झाय साधु , समता रस धाम । जिन भाषित सिद्धान्त शुद्ध , अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोध बीज गुण संपदाय, नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्दपद , ए नव पद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परम आनन्दकन्द , जग माहिं प्रसिद्धो । चिंतामणि सम जास जोग , बहु पुराये लद्धो ॥ ४ ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मनधारो,परिहर परजंजाल-जाल निज पद संभारो ॥५॥ सिद्धचक्र पद सेवना , सहजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याणनिधि , प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इतिनवं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति॥

निरुपम सुखदायक जगनायक,लायक शिवगति गामी जी । करुणासागर निजगुण आगर , शुभ समता रसधामी जी । श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर, ध्यावे जे मन रंगेजी । ते मानव श्रीपाल तणीपेरे,पामे सुख सुरसंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक , साधु महागुणवंताजी । दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरतां लहिये, अविचल पद अविनाशीजी । ते सघला जिननायक नमिये , जिण ए नीति प्रकाशीजी ॥ २ ॥ आसू मास मनोहर तिम वलि,चैत्रकमास जगीशें जी।

७ अगुरुलघुगुणसंयुताय श्री सि०
८ अनंतवीर्यगुणसंयुताय श्री सि०

॥ इति सिद्ध अष्टगुणाः ॥

[illegible] नमस्कार [illegible] है [illegible] को [illegible] सो [illegible] को ॥ जिनका [illegible] है [illegible] को, [illegible] कहिके [illegible] किया है सो को—

अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्री आ० ॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्री आ०
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
६ धैर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
७ उपदेशगुणसंयुताय श्री आ० ॥
८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्री आ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१० शीलगुणसंयुताय श्री आ० ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१२ अविकथकगुणसंयुताय श्री आ० ॥

१३ अचपलगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्री आ० ॥
१६ मृदुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१७ सर्व्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१८ ऋजुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
१९ द्वादशविधतपगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२० सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२२ शौचगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२३ अकिंचनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्री आ० ॥
२५ अनित्यभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२६ अशरणभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२७ संसारस्वरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२८ एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३० अशुचिभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३२ संवरभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३३ निर्जराभावनाभावकाय श्री आ० ॥

३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्री आ० ॥
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्री आ० ॥

॥ इतिआचार्यं षट्त्रिंशत गुणाः ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते॥

१ श्री आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उपाध्याय नमः
२ श्री सुयगडांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
३ श्री ठाणांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
४ श्री समवायांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
५ श्री भगवतीसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
६ श्री ज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
७ श्रीउपासगदसासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
८ श्री अंतगडसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
९ श्री अणुत्तरोववाइयसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
१० श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
११ श्रीविपाकसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥
१२ श्री उत्पादपूर्वपठनगुणयु० ॥
१३ अग्रायणीपूर्वपठनगुणयु० ॥
१४ वीर्यप्रवादपठनगुणयु० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयु० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयु० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनारूप सद्० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्० ॥

४ कुदर्शनवर्जनस्य सद्द० ॥
५ शुश्रूषास्य सद्द० ॥
६ धर्मरागस्य सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यस्य सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयस्य सद्द० ॥
९ सिद्धविनयस्य सद्द० ॥
१० चैत्यविनयस्य सद्द० ॥
११ श्रुतविनयस्य सद्द० ॥
१२ धर्मविनयस्य सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयस्य सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयस्य सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयस्य सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयस्य सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयस्य सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाःसारामिति चिन्तनस्य सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिन्तनस्य सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चि० ॥
२१ शंकादूषणपरिहाराय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणपरिहाराय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सादूषणपरिहाराय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणपरिहाराय सद्द० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थजन्तुसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिन्तनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चि० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सादूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहिताय सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिन्तनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥



४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ स्पर्शेंद्रियविषयवर्जकाय श्री सा०
१४ रसेंद्रियविषयवर्जकाय श्री सा०
१५ घ्राणेंद्रियविषयवर्जकाय श्री सा०
१६ चक्षुरिंद्रियविषयवर्जकाय श्री सा०
१७ श्रोत्रेंद्रियविषयवर्जकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संयमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीषहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥अथ सम्यक्त्वके सडसठ भेद लिख्यते॥

१ परमार्थसंस्तवनाम्यश्रीसम्यग्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनाम्य सद० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनाम्य सद० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
५ शुश्रूषारूप सह० ॥
६ धर्मरागरूप सह० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सह० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सह० ॥
९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
१० चैत्यविनयरूप सह० ॥
११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
१२ धर्मविनयरूप सह० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सह० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सह० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सह० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थजन्नुसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
५ शुश्रूषारूप सद० ॥
६ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्म्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप स
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं
२१ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सादूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहिताय सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनारूप सद० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद० ॥

५ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
६ शुश्रूषारूप सद० ॥
७ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वैयावृत्यरूप सद० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउरिंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥

६ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
५ शुश्रूषारूप सद० ॥
६ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनामकश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनाख्य सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनाख्य सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनस्य सद्द० ॥
५ शुश्रूषास्य सद्द० ॥
६ धर्मरागस्य सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यस्य सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयस्य सद्द० ॥
९ सिद्धविनयस्य सद्द० ॥
१० चैत्यविनयस्य सद्द० ॥
११ श्रुतविनयस्य सद्द० ॥
१२ धर्मविनयस्य सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयस्य सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयस्य सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयस्य सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयस्य सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयस्य सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनस्य सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनस्य सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

१ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
५ तेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
६ चउरिंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
परमार्थज्ञातृसेवनारूप सद्० ॥
व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञसेवनारूप सद० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद० ॥
५ शुश्रूषारूप सद० ॥
६ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तनरूप सद० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिन्तनरूप सद० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनाम्पश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनाम्प सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनम्प सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तनरूप सद्द०
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिन्तनरूप सद्द०
२० संसारे जिनमतस्थितजनसाध्व्यादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनाय स्वाहा ॥
५ शुश्रूषाय स्वाहा ॥
६ धर्मरागाय स्वाहा ॥
७ वैयावृत्याय स्वाहा ॥
८ अर्हद्विनयाय स्वाहा ॥
९ सिद्धविनयाय स्वाहा ॥
१० चैत्यविनयाय स्वाहा ॥
११ श्रुतविनयाय स्वाहा ॥
१२ धर्मविनयाय स्वाहा ॥
१३ साधुवर्गविनयाय स्वाहा ॥
१४ आचार्यविनयाय स्वाहा ॥
१५ उपाध्यायविनयाय स्वाहा ॥
१६ प्रवचनविनयाय स्वाहा ॥
१७ दर्शनविनयाय स्वाहा ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिन्तनाय स्वाहा ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिन्तनाय स्वाहा ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय स्वाहा ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय स्वाहा ॥
२३ विचिकित्साख्यदूषणरहिताय स्वाहा ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसाख्यदूषणरहिताय स्वाहा ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनस्य सद० ॥
५ शुश्रूषास्य सद० ॥
६ धर्मरागस्य सद० ॥
७ वैयावृत्यस्य सद० ॥
८ अर्हद्विनयस्य सद० ॥
९ सिद्धविनयस्य सद० ॥
१० चैत्यविनयस्य सद० ॥
११ श्रुतविनयस्य सद० ॥
१२ धर्मविनयस्य सद० ॥
१३ साधुवर्गविनयस्य सद० ॥
१४ आचार्यविनयस्य सद० ॥
१५ उपाध्यायविनयस्य सद० ॥
१६ प्रवचनविनयस्य सद० ॥
१७ दर्शनविनयस्य सद० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनस्य सद० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनस्य सद० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितमाध्यादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद० ॥
२३ विचिकित्सास्यदूषणरहिताय सद० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसास्यदूषणरहिताय सद० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द० ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
१२ त्रसकायरक्षकाय श्री सा०
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१५ तेइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१६ चउइंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
२० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
२२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनारूप सद्द० ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥

४ कुदर्शनवर्जनरूप सद्द० ॥
५ शुश्रूषारूप सद्द० ॥
६ धर्मरागरूप सद्द० ॥
७ वैयावृत्यरूप सद्द० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद्द० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद्द० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद्द० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद्द० ॥
१२ धर्म्मविनयरूप सद्द० ॥
१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द० ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द० ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द० ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द० ॥
१७ दर्शनविनयरूप सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द०
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द०
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चिं०
२१ शंकादूषणरहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द० ॥

२५ तत्परिचयदूषणरहिताय सद० ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूप सद० ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकरूप सद० ॥
२८ वादिप्रभावकरूप सद० ॥
२९ नैमित्तिकप्रभावकरूप सद० ॥
३० तपस्विप्रभावकरूप सद० ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिकविद्याभृत्प्रभावक सद० ॥
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रभावक सद० ॥
३३ कविप्रभावकरूप सद० ॥
३४ जिनशासने कौशलता भूषण स० ॥
३५ प्रभावनाभूषणरूप स० ॥
३६ तीर्थसेवाभूषणरूप स० ॥
३७ स्थैर्यतभूषणरूप स० ॥
३८ जिनशासने भक्तिभूषणरूप स० ॥
३९ उपशमगुणरूप स० ॥
४० संवेगगुणरूप स० ॥
४१ निर्वेदगुणरूप स० ॥
४२ अनुकंपागुणरूप स० ॥
४३ आस्तिक्यगुणरूप सद० ॥
४४ परतीर्थिकादिवंदनवर्जनरूप सद० ॥
४५ परतीर्थिकादिनमस्कारवर्जनरूप सद० ॥

४६ परतीर्थिकादिआलापवर्जनरूप स० ॥
४७ परतीर्थिकादिसंलापवर्जन रूप श्रीस० ॥
४८ परतीर्थिकादि अशनादिदानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादिप्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसद० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्री सद० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद० ॥
५४ कांतारवृत्त्याकारयुक्त श्रीसद० ॥
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्त श्रीसद० ॥
५६ सम्यक्त्वचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद०॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्य द्वारमिति चिंतन श्री सद० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद० ॥
५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद० ॥
६० चारित्रधर्मस्य धारकमिति चिंतनरूप सद० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६२ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतयनरूप स० ॥
६३ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री सद० ॥
६४ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्त सद० ॥
६५ स च जीवः कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयुक्त स०
६६ स च जीवः कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थानयुक्तं

६७ जीवस्यास्ति निर्व्वाणमिति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीस०
६८ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीस०

इसी तरह अडसठ खमासमण देना

अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रह मति० ॥
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्रियअर्थावग्रह मति० ॥
१० मन इन्द्रिय अर्थावग्रह मति० ॥
११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मति० ॥
१२ रसनेन्द्रिय ईहा मति० ॥
१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रिय ईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रिय ईहा मति० ॥
१६ मन इन्द्रिय ईहा मति० ॥
१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय मति०
१८ रसनेन्द्रिय अपाय मति० ॥

१९ घ्राणेन्द्रिय अपाय मति० ॥
२० चक्षुरिन्द्रिय अपाय मति० ॥
२१ श्रोत्रेन्द्रिय अपाय मति० ॥
२२ मन इंद्रिय अपाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मति० ॥
२४ रसनेन्द्रियधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेन्द्रियधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मति० ॥
२७ श्रोत्रेन्द्रियधारणा मति० ॥
२८ मन इंद्रियधारणा मति० ॥
२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञि श्रुतज्ञानाय नमः॥
३२ असंज्ञि श्रुतज्ञा० ॥
३३ सम्यक् श्रुतज्ञा०
३४ मिथ्याश्रुतज्ञा० ॥
३५ सादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३७ सपर्यवसनिश्रुत० ॥
३८ अपर्यवसनिश्रुत० ॥
३९ गमिकश्रुत० ॥

४० अगमिकश्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्टश्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥
४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अननुगामि अवधि० ॥
४५ वर्द्धमान अवधि० ॥
४६ हीयमान अवधि० ॥
४७ प्रतिपाति अवधि०
४८ अप्रतिपाति अवधि० ॥
४९ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥
५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद ॥

इस तरह ज्ञान [illegible] ॥

अथ चारित्रपदके ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणचारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणचारि० ॥
३ अदत्तादानविरमणचारि० ॥
४ मैथुनविरमणचारि० ॥
५ परिग्रहविरमणचारि० ॥
६ क्षमाधर्मचारि० ॥

ार्जवधर्मस्पर्शनारि० ॥
दुताधर्मस्पर्शनारि० ॥
ुक्तिधर्मस्पर्शनारि०
तपोधर्मस्पर्शनारि०
संयमधर्मस्पर्शनारि० ॥
सत्यधर्मधारि० ॥
शौचधर्मस्पर्शनारि० ॥
आकिंचनधर्मस्पर्शनारि० ॥
र्यधर्मस्पर्शनारि० ॥
पृथ्वीरक्षासंयमधारि० ॥
उदकरक्षासंयमधारि० ॥
तेजरक्षासंयमधारि० ॥
वाउरक्षासंयमधारि० ॥
वनस्पतिरक्षासंयमधारि० ॥
द्वेइन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
तेइन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
चउरिन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
पंचेन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
अजीवरक्षासंयमधारि० ॥
प्रेक्षासंयमधारि० ॥
उपेक्षासंयमधारि० ॥

० अगमिकश्रुत० ॥
१ अंगप्रविष्टश्रुत० ॥
२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥
१ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४ अननुगामि अवधि० ॥
५ वर्द्धमान अवधि० ॥
६ हीयमान अवधि० ॥
७ प्रतिपाति अवधि०
८ अप्रतिपाति अवधि० ॥
१ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञा० ॥
१ लोकालोकप्रकाशकसर्वकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इति ज्ञानपदके ५१ भेद ॥

इस नाह इ१ ... ... ११ ।

अथ चारित्रपदके ७० भेद लिख्यते ॥

प्राणातिपातविरमणचारित्राय नमः ॥
मृषावादविरमणचारित्र० ॥
अदत्तादानविरमणचारित्र० ॥
मैथुनविरमणचारित्र० ॥
परिग्रहविरमणचारित्र० ॥
क्षमाधर्मचारित्र० ॥

आर्जवधर्मरूपधारि० ॥
मृदुताधर्मरूपधारि० ॥
मुक्तिधर्मरूपधारि०
१० तपोधर्मरूपधारि०
११ संयमधर्मरूपधारि० ॥
१२ सत्यधर्मधारि० ॥
१३ शौचधर्मरूपधारि० ॥
१४ अकिंचनधर्मरूपधारि० ॥
१५ बंभधर्मरूपधारि० ॥
१६ पृथ्वीरक्षासंयमधारि० ॥
१७ उदकरक्षासंयमधारि० ॥
१८ तेउरक्षासंयमधारि० ॥
१९ वाउरक्षासंयमधारि० ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयमधारि० ॥
२१ बेइन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
२२ तेइन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
२३ चउइन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
२४ पंचेन्द्रियरक्षासंयमधारि० ॥
२५ अजीवरक्षासंयमधारि० ॥
२६ प्रेक्षासंयमधारि० ॥
२७ उपेक्षासंयमधारि० ॥

८ अतिरिक्तवस्त्रभक्तादिपचनाद्यागम्यसंयमचा० ॥
९ प्रमार्जनरूपसंयमचारि० ॥
० मनःसंयमचारि० ॥
१ वाक्संयमचारि० ॥
२ कायसंयमचारि० ॥
३ आचार्यवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
४ उपाध्यायवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
५ तपस्विवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
६ लघुशिष्यादिवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
७ ग्लानसाधुवैयावृत्यरूपसंयमचारि० ॥
८ साधुवैयावृत्यरूपचारि० ॥
९ समणोपासकवैयावृत्यरूपचारि० ॥
० संघवैयावृत्यरूपचारि० ॥
१ कुलवैयावृत्यरूपचारि० ॥
२ गणवैयावृत्यरूपचारि० ॥
३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
५ स्त्रीआसनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनचारि० ॥
७ कुड्यंतरसहितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनचारि० ॥
८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥

४६ अतिसरसआहारवर्जनव्रतगुप्तिचारि० ॥
५० अतिआहारकरणावर्जनव्रतगुप्तिचारि० ॥
५१ अंगविभूषावर्जनव्रतगुप्तिचारि० ॥
५२ अनशनतपोत्सवचारि० ॥
५३ उणोदरीतपोत्सवचारि० ॥
५४ वृत्तिसंक्षेपत्सवचारि० ॥
५५ रसत्यागतपोत्सवचारि० ॥
५६ कायक्लेशतपोत्सवचारि० ॥
५७ संलेखणातपोत्सवचारि० ॥
५८ प्रायश्चित्ततपोत्सवचारि० ॥
५९ विनयतपोत्सवचारि० ॥
६० वैयावृत्यतपोत्सवचारि० ॥
६१ सज्झायतपोत्सवचारि० ॥
६२ ध्यानतपोत्सवचारि० ॥
६३ उपसर्गतपोत्सवचारि० ॥
६४ अनंतज्ञानसंयुक्तचारि० ॥
६५ अनंतदर्शनसंयुक्तचारि० ॥
६६ अनंतचारित्रसंयुक्तचारि०
६७ क्रोधनिग्रहकरणचारि० ॥
६८ माननिग्रहकरणचारि० ॥
६९ मायानिग्रहकरणचारि० ॥

७० लोभनिग्रहकरणचारि० ॥

अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत्कथिततपसे नमः ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे नमः ॥
३ बाह्यऊणोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊणोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
५ द्रव्यतःवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥
६ क्षेत्रतःवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥
७ कालतःवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥
८ भावतःवृत्तिसंक्षेपतपभेद न० ॥
९ कायक्लेशतपभेद न० ॥
१० रसत्यागतपभेद न० ॥
११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः
१२ स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितस्थानस्थितसंलीनता न०
१३ आलोयणप्रायश्चित्त तप०
१४ प्रतिक्रमणप्रायश्चित्त तप०
१५ मिश्रप्रायश्चित्त तप०
१६ विवेकप्रायश्चित्त तप०
१७ उत्सर्गप्रायश्चित्त तप०
१८ तपप्रायश्चित्त त०
१९ छेदप्रायश्चित्त त०

मूलप्रायश्चित्त न०
अणवस्थितप्रायश्चित्त न०
पारंचियप्रायश्चित्त न०
ज्ञानविनयस्य न०
दर्शनविनयस्य न०
२ चारित्रविनयस्य न०
३ गुर्वादिकमनविनयस्य न० ॥
७ वचनविनयस्य न०
८ कायविनयस्य न० ॥
९ उपचारकविनयस्य न० ॥
० आचार्यवैयावच्च न० ॥
१ उपाध्यायवैयावच्च न० ॥
२ साधुवैयावच्च न० ॥
३ तपस्विवैयावच्च न० ॥
४ लघुशिष्यादिवैयावच्च न० ॥
५ ग्लानसाधुवैयावच्च न० ॥
६ श्रमणोपासकवैयावच्च न० ॥
७ संघवैयावच्च न० ॥
८ कुलवैयावच्च न० ॥
९ गणवैयावच्च न० ॥
० वाचनातपसे नमः ॥

४१ पृच्छनातपसे नमः ॥
४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ॥
४४ धर्मकथातपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत्त न०॥
४६ रौद्रध्याननिवृत्त न० ॥
४७ धर्मध्यानचिंतन न० ॥
४८ शुक्लध्यानचिंतन न० ॥
४९ बाह्यउपसर्गतपसे नमः ॥
५० अभ्यंतरउपसर्गतपसे नमः ॥ इतिपंचाशत्तपभेद
इस तरह ५० नमस्कार करें

अथ पञ्च कल्याणकों दीप

॥ कार्तिक-कृष्णपक्ष-कातिक वदी ॥

५ सम्भवनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१५ अरिष्टनेमिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१५ पद्मप्रभजिनाय जन्मकल्याणाय नमः
१३ पद्मप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
३० महावीरजिनाय मोक्षगमनाय नमः

कार्तिक-शुक्लपक्ष-कातिक सुदी ॥

३ सुविधिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१२ अरनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

मार्गशीर्ष-कृष्ण-पक्ष-मिगसर वदी।

सुविधिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
सुविधिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१० महावीरजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
११ पद्मप्रभजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ मार्गशीर्ष-शुक्लपक्ष-मिगसर सुदी ॥

१० अरनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१० अरनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
११ अरनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
११ मल्लिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
११ मल्लिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
११ मल्लिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
११ अरिष्टनेमिजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१४ शम्भवनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१५ शम्भवनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ पौष-कृष्णपक्ष-पोष वदी ॥

१० पार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः
११ पार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१२ चन्द्रप्रभजिनाय जातजन्मने नमः
१३ चन्द्रप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१४ शीतलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ पोष-शुक्लपक्ष-पोष सुदी ॥

६ विमलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
९ शांतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
११ अजितनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१४ अभिनन्दनजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१५ धर्मनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-कृष्णपक्ष-माघ वदी ॥

६ पद्मप्रभजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१२ शीतलनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१२ शीतलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१३ ऋषभदेवजिनाय मोक्षगताय नमः
३० श्रेयांसनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-शुक्लपक्ष-माघ सुदी ॥

२ अभिनन्दनजिनाय जातजन्मने नमः
२ वासुपूज्यजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
३ विमलनाथजिनाय जातजन्मने नमः
३ धर्मनाथजिनाय जातजन्मने नमः
४ विमलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
८ अजितनाथजिनाय जातजन्मने नमः

९ अजितनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१२ अभिनन्दनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१३ धर्मनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-कृष्णपक्ष-फागण वदि ॥

६ सुपार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
७ सुपार्श्वनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः
७ चन्द्रप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
९ सुविधिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
११ ऋषभदेवजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१२ श्रेयांसनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१२ मुनिसुव्रतजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१३ श्रेयांसनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१४ वासुपूज्यजिनाय जातजन्मने नमः
३० वासुपूज्यजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण सुदी ॥

२ अरनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
४ मल्लिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ संभवनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१२ मल्लिनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः
१२ मुनिसुव्रतजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-कृष्णपक्ष-चैत्र वदी ॥

४ पार्श्वनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
४ पार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
५ चन्द्रप्रभजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ ऋषभदेवजिनाय जन्मजन्मने नमः
८ ऋषभस्वामिजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-शुक्लपक्ष-चैत्र सुदी ॥

३ कुंथुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
५ अजितनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
५ संभवनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
५ अनन्तनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
९ सुमतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
११ सुमतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१३ महावीरजिनाय जातजन्मने नमः
१५ पद्मप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ वैशाख-कृष्णपक्ष-वैशाख वदि ॥

१ कुंथुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
२ शीतलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
५ कुंथुनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
६ शीतलनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

१० नमिनाथजिनाय मोक्षगमाय नमः
१३ अनन्तनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१४ अनन्तनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१४ अनन्तनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१४ कुंथुनाथजिनाय जातजन्मने नमः

वैशाख-शुक्लपक्ष -वैशाखसुदी

४ अभिनन्दनजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
७ धर्मनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ अभिनन्दनजिनाय मोक्षगताय नमः
८ सुमतिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
६ सुमतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१० महावीरजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१२ विमलनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१३ अजितनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

॥ ज्येष्ठ-कृष्णपक्ष-जेठ वदी ॥

६ श्रेयांसनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ मुनिसुव्रतजिनाय जातजन्मने नमः
६ मुनिसुव्रतजिनाय मोक्षगताय नमः
१३ शांतिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१३ शांतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
१४ शांतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

अथ दीपमालाको गुणनो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनाथाय नमः
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसर्वज्ञाय नमः
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिपारंगताय नमः
ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकेवलज्ञानाय नमः

॥ इति दीपमालाको गुणनो ॥

॥ अथ २० विहरमानों के नाम ॥

१ श्री सीमंधर स्वामी २ श्री युगमंधर स्वामी
३ श्री बाहुस्वामी ४ श्री सुबाहु स्वामी
५ श्री सुजात स्वामी ६ श्री स्वयंप्रभ स्वामी
७ श्री ऋषभानन स्वामी ८ श्री अनंतवीर्य स्वामी
९ श्री सुरप्रभव स्वामी १० श्री विशालधर स्वामी
११ श्री वज्रधर स्वामी १२ श्री चंद्रानन स्वामी
१३ श्री चंद्रबाहु स्वामी १४ श्री भुजंग स्वामी
१५ श्री ईश्वर स्वामी १६ श्री नेमप्रभ स्वामी
१७ श्री वीरसेन स्वामी १८ श्री महाभद्र स्वामी
१९ श्री देवयश स्वामी २० श्री अजितवीर्य स्वामी

चार शाश्वते जिनवर के नाम ॥

१ श्री ऋषभानन स्वामी २ श्री चंद्रानन स्वामी
३ श्री वारिषेण स्वामी ४ श्रीवर्द्धमान स्वामी

मेरी भावना।

सने रागद्वेषकामादिक जीते, सब जग जान लिया।
ब जीवोंको मोक्षमार्गका, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
द्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
क्ति-भावसे प्रेरित हो यह, चित्त उसीमें लीन रहो॥१॥
षयोंकी आशा नहीं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं
ज-परके हित-साधनमें जो, निशदिन तत्पर रहते हैं॥
ार्थत्यागकी कठिन तपस्या, विना खेद जो करते हैं।
से ज्ञानी साधु जगतके, दुखसमूहको हरते हैं॥ २॥
हे सदा सत्संग उन्हींका, ध्यान उन्हींका नित्य रहे।
न्हीं जैसी चर्यामें यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
हीं सताऊँ किसी जीवको, झूठ कभी नहिं किया करूँ।
र-धन-वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ॥३॥
हंकारका भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
ेख दूसरोंकी बढ़तीको, कभी न ईर्षा-भाव धरूँ॥
हे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूँ।
ने जहाँतक इस जीवनमें, औरोंका उपकार करूँ॥४॥
ैत्रीभाव जगतमें मेरा, सब जीवोंसे नित्य रहे।
ीन-दुखी जीवोंपर मेरे, उरसे करुणास्रोत बहे॥
ुर्जन क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे।

साम्यभाव रक्खूँ मैं उनपर, ऐसी परिणति हो जावे ॥५॥
गुणीजनोंको देख हृदयमें, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँतक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहणका भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे ॥६॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आजावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्यायमार्गसे मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥७॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दुखमें कभी न घबरावे।
पर्वत-नदी-श्मशान-भयानक, अटवीसे नहीं भय खावे॥
रहे अडोल-अकंप निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्टवियोग-अनिष्टयोग में, सहनशीलता दिखलावे ॥८॥
सुखी रहें सब जीव [illegible]
बैर-पाप-अभिमान [illegible]

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहिं, कोई मुख से कहा करे॥
बनकर सब युग-वीर हृदय से, देशोन्नतिरत रहा करें।
वस्तुस्वरूप विचार खुशी से, सब दुख-संकट सहा करें॥११॥

॥ अथ बारह भावना ॥

॥ दोहा ॥

पहिली अनित्य भावनाः—

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार॥१॥

दूसरी अशरण भावनाः—

दल बल देई देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियां जीवको, कोई न राखन हार॥२॥

तीसरी संसार भावनाः—

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान।
... सुख संसारमें, सब जग देख्यो छान॥३॥

चौथी एकत्व भावनाः—

... अवतरे, मरे अकेला होय।
यों ... साथी सगा न कोय॥४॥

... अन्य भावनाः—

... न

जहां देह अप...
घर संपति पर प्र...

छठी अशुचि भावना;—

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह ।
भीतर या सम जगतमें, और नहीं घिन गेह ॥६॥

॥ सोरठा ॥

सातमी आश्रव भावना;—

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमैं सदा ।
कर्म चोर चहुँ ओर, सरवस लूटै सुधि नहीं ॥७॥

आठमी संवर भावना;—

सत गुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमै ।
तब कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुकै ॥८॥

॥ दोहा ॥

नवमी निर्जरा भावना:—

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर ।
या विधि बिन निकसै नहीं, पैठे पूरब चोर ॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥९॥

दशमी लोक संठाण भावना;—

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान ।
तामें जीव अनादितैं, भरमत हैं बिन ज्ञान ॥१०॥

इग्यारमी बोधिबीज-भावना;—

धन तन कंचन राजसुख, सबहि सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसारमें, एक यथारथ ज्ञान ॥११॥

॥ बारमी धर्म भावना ॥

जाचें सुरतरु देय सुख, चिंतत चिन्ता रैन ।
बिन जाचे बिन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन ॥१२॥

अथ आठ–थुई से देववांदने की विधि ॥

प्रथम खमासमण देकर चैत्यवंदन करना ।

सकलकुशलवल्ली-पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।
भवजलनिधिपोतः सर्वसम्पत्तिहेतुः,
स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥१॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहय-वरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं

तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअग
सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत
मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठ
संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अ
सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमा
सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं
डिक्कमामि, इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहिया
विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरि
क्कमणे ओसा उत्तिंग पणगदग मट्टीमक्कडासंताणा संक
णे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदि
चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया सं
घाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठा
णाओठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस
मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोही
करणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए
ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमु
च्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचा

लेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

एक लोगस्स का वा नवकार का काउस्सग्ग करे फिर प्रगट लोगस्स कहे—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभम-जिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं , जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं , सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं , धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ , विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं,समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा , आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा,सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७ ॥

इसके पीछे चैत्यवंदन करें—

जय जय नाभि नरिंद नंद सिद्धाचल मंडण ।
जय जय प्रथम जिणंद चन्द भव दुःख विहंडण ॥
जय जय साधु सुरिंद विंद वंदिय परमेसर ।
जय जय जगदानंद कंद श्रीरिषभ जिणेसर ॥
अमृत सम जिनधर्मनो ए दायक जग में जाण ।
तुझ पद पंकज प्रीति धर निशि दिन नमत कल्याण ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अईया सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(फिर एक नवकार का काउस्सग्ग कर पीछे पार करके एक जन 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कह कर पहली स्तुति को बोले— वीरं देवं नित्यं वन्दे ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं

नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण जरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहियर मुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

सव्वलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं॥८॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसरामि॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे पार के एक आदमी दूसरी स्तुति को बोले

जैनाः पादा युष्मान् पान्तु ॥८॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे य जंबूदीवे य। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअ भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवं-

ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

एक नवकार का काउस्सग्ग कर पार के एक भाव्ती बोले

स्तुति कहे—

जैनं वाक्यं भूयाद् भूत्यै ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दोय वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥ १ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग कर पार कर एक चौथी थुई कहें—

सिद्धा देवैः दद्यात् सौख्यं ॥ ४ ॥

नमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअग-राणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहिणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयव-रनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगई नामधेयं ठाणं संप-त्ताणं नमोजिणाणं जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि॥

पीछे " अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्ग वंदणव-त्तिआ का पाठ " समस्त [illegible] पाठ कह कर उपर चार स्तुति लिखी है वैसे फिर चार स्तुति कहें वह पहले जैसे पाठ आया । ऐसा

नमोक्कार करे । पीछे चार स्तुति कहकर पीछे ही बैठे
नमोत्थुणं का पाठ पुन करे ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं ति-त्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरिआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअग-राणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-णं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहय-वरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतम-क्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

जावंति चेइआइं उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

जावंत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

यहां जैसा व्रत किया हो वैसा स्मरण करे, व्रत नहीं किया हो तो इत्यादि स्मरण कर पश्चात् गाथामें कम नहीं कहे। पीछे—

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

यह दो गाथा मुक्तासुक्ति मुद्रा कर पीछे खड़े होना ।



। चौदह नियमोंकी गाथा ।

सचित्त दव्व विगई वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु ।
वाहण सयण विलेवण बंभदिसि न्हाण भत्तेसुं ॥ १ ॥

॥ गाथा का संक्षिप्त अर्थ ॥

१ 'सचित्त' (जिसमें जीव सत्ता हो, योनीसे उगे बीजादि) कच्चापानी, हरीशाक फल, पान, हरादातन, निमक आदि ।

२ 'द्रव्य' जितनी चीज मुंहमें जावे उतने द्रव्य-जल, मंजन, दातन, रोटी, दाल, चावल, कढी, साग, मिठाई, पूरी, घी, पापड़, पान, सुपारी, चूरन, मसाला, आदि ।

३ 'विगय'—१ जिनमें से मधु, मांस, मक्खन और मदिरा ये ४ महाविगय अभक्ष्य होने से श्रावक

को अवश्य त्याग करना चाहिये और शेष (५) घी, तेल, दूध, दही, गुड, खांड अथवा मीठा पक्वान।

४ 'उपानह'–जूता, बूंट, सिलीपर, मोजा आदि जो पांवमें पहना जाय।

५ 'तंबोल'–पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि।

६ 'वत्थ'--वस्त्र (आभूषण 'जेवर' की संख्या भी इसी नियममें धार लेनी चाहिये) पगडी, टोपी साफा, अंगरखा, चोगा, कुडता, धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, अंगोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपड़ा जो ओढने पहेरने में आवे।

७ 'कुसुमेसु'--फूल, फूलकी चीजें जैसे–शय्या, पंखा, सेहरा, तुर्रा, हार, गजरा, अत्तर जो चीज सूंघनेमें आवे।

८ 'वाहन'–सवारी-गाडी, फिटीन, सिगराम, हाथी, घोडा, रथ, पालखी, डोली, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, स्टीमर आदि याने 'चरता-फिरता, परता, और उडता'।

९ 'शयन'–कुरसी, टेबल, पट्टा, पलंग, गद्दी, तकिया बिछौना, तखत, मेज, सुखासन, आदि सोने या बैठने की चीजें।

१० 'विलेपन'–तेल, केशर, चंदन, तिलक, सुरमा, काजल, उबटन, हजामत, मुरडा, कंगा, हाथ रंगना, दवाई आदि जो चीज शरीरमें लगाई जावे।

११ 'बंभ' [ब्रह्मचर्य] स्त्री, पुरुष कुट दोनोंको त्याग से श्रावक परदारा त्याग और स्वदाराके भी संभोग रखें, उसका भी प्रमाण करें, इसी प्रकार स्त्रीयोंका भी माल या आदमी समझ लेना चाहिये।

१२ 'दिसि' [दि० दिशा] शरीरसे इतने कोश (लंबा, चौड़ा, ऊंचा, नीचा) जाना आना, चिट्ठी तार, इतने कोश भेजना मगा मंगाना।

१३ 'न्हाण' [स्नान] शरीरसे मोटा स्नान इतनी वेर करना (छोटास्नान) हाथ पैर इतनी वेर धोना।

१४ 'भत्तेसु'–असन (अन्न), पान (पानी), खादिम (मेवा—दूध), स्वादिम (पान-सोपारी आदि) ये चारों आहारोंमेंसे, चारोंमें जितनी चीजें खायें सब का वजन करना।

इस [illegible] [illegible] जाते हैं

६ काय.

१ पृथ्वीकाय–मिट्टी निमक आदि (खानेमें वा उपभोगमें आवे) उसका वर्जन।

२ अप्‌काय-- जो पानी पीनेमें या दूसरे उपयोगमें आवे उसका वर्जन. पानीकी जात कूवा, बावडी, तलाव, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोई भी काममें लाना तथा जीवानीका यत्न करना अत्यावश्यकीय है।

३ तेउकाय--चूल्हा, अंगीठा, भट्टी, चिराक आदि का प्रमाण।

४ वायुकाय–हिंडोले पंखे [अपने हाथसे या हुकमसे] जितने चलते होवें उनकी संख्याका प्रमाण. 'रूमालसे या कागजसे हवा लेनी यह भी पंखेमें गिनी जाती है उसकी जयणा'।

५ वनस्पतिकाय-- हराशाक तथा फलादि इतनी जातके खाने घर संबंधी मंगाने जिसकी गिनती तथा वजन।

६ त्रसकाय-- त्रसजीव अपराधी, विनापराधीका विचार करना। यह ६ कायका परिमाण कर लेना।

६ कर्म.

१ असी (शस्त्र और औजार) तलवार, बंदूक,

तमंचा, बरछी, भाला आदि छुरी, कैंची, शस्त्र और सरोता चिमटी आदि औंजार।

२ मसी (लिखने पढ़नेका) कागज, कलम, दावात, पेन्सील, पत्र, पुस्तक, छापा, टाइप आदि।

३ कृषी (कर्मा) खेती वगीचे आदिका परिमाण यह रोजके नियम पालनेकी विधि संक्षेपसे लिखी है विस्तार जितना अधिक करिये याने नाम खोल खोल कर रखिये उतनाही ज्यादा फायदा है.

उपरोक्त चौदह १४ नियम प्रतिदिन चितारणे पालने से जितना पाप घटकर संवर जितना रह जाता है।

उक्त चौदह नियमोंसेंसे अपने चाहिये उतनी व स्तु रखकर श्रीगुरुके मुखारविन्दसे पच्चखाण कारले। यदि कभी गुरुमहाराजका योग नहीं हो तो निम्नलि- खितानुसार पच्चखाण करलें।

॥ पच्चखाणका पाठ ॥

॥ नवकारसी ॥

उग्गए सुरे नमुक्कारसहिय मुट्ठिसहियं पच्चखाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न- त्थणाभोगेणं सहसागारेणं मन्नत्थणाभोगेणं सव्वसमाहि-

वत्तियागारेणं--विगइओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पच्चक्खाइ अनत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ।

पच्चक्खाण पारनेका पाठ.

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाण किया चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खाणं फासिअं पालिअं सोहिअं । तिरिअं किट्टिअं आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

पीछे एक नवकार मंत्र पढ़े ।

१ विदल, जिस अन्नकी दो दाल (छिदल) हो जाय, और जिसमेंसे तेल नहीं निकले, उस अन्नको कच्चे दूध, दहीं, छाछके साथ अर्थात् मिलायके खाना बडा दोष कहा है. दहीं वगैरह खुब गरम करके खानेमें विदलका दोष नहीं है ।

२ आचार सब तरहका (संधान) तीन रोज बाद अभक्ष्य होजाता है ।

३ कंदमूल ३२ अनन्तकाय. यह सबसें ज्यादे दोषकी चीज होनेसें बिलकुल छोडने लायक है।

४ रजस्वला औरतों को ७४ प्रहर गृहकार्य न करना चाहिये।

५ विवाह, शादीमें वेश्या, आतशबाजी आदि कुरियाजका त्याग करना चाहिये।

६ खराब गालियोंको गानेका कितने ही लोगोंमें बहुत प्रचार है उसका भी त्याग करना चाहिये।

७ बाल लग्न और वृद्ध विवाह या कन्याविक्रय आदि कुरीतियोंको मिटा देना चाहिये याने उपरोक्त प्रवृत्तिसे बहुत हानि होती है।

८ अपने बच्चे और कन्याओंको नीति और धर्मशास्त्रकी शिक्षाके लिये पाठशाला आदिका प्रबन्ध करना चाहिये।

प्यारे जैनी भाइयों इस लघु किताब द्वारा नित्य देवगुरु वंदन या १४ नियम चितारके अवश्य लाभ लेना चाहिये। इति शम्.

अथ श्रावकों के प्रत्याख्यान के ४९ भांगा।

(आंक नंबर ९)

आंक एक ११ का, एक करण और एक जोग से भांगा उठे नव।

वत्तियागारेणं--विगइओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे।

पच्चक्खाण पारनेका पाठ.

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खाण किया चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खाणं फासिअं पालिअं सोहिअं। तिरिअं किट्टिअं आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

पीछे एक नवकार मंत्र पढ़े।

१ विदल, जिस अन्नकी दो दाल (छिदल) हो जाय और जिसमेंसे तेल नहीं निकले, उस अन्नको कचे दूध दही, छाछके साथ अर्थात मिलाकर खाना बड़ा दोष कहा है. दही वगैरह खूब गरम करके खानेमें विदलका दोष नहीं है।

२ आचार सब तरहका (संधान) तीन रोज बाद अभक्ष्य होजाता है।

षत्तियागारेणं--विगइओ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिएणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पच्चक्खाइ अनत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ।

पच्चक्खाण पारनेका पाठ.

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पोरिसियं मुट्ठिसहियं पचक्खाण किया चउव्विहंपि आहारं पचक्खाणं फासिअं पालिअं सोहिअं । तिरिअं किट्टिअं आराहिअं जं च न आराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

पीछे एक नवकार मंत्र पढ़े ।

१ विदल, जिस अन्नकी दो दाल (छिदल) हो जाय, और जिसमेंसे तेल नहीं निकले, उस अन्नको कचे दूध, दहीं, छाशके साथ अर्थात् मिलायके खाना बड़ा दोष कहा है. दहीं वगैरह खुब गरम करके खानेमें विदलका दोष नहीं है ।

२ आचार सब तरहका (संधान) तीन रोज बाद अभक्ष्य होजाता है ।

३ कंदमूल ३२ अनन्तकाय. यह सबसें ज्यादे दोषकी चीज होनेसें बिलकुल छोडने लायक है।

४ रजस्वला औरतों को २४ प्रहर गृहकार्य न करना चाहिये।

५ विवाह, सादीमें वेश्या, आतशबाजी आदि कुरिवाजका त्याग करना चाहिये।

६ खराब गालियोंको गानेका कितने ही लोगोंमें बहुत प्रचार है उसका भी त्याग करना चाहिये।

७ बाल लग्न और वृद्ध विवाह वा कन्याविक्रय आदि कुरीतियोंको मिटा देना चाहिये याने उपरोक्त प्रवृत्तिसे बहुत हानि होती है।

८ अपने बचे और कन्याओंको नीति और धर्मशास्त्रकी शिक्षाके लिये पाठशाला आदिका प्रबन्ध करना चाहिये।

प्यारे जैनी भाइयों इस लघु किताब द्वारा नित्य देवगुरु वंदन वा १४ नियम विचारके अवश्य लाभ लेना चाहिये। इति शम्.

अथ श्रावकोंके प्रत्याख्यान के ४९ भांगा।

(आंक नंबर ६)

आंक एक ११ का, एक करण और एक जोग से भांगा कहे नव।

१ करुं नहीं मनसे
२ करुं नहीं वचन से
३ करुं नहीं काया से
४ कराउं नहीं मन से
५ कराउं नहीं वचन से
६ कराउं नहीं काया से
७ अनुमोदूं नहीं मन से
८ अनुमोदूं नहीं वचन से
९ अनुमोदूं नहीं काया से

अंक एक १२ का, एक करण और दोय जोग से भांगा ऊठे नव।

१ करुं नहीं मन से वचन से
२ करुं नहीं मन से काया से
३ करुं नहीं वचन से काया से
४ कराउं नहीं मन से वचन से
५ कराउं नहीं मन से काया से
६ कराउं नहीं वचन से काया से
७ अनुमोदूं नहीं मन से वचन से
८ अनुमोदूं नहीं मन से काया से
९ अनुमोदूं नहीं वचन से काया से

अंक एक १३ का, एक करण और तीन जोग से

भांगा उठे तीन।

१ करूं नहीं मनसे वचनसे कायासे
२ कराउं नहीं मनसे वचनसे कायासे
३ अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे कायासे

अंक एक २१ का, दो करण और एक जोग से

भांगा उठे नव।

१ करूं नहीं कराउं नहीं मनसे
२ करूं नहीं कराउं नहीं वचनसे
३ करूं नहीं कराउं नहीं कायासे
४ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे
५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वचनसे
६ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायासे
७ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे
८ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं वचनसे
९ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं कायासे

अंक एक २२ का, दो करण और दो जोग से

भांगा उठे नव।

१ करूं नहीं कराउं नहीं मनसे वचनसे
२ करूं नहीं कराउं नहीं मनसे कायासे
३ करूं नहीं कराउं नहीं वचनसे कायासे
४ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे

५ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मन से काया से
६ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वचन से काया से
७ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मन से वचन से
८ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मन से कायासे
९ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं वचन से कायासे

अंक एक २३ का, दो करण और तीन जोग से भांगा उठे तीन।

१ करूं नहीं कराउं नहीं मन से वचन से काया से
२ करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे कायासे
३ कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे कायासे

अंक एक ३१ का. तीन करण और एक जोग से भांगा उठे तीन।

१ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे
२ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं वचनसे
३ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं कायासे

अंक एक ३२ का, तीन करण दो जोगसे भांगा उठे तीन।

१ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे
२ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे कायासे
३ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं वचनसे कायासे

अंक एक ३३ का, तीन करण और तीन जोग से

भांगा जुदा एक।

१ करूं नहीं कराउं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसे वचनसे कायासे ॥ १॥

जूमले ४९, ओगणपचास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशे जिनराय।
सद्गुरु स्वामिनि सरस्वति, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥१॥
त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर।
शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥२॥
एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करि परणाम।
भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥
मुक्तिमार्ग आराधिये, कहो किण परे अरिहंत।
सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्रीभगवंत ॥४॥
अतिचार आलोइये, व्रत धरिये गुरु साख।
जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥५॥
विधिशुं वली वोसिराविये, पापस्थान अढार।
चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥६॥
शुभकरणी अनुमोदिये, भाव भलो मन आण।
अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥

शुभगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार।
चित्त आणीने आदरो, जिम पामो भवपार ॥८॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार। एह तणा इह भव परभवना, आलोइये अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी,ज्ञान भणो गुणखाणी। वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्राणी ॥ ज्ञा०॥ ए आंकणी॥ गुरु ओलवीये नहीं गुरु विनये, काले धरी बहुमान। सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणिये वही उपधान रे ॥२॥ प्राणी ॥ ज्ञा०॥ ज्ञानोपकरण पाटी पोथी,ठवणी नोकरवाली,तेह तणी कीधी आशातना,ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह । आ भव परभव वलिय भवोभव, मिच्छामुक्कड तेह रे ॥४॥ प्राणी, समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ए आंकणी ॥ जिनवचने शंका नवि कीजे,नवि परमत अभिलाष । साधु तणी निंदा परिहरजो फलसंदेह म राख रे ॥५॥ प्राणी ॥ स० ॥ मूढपणुं छंडो परशंसा, गुणवंतने आदरिये । साहामीने धर्म करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीये रे ॥६॥ प्राणी ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासाद तणो जे , अवर्णवाद मन

लेदपो । द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसंता उवेख्यो रे ॥७॥ प्राणी ॥ सा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खंड्युं जेह । आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ८ ॥ प्राणी, चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ ए आंकणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचनमाय । साधुतणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥९॥ प्राणी ॥चा०॥श्रावकने धर्मे सामायिक,पोसहमां मन वाली । जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे॥१०॥ प्राणी ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र डोल्युं जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ११ ॥ प्रा०॥ चा०॥ बारे भेदे तप नवि कीधुं,छते योगे निज शक्ते । धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविए भगते रे ॥ ॥१२॥ प्राणी ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारे एणि परे, विविध विराध्या जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥१३ ॥ प्राणी ॥ चा०॥ वली य विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइये । वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइये रे ॥ १४ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ पामी सुगुरु पसाय ॥ ए देशी ॥

पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनस्पति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए।करि करसण आरंभ, क्षेत्र जे खेडियां। कूवा तलाव खणावीयां ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक,

टोकां भोयरां। मेडी माल चणावीयां ए। लींपण गुम्प
काज, इणी परे परपरे। पृथिवी काय विराधिया ए ॥२
धोयण नाहण पाणी, झीलण अपकाय । छांटी धोती
करी दुहव्या ए। भाठीगर कुंभार, लोह सोवन गरा
भाडभुंजा लिहालागरा ए॥ ३ ॥ तापण शेकण काज
वस्त्र निखारण । रंगण रांधण रसवती ए। इणी परे
कर्मादान, परे परे केलवी। तेउ वाउ विराधिया
॥ ४ ॥ वाडी वन आराम वावि वनस्पति। पान फूल
फल चूंटीयां ए। पोंहक पापडी शाक, शेक्यां सुक
व्यां। छुंदां छेद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड
पाणी घालीने। घणा तिलादिक पीलीया ए। घाली
कोल्हु मांहि, पीली शेलडी। कंद मूल फल वेचीयां ए।
॥६॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणावीया। हणतां जे
अनुमोदीया ए॥ आभव परभव जेह, वलिय भवोभव
। ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥ कृमी सरमीया
कीडा, गाडर गंडोला। इयल पूरा अलसीयां ए
वाला जलो चूडेल, विचलित रसतणा॥ वली अथा
णां प्रमुखनां ए ॥८॥ एम बेइन्द्रिय जीव, जे मे दुह
व्या ॥ ते मुझ० ॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥
चांचड कीडी कुंथुआ ए ॥९॥ गद्दहीयां घीमेल, कान
खजूरडा। गींगोडा धनेडियां ए। एम तेइंद्रिय जीव,

जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ विमारियां जी, भांग्यां पचक्खाण। कपटहेतु किरिया करीजी, आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥मि०॥ त्रण ढाल शुद्धे जी, आलोया अतिचार । शिवगति आरा तणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

पंच महाव्रत आदरो । साहेलडी रे अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आद सा० । पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत ली संभारीये , सा० । हियडे धरिय विचार तो शिवगति आराधना तणो , सा० । ए बीज अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सव खमावियें , सा० योनि चोराशी लाख तो । मन शुद्धे करो खा मणां , सा० । कोइशुं रोष न राख तो ॥ ३ सर्व मित्र करी चिंतवो , सा० । कोई न जाणो श तो । राग द्वेष एम परिहारो , सा० । कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ खमावियें सा० । जे उपनी अप्रीति तो । सज्जन कुटुंब करी खामणां , सा० । ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें , सा० । एहज धर्मनो सार तो । शिवगति आराधन तणो,

मकार। तो पातक गाली, पामे सुर अव
नव पद सरिखो,मंत्र न को संसार । इह भव
सुख संपत्ति दातार॥५॥ जुओ भीलने भील
राणी थाय । नवपद महिमाथी, राजसिंह
राणी रत्नवतीबेहु, पाम्यां छे सुरभोग । ए
लेशे, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए
फल्यो ततकाल । फणिधर फीटीने, प्रगट थइ पु
शिवकुमरे योगी, सोवन पुरुसो कीध । इम
काज घणानां सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधि
जिणेसर भाख्यो । आराधन केरो, विधि जेणे
राख्यो ॥ तेणे पाप पखाली, भव भय दुरे
जिन विनय करतां, सुमति अमृत रस चाख

॥ ढाल आठमी ॥

॥ नमो भवि भावशुं ए ॥ ए देशी ॥
सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात
नो । अवनीतले तुमे अवतर्या ए, करवा अम
॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥
राध कर्या घणा ए, केहेतां न लहुं पार नो
शरणे आव्या भणी ए, जो तारे तो तार ॥
आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज
आव्याने उवेखशो ए, तो किम रहेशे लाज

॥ पंचमी का छोटा स्तवन ॥

पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी । निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पीछे किरिया । नहीं कोई ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥१॥ नंदीसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं । ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति श्रुति अवधि ने मनःपर्यव । केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २ ॥ मति अठावीश श्रुत चउदे वीश । अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदे मनःपर्यव दाख्युं । केवल एक प्रकार रे ॥ पं०॥ ३॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेहनुं तेज आकाश रे॥ केवल ज्ञान समो नहीं कोइ । लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ॥ ४॥ पारसनाथ प्रसाद करिने । म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुन्दर कहे हूं पण पामुं । ज्ञान नो पंचमो भेद रे ॥पं० ॥५॥

॥ ग्यारसका स्तवन ॥

समवसरण बैठा भगवंत । धरम प्रकाशे श्री अरिहंत ॥ बारे परषदा बैठी जुदी । मिगसिर सुदि इग्यारस रुडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण । जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अरदीक्षा लीधी रुडी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनुं केवल ज्ञान । पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनो महिमा मोटो ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इणहीज । पांच कल्याणक

॥ ऋषभजिनेश्वरका स्तवन ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब । शीतलही अ
धारोरे (जगतातारो । मुझ तारो जी कृपानिधि
मी) जग जशवाद प्रकट छे ताहरो । अविचल सु
दातारोरे ॥ज० मु०॥१॥ निजगुण भोक्ता परगुण
आतम शक्ति जगायारे । ज० । अविनाशी अवि
अधिकारी, शिववासी जिनरायारे ॥ ज० मु० ॥
इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुँ तुज चरणे आ
। ज० । तुम रीझावण हेतु तमखिया, नाटक
मचाग्योरे ॥ज० मु०॥३॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री,
साधारण पामी रे । ज० । वरस संख्याता वलि वि
लेंद्री, पेप धर्यो दुःख पामीरे ॥ ज० मु० ॥४॥ सुर
तिरि वलि नरक मर्या गति, पंचेंद्रियपणो धार्योरे । ज
चोराशी देहक मांहि भमतो, अवनो हुँ विण हा
॥ ज० मु० ॥ ५ ॥ भवनाटक नितप्रति कर नवनव,
मुझ आगल नाच्योरे । ज० । समरथ साहिब सुर
मरियो, हुँ निरख्यो तुमने जाच्योरे ॥ ज० मु०॥६
जो मुझ नाटक देखी रीझया, तो मुझ वंछित दीजे
॥ ज० ॥ जो नवि रीजा तो मुझ आसा, वलि ना
नवि कीजेरे ॥ ज० मु० ॥ ७ ॥ लालच धरि हुँ सेव
धार्य, हुं मुखथी नथि कापेरे ॥ ज० ॥ दाता सेती सू

मनेरो, वहिलो उत्तर आपेरे ॥ ज० मु० ॥ ८ ॥ तुम सरिखा साहिब पिण म्हारे, जो नवि कारज सारेरे ॥ ज० ॥ सो मुझ करम तणी गति अवली, दोष न कोई तुमारो रे ॥ ज० मु० ॥९॥ दीनदयाल दयाकरी दीजे, शुद्ध समकित सहिनाणीरे ॥ ज० ॥ सुगुण से-वकना वांछित पूरो, तेहीज गुण मणिखाणी रे ॥ ज० मु० ॥ १० ॥ वर्ष अढारे गुणचालीसे, जेष्टसुदी सोम-वारो रे ॥ ज० ॥ ज्ञानचंद्र प्रतिपददिन भेट्या, बीका-नेर मझारो रे ॥ ज० मु० ॥ ११ ॥

॥ श्री सीमंधरस्वामिका स्तवन ॥

सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, स्वामी सीमंधरा तुम्ह भगते भणुं । भेटवा पायकमल भाव हियडे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥१॥ तुम्ह हुं इह अरिहंत शुं राखिये, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोडि करि भाखिये । अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एह मन आगलि किम कहुं त्रिभुवन धणी ॥२॥ जीव आरंभ करे नयनथी परिगडे, रीस चटकां चडे लोभ वगरी नडे । नयण रस वयण रस काम रस रमीयो, तेम अरिहंत तुं हियडे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने रात हियडे अनेरो धरुं, मूढ मन रीझाया वलिय

माशा करूं । तुंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरुं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मननणी वात अरिहंत किम कहुं । करि दया करि मया देव करुणापरा, दुःखहरि सुख करि स्वामी सीमंधरा ॥५॥ जाणा संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोते घणुं। एक अरिहंत तुं देव बीजो नहीं, एह आधार जग जाणजो अम्ह सही ॥६॥ घणा कणय माय पिय पुत्त परियण सह, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहु। जयो जयो जगगुरु जीव जीवनवरा, तुम्ह समो वड नहीं अवसर वाल्हेसरा ॥७॥ अमियसम वाणि जाणुं सदा सांभलुं, बार वर परपदा मांहि आवी मिलुं । विन जाणुं सदा सामि पायउ लगुं, किम करूं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥८॥ भोलिडा भगति तुं चित हारे किस्ये,पुण्य संयोग प्रभु दृष्टि गोचर हुस्ये । जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे, दूरथी टूकडा जेम हियडे वसे ॥९॥ भलभलो एणि संसार सहु ए अच्छे, स्वामी सीमंधरा तें सह तुम पछे । ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखिये नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुम्ह जी कहे । तुम्ह पाय भेटवा अति घणो टलवलुं, पंख

जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥११॥ मेरुगिरि लेखणी श्याम कागल करुं,क्षीरसागर समां दूध खडिया भरूं। तुम्ह मिलवातणा स्वामी संदेशडा,इंद्र पण लखिय न शके चले एतवा ॥१२॥ आपणे रंगभरि वात मुख जेटली, ऊपजे स्वामी न कहाय मुख तेटली। सुणो सीमंधरा राज राजेसरा, लाड ने कोड प्रभु पूरसवि माहरा॥१३॥ पुव्वभवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरिये पणि संसार नित तेहने। मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तुं चित्त मारे गमे ॥१४॥ एम अरिहंतनुं ध्यान हियडे धर्यु, मापडुं पाप हिय रहिय करशे किस्युं। ठाम जिम गरुड पर पंखि आवे यही, तत्खिण सर्पनी जाति न शके रही ॥१५॥ पाप में काल सावद्य सहु परिहरी,स्वामी सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी। शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख भंडार संसार भय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही। एवड़ी माहरी भगति जाणी करी, आपजो पापजो सार केवल सही ॥१७॥ कलश ॥ एम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारण, दुरित वारण सुख करो। उपज्झाय वर श्री भक्ति लाभे, थुण्यो श्री सीमंधरो। जय जयो जगगुरु जीव जीवन धणी स्वामी मया घणी। करजोडी

वलि वलि धीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हूं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण दीख्या धर्मनो सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिक्कमण संवच्छरी करिये अग्ग उपवास ॥१॥ चउवीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे, भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ वलि साहमीवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे केई तपसी शिलधार । अट्ठाई पजूसण इम सेवत आणंद, सुपसैयां सानिध कहे जिनलाभ सूरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा॥

जलभरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानुं बले काउस्सग रह्या, विचरया देश विदेश ।
खडां खडां केवल लह्या, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान ।

वलि वलि वीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हे ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण शिरमा पर्वनो हीर । आसाढ चौमासे हुंतो दिन पचास, पडिक्कमण संवच्छरी करिये अठम उपवास ॥१॥ चउवीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरमां ठाम ठाम, इम पर्व पजूसण महुमें महिमावंत ॥२॥ कुलक पूजावी वर वाजनाये वंधाय, श्रीकल्पसूत्र शिरं सुहणां पाव पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप [illegible] इम अविचल लाली पर्व पजूसण [illegible] ॥३॥ [illegible] ॥४॥

॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥१॥

[illegible] ॥२॥

[illegible]

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजायले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोष ।
हेम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वर तूल ।
मधुर धुनी सुरनर सुणे, तिण गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण सही, सिद्ध शिला पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्वनां, तिम नव अंग जिनंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे सह वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे । जाण पणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख । जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ सात लाख पृथि-

वलि वलि वीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हुं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजुसण सम्यग धर्मनो सीर । आषाढ चौमासे हुंता दिन पचास, पडिक्कमण संवत्सरी करिये प्रण उपवास ॥१॥ चउवीसे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भावे भाव, करिये पुण्य अपार । वलि धम्म प्रसादे जिनवर नाम कर्मेन, इम पर्व पजुसण साधुओं सहियावेन ॥२॥ पुस्तक पूजीजे सब भावनाशे वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिनो मुखनो वाग वखाण । दिनदिन पर भावना पुर भक्ति करीजे, इम अठाई दीहा पर्व पजुसण कीज ॥३॥ वलि सार्धम्मिकवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे कोई करतो जिनआण । अठ्ठाइ पजुसण इम दीपन आ करत सुणीजो सारि । कहे जिनसागर सूरि ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा का दूहा ॥

जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानु बळे काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजाबले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करतां अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या राग ने रोष ।
हिम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर दई देशना, कंठ विवर वर्तुल ।
मधुर ध्वनी सुरनर सुणें, तिण गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण भवि, सिर शिखा पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्त्वनां, तिण नव अंग जिणंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे । जाणपणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख । जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ सात लाख पृथि-

वलि वलि धीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हूं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण भाख्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिक्रमण संवच्छरी करिये अठम उपवास ॥१॥ चउवीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे, भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजाथी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ वलि साहमीवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे केई तपसी शिलधार । घरडदीह पजूसण इम सेवन आणंद, सुपदेवी सानिध कहे जिनलाभ सूरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा॥

जलें भरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानु बले काउस्सग रह्या, विचरया देश विदेश ।
खडा खडां केवल लह्या, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजायले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागनें रोष ।
हेम दहे वन खंडनें, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वर तूल ।
मधुर धुनी सुरनर सुणें, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण सही, सिद्ध शिला पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्वनां, तिम नव अंग जिनंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे । जाण पणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ मिच्छामि दुकडं, अरिहंतनी साख । जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥ २॥ सात लाख पृथि-

वलि वलि बीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हूं ध्याउं गाउं जिनवर वीर,जिनपर्व पजूसण दीरव्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिक्कमण संवच्छरी करिये अगम उपवास ॥१॥ चउवीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे, भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजाथी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भविषण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ वलि साहमीवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे केई तपसी जिलभार । अट्ठाई पजूसण इम सेवन आणंद, सुरदेवी सानिध कहे जिनलाभ सूरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा॥

जलभर्या संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानुं बले काउस्सग रह्या, विचरया देश विदेश ।
खडां खडां केवल लह्या, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजाबले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करतां अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोष ।
हेम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वर तूल ।
मधुर धुनी सुरनर सुणें, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण भवि, सिर शिखा पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्वनां, तिण नव अंग जिणंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे । जाणपणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख । जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥ २॥ सात लाख पृथि-

वलि वलि वीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हूं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण सेव्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंतां दिन पचास, पडिक्कमण संवच्छरी करिये अट्ठम उपवास ॥१॥ चउवीसे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भावे, भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भविजण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ वलि साहम्मीवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे देई नवकारसी निरधार । अट्ठाई पजूसण इम सेवत आणंद, सुरदेवी सानिध करे जिनलाभ सुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा॥

जलभरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानु बले काउस्सग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खडां खडां केवल लह्या, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनन्त।
भुजाबले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम।
नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोष।
हेम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर दई देशना, कंठ विवर वर तूल।
मधुर धुनी सुरनर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत।
वसिया तिण कारण नरां, सिद्ध शिरशा पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्त्वनां, तिम नव अंग जिनंद।
पूजो बहुविध भावथी, कहे शह वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे। जाण पणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥१॥ ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख। जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥२॥ सात लाख पृथि-

वलि वलि वीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हूं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण दीख्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिक्कमण संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥१॥ चउवीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे, भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजाथी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ वलि साहमीवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे केई तपसी शिलधार । अठ्ठदीह पजूसण इम सेवत आणंद, सुपसेवी मानिध कहे जिनलाभ सूरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा॥

जलभर्या संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खडां खडां केवल लह्यु, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गर्व दोष धंतथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजाबले भवजल तर्या, पूजो खंघ महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोष ।
हेम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वर तूल ।
मधुर धुनी सुरनर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण मही, सिद्ध शिखा पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्त्वनां, तिम नव अंग जिनंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे सहु वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे । जाण
पणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ
मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख । जे में जीव विरा
धिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ सात लाख पृथि-

वलि वलि वीनवुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

वलि वलि हूं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण राख्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिक्कमणा संवच्छरी करिये प्रगट उपवास ॥१॥ चउवीसे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भावे, भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजूसण महुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्तक पूजीने नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना पुण्य अगार उमेद, इम अविरल मार्गी पर्व पजूसण तेह ॥३॥ वलि स्वामीवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे नरनी सिणगार । आनंदे पजूसण इम सेवन आणंद, सुणजो मानिक कहे जिनशासन सुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलभरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
ऋषभ चरण अंगूठडे, दायक भवजल अंत ॥१॥
जानु बले काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ।
खडां खडां केवल लह्या, पूजो जानु नरेश ॥२॥
लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजाबले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने रोष ।
हिम दहे वन खंडने, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वर मूल ।
मधुर धुनी सुरनर सुणें, तिण गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवंत ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
वसिया तिण कारण भवी, सिर शिखा पूजंत ॥९॥
उपदेशक नव तत्त्वनां, तिण नव अंग जिनंद ।
पूजो बहुविध भावथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे । जाण पणुं जग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख । जे में जीव विराधिया, चउराशी लाख ॥ ते० ॥ २॥ सात लाख पृथि-

थीनगा, साते अपूकाय। सातलाख तेउकायना
वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति,
साधारण। बी ति चउरिंद्रिय जीवना,बे बे लाख
॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चा
शी। चउदह लाख मनुष्यना,ए लाख चोराशी
॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेवियां, जे पाप अ
त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार
॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद
अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ प
मेल्यो कारिमो,कीधो क्रोध विशेष। मान माया
में कीधा. वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कल
जीव दुहव्या, दीधां कूडां कलंक। निंदा कीधी प
रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी
नरे, कीधो थापणमोसो। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो,
आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भ
कीधा, जीव नानाविध घात। चीडीमारभवे चरी
मार्या दिनने रात॥ ते० ॥ ११ ॥ काजी मुल्लाने
पढी मंत्र कठोर। जीव अनेक झब्भे कीधा, कीधां
अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ माछीने भवे मांछलां,
जलवास। धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या
॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे में कीधा, आ

:। पंदीयान मराविया, कोरड़ा हृदी दंड ॥ ते०
॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख ।
भेदन वेदना, ताडन अतितिरस ॥ ते० ॥१५॥
ानेभवे में किया, नीभाह पचाव्या । तेली भवे
पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
भवे हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट । सूड
र घणां किया, दीधां बलद चपेट ॥ ते० ॥१७॥
ने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल
तीं, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधो·
ाने भवे, भरन्या अधिका भार । पोठी पूठे कीड़ा
, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १६ ॥ छीपाने भवे
पा, कीधां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीधा घणा,
ाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझ·
ारयां माणसवृंद । मदिरा मांस माखण भख्यां,
ां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी
ो, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा,
पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीधा
दरमें दव दीधा । सम खाधा वीतरागना, कूडा
त कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर लीया,
ो हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे, में जू लीख
॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

थीनगा, साते अपुकाय। सातलाख तेउकायना, साते वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चौदह साधारण। बी ति चउरिंद्रिय जीवना, बेबे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी। चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ते० ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेविया, जे पाप अढार। त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद। दोष अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष। मान माया लोभ में कीया, वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधां कूडां कलंक। निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापणमोसो। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में कीधा, जीव नानाविध घात। चीडीमारभवे चरकलां, मार्या दिनने रात ॥ ते० ॥११॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर। जीव अनेकझब्भे कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते० ॥१२॥ माछीने भवे मांछलां, झाल्यां जलवास। धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे मैं कीया, आकरा

। घंटीवान मराविया, कोरडा छडी दंट ॥ ते०
॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख ।
भेदन वेदना, ताडन अतितिख ॥ ते० ॥१५॥
नेभवे मैं किया, मोभाए पचाव्या । तेलि भवे
गोलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
भवे हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट । सुद
घणां किया, दीधां बलद चपेट ॥ ते० ॥१७॥
। भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल
हां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधो-
ने भवे, भरया अधिका भार । पोठी पूठे कीडा
दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छींपाने भवे
ा, कीधां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीधा घणा,
द अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझ-
रयां माणसवृंद । मदिरा मांस माखण भख्यां,
मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी
, पाणी उलेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा,
ापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीधा
दरमें दव दीधा । सम खाधा वीतरागना, कूडा
। कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर लीधा,
हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे, में जू लीख
॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

घीनणा, साते अपकाय। सातलाख तेउकायना, स
वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चौ
साधारण । बी ति चउरिंद्रिय जीवना, बे बे लाख विच
॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रक
शी । चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ते
॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेविगां, जे पाप अढार
त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते
॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद । दो
अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्र
मेल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष । मान माया लो
में कीया, वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह की
जीव दूहव्या, दीधां कूडां कलंक । निंदा कीधी पारकी
रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चो
तरे, कीधो थापणमोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो
आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में
कीया, जीव नानाविध घात । चीडीमारभवे चरकलां
मारया दिनने रात ॥ ते० ॥११॥ काजी मुल्लाने भवे,
पढी मंत्र कठोर । जीव अनेकझभे कीया, कीधां पाप
अघोर ॥ ते० ॥१२॥ माछीने भवे मांछलां, जाल्यां
जलवास । धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास
॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे में कीया, आकरा

करदंड। पंखीयान मरावियां, कोरडा हदी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख। छेदन भेदन वेदना, ताडन अतितिव्र ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंभारनेभवे मैं किया, नीभाह पचाव्या। तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट। सूड निदान घणां किया, दीधां बलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष। मूल पत्र फल फूलनां, लाग्यां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधो-वाईयाने भवे, भरया अधिका भार। पोठी पूठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतरया, कीधां रंगण पास। अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जुझ-ता, मारयां माणसवृंद। मदिरा मांस माखण भख्यां, खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्यां। आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया वली, घरमें दव दीधा। सम खाधा वीतरागना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर लीया, गिरोली हत्यारी। मूढ गमार तणे भवे, में जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

शीनगा, साते अपकाय। सातलाख तेउकायना, साते वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चौदह साधारण। बी ति चउरिंद्रिय जीवना,बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी। चउदह लाख मनुष्यना,ए लाख चोराशी ॥ते० ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेवियां, जे पाप अढार। त्रिविध त्रिविध करी परिहरूं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद। दोष अदत्तादाननना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेष। मान माया लोभ में कीया, वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधां कूडां कलंक। निंदा कीधी पारकी, रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापणमोसो। कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में कीया, जीव नानाविध घात। चीडीमारभवे चरकलां, मार्या दिनने रात॥ ते० ॥११॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर। जीव अनेकझभे कीया, कीधां पाप अघोर ॥ ते० ॥१२॥ माछीने भवे मांछलां, झाल्यां जलवास। धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे में कीया, आकरा

करदंड। पंचीयान मराविया, कोरडा हर्दो दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख । छेदन भेदन वेदना, ताडन अतितिख ॥ ते० ॥१५॥ कुंभारनेभवे में किया, नीभाह पचाव्या । तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट । सूड निदान घणां किया, दीधां बलद चपेट ॥ ते० ॥१७॥ मालीने भवे रोपिया, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल फूलनां, लाग्यां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधो-वाईयाने भवे, भरथा अधिका भार । पोठी पूठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतरया, कीधां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझंता, मारयां माणसवृंद । मदिरा मांस माखण भख्यां, खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाणा खणावी धातुनी, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया वली, धरमें दव दीधा । सम खाधा वीतरागना, कूडा कोसज कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर लीया, गिरली हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे, में जू लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

जीव । जुवारि चणा गहूं शेकिया, पाडंनां रीव ॥ ते
॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक
रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उद्देक ॥ ते० ॥ २
विकथा चार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद । इष्ट
योग पाड्या कीया, रुदन विषवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ स
अने श्रावक तणा, व्रत लहीने भांग्यां । मूल
उत्तर तणां, मुझ दूषण लाग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ स
चीछी सिंह चीवरा, शकराने समली । हिंसक जीव
भवे, हिंसा कीधी सघली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सुवा
दूषण घणां, वली गर्भ गलाव्या । जीवाणी ढोल्या घ
शीलव्रत भंजाव्या ॥ ते० ॥ ३० ॥ भव अनंत भम
थकां, कीधा देह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं, तिण
प्रतिबन्ध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ भव अनंत भमतां थ
कीधा परिग्रह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसि
तिणशुं प्रतिबन्ध ॥ ते० ॥ ३२ ॥ भव अनंत भम
थकां, कीधी कुटुंबसंबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसि
तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इणि परे इहभव प
भवे, कीधां पाप अखत्र । त्रिविध त्रिविध करि वोसि
करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३४ ॥ एणि विधे ए आरा
धना, भावे करशे जेह । समय सुंदर कहे पापथी, व
छूटशे तेह ॥ ते० ॥ ३५ ॥ राग वेराडी जे सुणे, ए

श्रीजी ढाल । समयसुन्दर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥तें०॥३६॥इति॥

अथ श्रावक नीचे लखेला त्रण मनोरथने चिंतवनो महा मोहोटी निर्ज्जरा करे । तथा संसारनो अंत करे, ते लिखिये छैये॥

क्यारे हुं बाह्य तथा अभ्यंतर परिग्रह जे महापापनुं मूल, दुर्गतिने वधारनारो, काम, क्रोध, मान, माया, लोभ, विषय अने कषायनो स्वामी, महादुःखनुं कारण, महा अनर्थकारी दुर्गतिनी शिला, माठी लेश्यानो परिणामी, अज्ञान, मोह, मत्सर, राग अने द्वेषनुं मूल, दशविध यतिधर्म रूप कल्पवृक्षनो दावानल, ज्ञान, क्रिया, क्षमा, दया, सत्य, संतोष तथा बोधिबीज रूप समकितनो नाश करनारो, संयम अने ब्रह्मचर्यनो घात करनारो, कुमति तथा कुबुद्धिरूप दुःखदारिद्रनो देवा वालो, सुमति अने सुबुद्धिरूप सुखसौभाग्यनो नाश करनारो, तप संयम रूप धनने लूटनारो, लोभ क्लेश रूप समुद्रनो वधारनारो, जन्म जरा अने मरणनो देवावालो, कपटनो भंडार, मिथ्यात्व दर्शन रूप शल्यनो भरेलो, मोक्षमार्गनो विघ्नकारी, कडवा कर्म विपाकनो देवावालो, अनंत संसारनो वधारनारो, महा पापी,

पांच इंद्रियना विषयरूप वैरीनो पुष्टिनो करनारो,मो-
होटी चिंता शोक गारव अने खेदनो करनार,संसाररूप
अगाध वह्निनो सिंचवावालो,कूड कपट अने क्लेशनो
आगर, मोहोटा खेदनो करावनारो, मंदबुद्धिनो आद-
र्यो, उत्तम साधु निर्ग्रंथोये जेने निंद्यो छे, अने सर्व
लोकमां सर्व जीवोने एना सरिखो बीजो कोई विषम
नथी, मोहरूप पाशनो प्रतिबंधक, इहलोक तथा परलो-
कना सुखनो नाश करनार, पांच आश्रवनो आगर,
अनंत दारुण दुःख अने भयनो देवावालो, महोटासा-
वद्य व्यापार कुवाणिज्य कुकर्मादान नो करावनारो,
अध्रुव, अनित्य, अशाश्वतो, असार, अत्राण, अश-
रण, एवो जे आरंभ अने परिग्रह तेने हुं क्यारे छां-
डीश? जे दिवस छांडिश, ते दिवस महारो धन्य छे!
॥ ए प्रथम मनोरथ ॥

ॱ क्यारे हुं मुंडथइने दश प्रकारे यतिधर्म धारी,नव-
वाडे विशुद्ध ब्रह्मचारी, सर्व सावद्य परिहारी अणगा-
रना सत्तावीश गुणधारी, पांच समिति त्रण गुप्तिये
विशुद्धविहारी,मोहोटा अभिग्रहनो धारी. बेंतालीश
दोष रहित विशुद्ध आहारी, सत्तर भेदे संयम धारी,
बार भेदे तपस्याकारी, अंत आहारी, प्रांत आहारी,
अरस आहारी, विरस आहारी, लुखस आहारी, तुच्छ

आहारी, अंतजीवी, प्रांतजीवी अरसजीवी, विरसजीवी, लुखजीवी तुच्छजीवी, सर्व रस त्यागी, छकायना दयाल, निर्लोभी, निःस्वादी, पंखीतुल्य, वायरानी परे अप्रतिबद्ध विहारी, वीतरागनी आज्ञासहित, एहवा गुणोना धारक जे अणगार ते हुं क्यारे थईश? जे दिवस हुं पूर्वोक्त गुणवान थाइश ते दिवस धन्य छे ॥ ए बीजो मनोरथ ॥

हे क्यारे हुं सर्व पापस्थानक आलोई, निःशल्य थई, सर्व जीवराशि खमावीने, सर्व व्रत संभारीने, अढार पापस्थानक त्रिविधे वोसरावीने, चारे आहार पच्चखीने, शरीरने छेहले श्वासोच्छ्वासे वोसरावीने त्रण आराधना आराधतो थको, चार मंगलिक रूप चार शरण मुखे उच्चरतो थको, सर्व संसारने पूंठ देतो थको, एक अरिहंत, बीजा सिद्ध, त्रीजा साधु, अने चोथा केवलि प्ररूपित धर्म, तेने ध्यावतो थको, शरीरनी ममता रहित थयो थको, पादोपगमन संथारा सहित, पांच अतिचार टालतो थको, मरणने अणवांछतो थको, एहवुं पंडित मरण अंतकाले मुजने क्यारे आवशे? ॥ ए त्रीजो मनोरथ॥

ए त्रण मनोरथने श्रावक, मन वचन अने कायाए करी शुद्धपणे ध्यावतो थको सर्व कर्म निर्जरीने संसार-

तो ध्यान करे, मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रन्ये पामे ॥

अथ सूतकवीचार प्रारंभ ।

प्रथम किसीके घर जन्म होवे उसका सूतक ।

१ पुत्र जनमे तो दिन दश और पुत्री जनमे तो बारह दिन तक सूतक रहे ।

२ बारह दिन उस घरका मनुष्य देव पूजा न करे । बगल में जीमना हो तो दूसरे के घर से पानी लेकर देव पूजा करे ।

३ सुवावड़ करनेवाली करानेवाली को तो नवकार भी नहीं गीनना चाहिये ।

४ प्रसववाली स्त्री मास तक जिनपूजा न करे, दर्शन भी न करे ।

एह विचारसार प्रकरण मध्ये कह्यो है ।

५ घरना गोत्र वालाने दिन पांचका सूतक.

६ व्यवहारभाष्य की मलयगिरिकृत टीका मध्ये कह्यो है ।

७ जानवर घरमें जनमे तो दिन दो का सूतक. और जंगल में जनमे तो एक दिन का जानना । भैंस गाय का दूध १५ दिन बाद कल्पे ।

१० बकरी उटड़ी का दूध आठ दस दिन बाद कल्पे ।

१२ दास दासी के बालक जनमें तो २४ प्रहर

सूतक रहे।

ऋतुवती स्त्री संबंधी सूतक विचार—

दिन तीन तक भांडो उपगरण आदि छुवे नहीं चोवीस प्रहर बाद साफ होकर पीछे हाथ लगावे। दिन चार पडिक्कमणादिक करे नहीं। पण तपस्या करे तो लेखे लागे। दिन पांच तथा सात पीछे जिनपूजा करे। रोगादिक कारण से तीन दिन पिच्छा पीछे जो रुधिर देखने में आवे तो दोष नहीं। विवेक करी पवित्र हो-कर जिन प्रतिमा का जिनदर्शन, अग्रपूजा करे, साधु ने पडिलाभे, परन्तु जिनप्रतिमा की अंगपूजा न करे। यह चर्चरी ग्रंथ में कह्यो है।

॥ ऋतुवंती ॥

पहले दिन चंडालनी, दूजे दिन ब्रह्मघातिनी,
तीजे दिन धोबन समान, कहे पोथन समान।
चोथे दिन शुद्ध होय (फिर) दर्शन करे ॥ इसकी सज्झाय है जिसमें भिन्न भिन्न खुलासा दिया है। अधिकार रत्नसागर में है। ठाणांग सूत्रनी स्वाध्याय है जेठे दस असज्झाय है वहां देखलो ॥ इति ॥

१ घरमें मरण होय तो दिन बारह का सूतक, उसका घरको साधु आहार लेवे नहीं। उसका घरकी वस्तु से पूजा होवे नहीं, पण निशीथचूर्णी में लोकव्या

उद्देशा में कह्यो है ।

२ कलेवर से भींटियो हो तो तीन दिन पूजा न होय । जन्म मरण वाला घर दुगंछनिक कह्या है ।

३ उसके घर की चीज वस्तु खाई हो तो देवदर्शन पडिक्कमणादिक तीन दिन न करे, नवकार नो ध्यान मन में करे जिसको कोई बाधा नहीं ।

४ सूतकने अडक्या नहीं हो तो स्नान कीधा शुद्ध होय । दूसरा मनुष्य भी अडक्या हो तो सोलह प्रहर पडिक्कमणा न करे । जिसके घरे जीमे वो बारह दिन पूजादिक न करे ।

जनमता तथा देशांतरे मरण पामे या यति मरे तो एक दिन का सूतक ।

आठ वरस नो बालक मरण पामे तो आठ दिन को सूतक ।

यह विचार सार प्रकरण में कह्यो है ।

गाय वगैरह जानवर मरे तो कलेवर बारह लेजाय पीछे एक दिनका सूतक ।

अन्य जानवर नो कलेवर फेकयां पीछे असज्झाय नहीं । दास दासी आपणी नेश्रायना हो उन के मरण हो तो तीन दिनका सूतक । जितना महिनाना गर्भ पडियो हो उतना दिनका सूतक ।

यह कल्प भाष्य में कह्यो है।

वैशाख वदि १, श्रावण वदि १, कार्तिक वदि १, मिगसीर वदि १, ए चार दिन में असज्झाय जाणवी। ने सूत्र नी असज्झाय तो प्रहर १२ तक जाणवी की तो काल असज्झाय वगेरह सूत्र में है उस फक जतना।

इकवीस जातनो धोवण पाणी।

हांडिनो १ कठोथ्रनो २ चावलनो ३ तिलनो ४ तुस ५ जवनो ६ उसामणनो ७ कांजीनो ८ उन्होवाणी ९ पाक नो १०आंबा नो ११ कवीठ नो १२ दाडमनो १३ हिमनो १४ बीजोरानो १५ बोरनो १६ आंवलानो१७ नो १८ पीलनो १९ नारियल नो २० आंवली नो२१ नका काल अलग अलग सूत्र परमाणे जानना।

बावीस अभक्ष के नाम।

१ वड़, २ पिप्पल, ३ पिलखण, ४ कठुंबर ५ गुलर ए पांच फल। मदिरा, ६ मांस, ७शहत, ८मखन यह चार महाविगई जानना। १० बरफ, ११ ओला, २ सर्व मिट्टी रूण, १३ रात्री भोजन, वासी रोटी, फजर कि ६ प्रहर बाद, साम कि ४ प्रहर बाद अभक्ष हो जाती है। १४बहुबीजफल, १५ आचार,

१६ घोलयडा, १७ द्विदल, कच्चे गोरस दहीं, छाछ, दूध से अभक्ष होता है। १८ बेंगण, १९ तुच्छफल, २० अजाणीया फल, २१ चलित रस—जिस वस्तु में खराब यदबु आती हो भात वगैरह । २२ अनंतकाय—तथा जहरीली चीज अफीम, सोमल आदि । यह बावीस अभक्ष है, श्रावक साधु को नहीं लेना चाहिये।

अथ तपागच्छीय राइप्रतिक्रमण विधि ।

१ प्रथम पूर्वली रीते सामायिक लेवुं, ते ज्यां सुधी त्रण नवकार गणीए तिहां सुधी सर्व विधि जाणवो। पछी—

२ खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्‌-कुसमिण दुस्समिण ओहड्डावणि राइपायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थऊससिएणं०" कही चार लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो । पछी—

३ खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करुं ? " एम कही जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी कहेवुं ।

अप्पडिहयसासण ॥ १ ॥
कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं ॥
पढमसंघयणि ॥
उक्कोस य सत्तरिसय ॥
जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥
नवकोडिहिं केवलिण ॥
कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥
संपइ जिणवर वीसमुणि ॥
विहुं कोडिहिं वरनाण ॥
समणह कोडिसहस्स दुअ ॥
थुणिज्जइ निच्चविहाणि ॥२॥
जयउ सामी जयउ सामी ॥
रिसह सत्तुंजि उज्जिंत पहु नेमिजिण ॥
जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥
भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय ॥
मुहरिपास दुहदुरिअखंडण ॥
अवरविदेहिं तित्थयरा ॥
चिहुं दिसि विदिसि जं केवि ॥
तीआणागयसंपइअ ॥
वंदूं जिण सव्वेवि ॥३॥
सत्ताणवइ सहस्सा ॥

लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ॥
बत्तीस (य) बासिआइं ॥
तिरिअलोए चेइए वंदे ॥४॥
पनरस कोडी सयाइं ॥
कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना ॥
छत्तीस सहस असिआइं ॥
सासयबिंबाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवसीनी रीते भगवान, आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु-ए चारेने प्रत्येक एकेकुं खमासमण दइ वांदवां । पछी

५ बे खमासमण देवापूर्वक सज्झायनो आदेश मागी , एक नवकार गणी, भरहेसरनी सज्झाय कहेवी

॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो । सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥
मेअज्ज थूलिभद्दो , वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नो अ सुकोसल , पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥
हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ । भद्दो दसन्नभद्दो , पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥
जंबूपहु वंकचूलो , गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।

रहो इलाइपुत्तो , चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥
अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो।
कालयसूरि संबो . पज्जुण्णो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
भवो विण्हुकुमारो . अद्दकुमारो दढप्पहारी अ।
सिज्जंस कूरगड अ . सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
माइ महासत्ता , दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता।
जेसिं नामग्गहणे , पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥
सुलसा चंदनबाला . मणोरमा मयणरेहा दमयंती।
नमयासुंदरी सीया . नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥
राइमई रिसिदत्ता , पउमावई अंजणा सिरीदेवी।
जिट्ठसुजिट्ठ मिगावई , पभावई चिल्लणादेवी ॥ ९ ॥
बंभी सुंदरी रुप्पिणी , रेवइ कुंती सिवा जयंती य।
देवई दोवई धारिणी . कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥
पउमावई य गोरी , गंधारी लक्खमणा सुसीमा य।
जंबुवई सच्चभामा . रुप्पिणि कण्हट्ठ महिसीओ ॥११॥
जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य।
सेणा वेणा रेणा , भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥
इच्चाइ महासईओ, जयंति अकलंकसीलकलिआओ।
अज्जवि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥
पछी एक नवकार गणी , इच्छकार सुहराइ० कही
"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइपडिक्कमणे ठा-

लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ॥
बत्तीस (य) बासिआइं ॥
तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥
पनरस कोडी सयाइं ॥
कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना ॥
छत्तीस सहस्स असिआइं ॥
सासयबिंबाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवसीनी रीते भगवान, आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु-ए चारेने प्रत्येक एकेकुं खमासमण दइ वांदवां । पछी

५ बे खमासमण देवापूर्वक सज्झायनो आदेश मागी, एक नवकार गणी, भरहेसरनी सज्झाय कहेवी।

॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो । सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥ मेअज्ज थूलिभद्दो, वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी । कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ । भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥३॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ।

सो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥
अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो।
कालयसूरि संबो, पज्जुण्णो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
पभवो विण्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी अ।
सिज्जंस कूरगडू अ, सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता।
जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥
सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती।
नमयासुंदरी सीया, नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥
राइमई रिसिदत्ता, पउमावई अंजणा सिरीदेवी।
जिट्ठसुजिट्ठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी ॥ ९ ॥
बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवइ कुंती सिवा जयंती य।
देवई दोवई धारिणी, कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥
पउमावई य गोरी, गंधारी लक्खमणा सुसीमा य।
जंबुवई सच्चभामा, रुप्पिणि कण्हट्ठ महिसीओ ॥११॥
जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य।
सेणा वेणा रेणा, भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥
इच्चाइ महासईओ, जयंति अकलंकसीलकलिआओ।
अज्जवि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥

पछी एक नवकार गणी, इच्छकार सुहराइ० कही
" इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! राइपडिक्कमणे ठा-

लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ॥
बत्तीस (ब) यासिआइं ॥
तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥
पनरस कोडी सयाइं ॥
कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना ॥
छत्तीस सहस असिआइं ॥
सासयबिंबाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवसीनी रीते भगवान, आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु-ए चारेने प्रत्येक एकेकुं खमासमण दइ वांदवां। पछी

५ बे खमासमण देवापूर्वक सज्झायनो आदेश मागी, एक नवकार गणी, भरहेसरनी सज्झाय कहेवी

॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो
। सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥
मेअज्ज थूलिभद्दो, वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी।
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥
हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ।
भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥
जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो।

सो इलाइपुत्तो . चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥
ज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ।
ालयाइरि संबो . पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
भवो विण्हुकुमारो . अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ।
ज्जंस कूरगडू अ . सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
माइ महासत्ता . दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।
सिं नामग्गहणे . पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥
लसा चंदनबाला . मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।
मयासुंदरी सीया . नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥
इमई रिसिदत्ता . पउमावई अंजणा सिरीदेवी ।
जिट्ठसुजिट्ठ मिगावई . पभावई चिल्लणादेवी ॥ ९ ॥
भी सुंदरी रुप्पिणी . रेवइ कुंती सिवा जयंती य ।
वई दोवई धारिणी . कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥
उमावई य गोरी . गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।
बुवई सच्चभामा . रुप्पिणि कण्हट्ठ महिसीओ ॥ ११ ॥
क्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य ।
ेणा वेणा रेणा . भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥
च्चाइ महासईओ, जयंति अकलंकसीलकलिआओ ।
ज्ज वि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥

पछी एक नवकार गणी , इच्छकार सुहराइ० कही

" इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइपडिक्कमणे ठा-

लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ॥
बत्तीस (य) यासिआइं ॥
तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥
पनरस कोडी सयाइं ॥
कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना ॥
छत्तीस सहस असिआइं ॥
सासयबिंबाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवसीमां गंले भगवान, आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु-ने वांदे प्रत्येक एकेक खमासमण दइ वांदवां। पछी

० ने खमासमण देवापूर्वक सज्झायनो आदेश मागी, एक नवकार गणी, भरहेसरनी सज्झाय कहेवी

॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय ॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो अ ढंढणकुमारो। सिरिओ अणिआउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥
मेअज्ज थूलिभद्दो वयररिसी नंदिसेण सीहगिरी। कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिओ केसि करकंडू ॥२॥
हल्ल विहल्ल सुदंसण साल महासाल सालिभद्दो अ। भद्दो दसन्नभद्दो पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥३॥
जंबुपहू वंकचूलो गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो।

धन्नो इलाइपुत्तो , चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥
अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ।
कालयसूरि संबो , पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
पभवो विण्हुकुमारो , अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ।
सिज्जंस कूरगडू अ , सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
एमाइ महासत्ता , दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ।
जेसिं नामग्गहणे , पावप्पबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥
सुलसा चंदनबाला , मणोरमा मयणरेहा दमयंती ।
नमयासुंदरी सीया , नंदा भद्दा सुभद्दा य ॥ ८ ॥
राइमई रिसिदत्ता , पउमावई अंजणा सिरीदेवी ।
जिट्ठसुजिट्ठ मिगावई , पभावई चिल्लणादेवी ॥ ९ ॥
बंभी सुंदरी रुप्पिणी , रेवइ कुंती सिवा जयंती य ।
देवई दोवई धारिणी , कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥
पउमावई य गोरी , गंधारी लक्खमणा सुसीमा य ।
जंबुवई सच्चभामा , रुप्पिणि कण्हट्ठ महिसीओ ॥ ११ ॥
जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य ।
सेणा वेणा रेणा , भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥
इच्चाइ महासईओ, जयंति अकलंकसीलकलिआओ ।
अज्ज वि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥

पछी एक नवकार गणी , इच्छकार सुहराइ० कही
— इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइयपडिक्कमणे ठा-

उं ? '' एम कही, जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी, '' इच्छं सव्वस्सवि राइय दुच्चिंतिय॰ '' कहीए। पछी-

६ नमोत्थुणं, करेमि भंते, इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ॰ तस्स उत्तरी॰ कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहीने सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं॰ कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो ॥ पछी

७ पुक्खरवरदी॰ सुअस्स॰, वंदण॰ कही अतिचारनी आठ गाथा अथवा गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी सिद्धाणं बुद्धाणं॰ कही बेसीने, त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही, वांदणां बे देवां ॥ पछी

८ पछी भट्ट '' इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइअं आलोउं? इच्छं आलोएमि जो मे राइओ अइआरो कओ॰ '' कही सात लाखनो पाठ कही, अढार पापस्थानक आलोइ, सव्वस्सवि राइअं॰ नो पाठ कहेवो ॥ पछी

९ बेसीने जमणो ढींचण ऊभो राखी एक नवकार गणी, करेमि भंते॰ इच्छामि पडिक्कमिउं॰ कही वंदित्तुसूत्र संपूर्ण कही बे वांदणां देवां. पछी अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं॰ खामीने पछी बे वांदणां देवा ॥ पछी

१० ऊभा थइने, आयरिय उवज्झाए॰ करेमि भंते॰

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ० कही, तस्स उत्तरी० कही, तप चिंतवणीनो या चार लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते पारीने प्रगट लोगस्स कही, छट्ठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने वांदणां बे देवां ॥

११ सकल तीर्थवंदन कहीने यथाशक्ति पच्चक्खाण करवुं ॥

॥ अथ तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदुं करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड । पहेले स्वर्गे लाख बत्रीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीस ॥ १ ॥ बीजे लाख अट्ठावीस कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां । चोथे स्वर्गे अड लख धार, पांचमे वंदुं लाख ज चार ॥२॥ छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चालीस सहस प्रासाद । आठमे स्वर्गे छ हजार, नवदशमे वंदुं शत चार ॥३॥ अग्यार बारमे त्रणसें सार, नव ग्रैवेयके त्रणसें अढार । पांच अनुत्तर सर्वे मळी, लाख चोराशी अधिकां वळी ॥ ४ ॥ सहस [illegible] सार, जिनवर भुवन तणो अधिकार । [illegible] विस्तार, पचास ऊंचां बहोंतेर धार ॥५॥ [illegible] परिमाण, सभासहित एक चैत्ये [illegible] वान कोड संभाल, लाख [illegible]

मानसें उपर साठ विशाल, मनि बिंब पमाणे प्रण काल । साम कोडने वहोंतेर लाख, भुवनपतिमां देवा भाख ॥७॥ एकसो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये सेवना जाण । तेरसें कोड नेव्यासी कोड, साठ लाख वंदु कर जोड ॥ ८ ॥ बत्रीसें ने ओगणसाठ, तीरछा लोकमां चैत्यनो पाठ । त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणसें वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतिषिमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदु तेह । ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥ १० ॥ समेत शिखर वंदु जिन वीश, अष्टापद वंदु चोवीश । विमलाचल ने गढ गिरनार, आबू उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार । अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलो ने थंभण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह । विहरमान वंदु जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदिश ॥ १३ ॥ अढीद्वीपमां जे अणगार, अढार सहस शीलांगना धार । पंच महाव्रत समिति सार, पाले पळावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदु गुणमणिमाळ । नित नित ऊठी कीर्ति करुं, जीव कहे भवसायर तरुं ॥ १५ ॥ इति सकलतीर्थ ॥

१२ " सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छेजी." एम बोलीने छ आवश्यक संभारवां ॥ तेमां

१३ पच्चक्खाण कर्युं होय तो ' कर्युं छेजी ' धार्युं होय तो ' धार्युं छेजी ' कहेवुं ॥ पछी

१४ " इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं " कही नमोऽर्हत्० कहीए ॥ पछी

१५ विशाललोचन, नमोत्थुणं, अरिहंतचेइयाणं, कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी नमोऽर्हत् कही कल्लाणकंदनी प्रथम थोय कहेवी ॥ पछी

१६ लोगस्स, पुक्खरवरदी, सिद्धाणं बुद्धाणं, कही अनुक्रमे चार थोयो कहीए छीए, तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पछी

१७ नमोत्थुणं कही भगवान आदि चारने चार खमासमणे वांदवा ॥ पछी

१८ जमणो हाथ उपधि उपर थापी "अड्ढाइज्जेसु" कहेवुं । पछी

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमीसु । जावंत के वि साहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा । पंच-

वहन्वयधारा, अट्ठारससहस्ससीलंगधारा । अक्खया-
यारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि
॥ इति ॥

१९ ईशानखूणनी सन्मुख श्रीसीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग, थोय पर्यंत कहीए तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पछी

२० खमासमण दइ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग, थोयपर्यंत कहीए तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥पछी

२१ सामायिक पारवानी विधिनी रीते सामायिक पारवा सुधी सर्व विधि करवी ॥

इति राइप्रतिक्रमणविधि समाप्त ॥

तपागच्छीय देवसिक प्रतिक्रमण विधि।

इसमें स्तवन तक की विधि बराबर एक ही है । पीछे की विधि में जो फेरफार है वह नीचे मुजब—

वादनक कहीं, पूर्वली रीते चार खमासमण पूर्वक भगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, ए चार ने वांदी जमणो हाथ उपरि ऊपर थापी "अड्ढाइज्जेसु" मुनिवन्दन कहेवुं

॥ अथ वरकनक ॥

वरकनकशंखविद्रुम-मरकतघनसन्निभं विगतमोहं ।
सप्ततिशतं जिनानां सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमीसु ।
जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ-पडिग्गहधारा ।
पंचमहव्वयधारा, अट्ठारससहस्ससीलंगधारा । अक्खयाया-
रचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

१ खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह भग-
वन ! देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं काउस्सग्ग
करुं ? इच्छं, " "देवसिअ पायच्छित्त विसोहणत्थं
करेमि काउस्सग्गं " "अन्नत्थ ऊससिएणं कही चार
लोगस्स अथवा सोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते
पारी प्रगट लोगस्स कहीने पछी

३ बेसी खमासमण दइ, "इच्छाकारेण संदिसह
भगवन ! सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं " कही, वळी
खमासमण दइ " इच्छाकारेण संदिसह भगवन !
सज्झाय करुं ? इच्छं " एम कहीने आदेश मागी,
एक नवकार गणी सज्झाय कहेवी ॥ पछी

४ एक नवकार गणी, खमासमणुं

कारेण संदिसह भगवन् ! दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्तं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं दुक्खक्खओ कम्मक्खओ निमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ० " कही संपूर्ण चार लोगस्स अथवा सोलह नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी जेने लघुशांति कहेवी होय एवो एक वडेरो अथवा पोताने शांति कहेवानी होय तो पोतेज काउस्सग्ग पारीने " नमोऽर्हत् " कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी

५ इरियावही अने तस्स उत्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी

६ चउक्कसाय कही, नमोत्थुणं कही, जावंति चेइआइं० कही खमासमण दइ, जावंत केवि साहु० कही उवसग्गहरं कहेवुं, अने पछी हाथ जोडी, मस्तके राखी, जयवीयराय कही खमासमण देइ, मुहपत्ति पडिलेहवी

७ खमासमण दइ " इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? " एम कहेवुं. आ स्थाने जो साक्षात् गुरु विराजमान होय तो ते कहे के "पुणोवि कायव्वो" ते वारे शिष्य " यथाशक्ति " कही फरी खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पार्युं " कहे, तेवारे गुरु कहे " आयारो न

मोसरयो" ते सांभली शिष्य "तहत्ति" कहे ॥ पछी ८ जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा उपर थापी, एक नवकार गणी " सामाइयवयजुत्तो " कही ने थापेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ करी राखी एक नवकार गणी उठे ॥ इति देवसी प्रतिक्रमणनो विधि सामान्यपणे कह्यो, बाकी अंतर्विधि गुरूथकी समजवो ॥

दीपमालाकी स्तुति ।

सिद्धारथ ताता, जगत विख्यात, त्रिशला देवी माय । तिहां जगगुरु जनम्या, सब दुःख विरम्या, महावीर जिनराय ॥ प्रभु लेइ दीक्षा, करहित शिक्षा, देइ संवत्सरी दान । बहु कर्म खपेवा, शिवसुख लेवा, कीधो तप शुभ ध्यान ॥१॥ वरकेवल पामी, अंतरजामी, बदि काती शुभदीस । अमावस आते, पीछली राते, मुगति गया जगदीस ॥ बलि गौतमगणधर, मोहटा मुनिवर, पाम्या पंचमज्ञान । थया तत्त्व प्रकाशी, शील विलासी, पहुता मुगति निधान ॥ २ ॥ सुरपति संचरिया, रत्न उद्धरिया, रात थई तिहां काली । जिन दिया किया, कारज सिधा, तिमा थई उजवाली ॥ सहू लोके हरखी, निजर निरखी, परब कियो दीवाली।

यक्ति भोजन भरके, निज निज मन्दते, जीमे सेव मुहारी ॥३॥ सिद्धायिका देवी, विघन हरेवी, वांछित दे तिर धारिये कर सेवने ज्ञाता, जिम जगमाता, गहूंवी भ क्ति अपारी ॥ जिन गुण ट्म गावे, शिवसुख पावे, सुगुण्यो भविजन प्रार्णी । जिणचंद्र जतीसर, महामु- नीसर, जंपे गहूंवी वाणी ॥४॥ इति ॥

श्री देवचंद्रजी स्नात्रपूजा

प्रथम हाथमे कुसुमांजलि लेईने नमोर्हत् कही पढे ।

दोहा—चउतीसे अतिशय जुओ, वचनातिसय जुत्त । सो परमेसर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥१॥

ढाल—सिंघासण बेठा जग भाण, देखि भविकजन गुणमणि खाण । जे दीठे तुझ निरमल नाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा चरणकमल (सेवे चोसठ इंदा) चोवीश पूजोरे चोवीश सोभागी चोवीश वैरागी, चोवीश जि-

णंदा ॥ कु० ॥१॥ (एम कही कुसुमांजलि चढाववी. पछी प्रभुनी चरणे पूजा करीने, पछी केशर कुसुमांजली लेईने नमस्कार करी नीचे मुजब गाथा कहवी)

गाथा— जो निय गुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त । सुह पुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥२॥

ढाल—जो निज आतम गुण आणंदी, पुग्गल संग जेह अफंदी । जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शान्तिजिणंदा मां० ॥ कु० ॥ २ ॥ (एम कही प्रभुना अंगूठे पूजा करवी.)

गाथा— निम्मल नाण पयास कर, निम्मल गुण संपन्न । निम्मल धम्मोवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥३॥

ढाल—लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी । परमानंद तणी नीसाणी, तसु भगते मुज मति ठहराणी । कुसुमांजलि मेलो नेमिजिणंदा ॥ मां० ॥ कु०॥३ (एम कही प्रभुना अंगे पूजा करवी.)

गाथा— जे सिज्झा सिज्झंति जे, सिज्झस्संति अणंत । जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत ॥४॥

ढाल— शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामें जगत निहाले । उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले । कुसुमांजलि मेलो पास जि-

णंदा ॥ नो० ॥ कु० ॥४॥

(एम कही प्रभुना नैवेद्ये पूजा करिये)

गाथा— सम्मदिट्ठी देस जय, साहु साहुणी सार । आयारिज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥८॥

ढाल— चउविह संघें जे मन धार्युं, मोक्ष तणु कारण निरधार्युं । विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ नो० ॥ कु० ॥८॥

(एम कही प्रभुने मस्तके पूजा करिये ।) ॥ इति पांचमी गाथा ॥

॥ वस्तुछंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, नमिय मनरंग। कल्लाणक विहि संठविय करिसु धम्म सुपवित्त सुंदर । सय इगसित्तरि तित्थंकर, इगसमय विहरंति महियल । चवण समय इगवीश जिण, जन्म समय इगवीश । भत्तिय भावें पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥१॥

॥ एकदिन अचिरा हुलरावती ॥ ए चाल

॥ भव त्रीजे समकित गुण रम्या , जिनभक्ति प्रमुख गुण परिणम्या । तजी इन्द्रिय सुख आशंसना, करी थानक वीशनी सेवना ॥१॥ अति रागप्रशस्त

प्रभावना, मनभावना एहवी भावता । सवि जीवकरूं शासन रसी , एसी भवदया मन उल्लसी ॥२॥ लही परिणाम एहवुं भलुं , निपजावी जिनपद निरमलुं । आउ बंध विचे एक भव करी , श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहां चविय लहे नरभव उदार , भरते तिम ऐरवतेज सार , महाविदेह विजय परधान । म-ध्यखंडे अवतरे जिन निधान ॥४॥

(ढाल)— पुन्ये सुपनाहे देखे, मनमां हरष विशेषे । गजवर उज्ज्वल सुन्दर , निरमल वृषभ मनोहर ॥१॥ निरभय केशरी सिंह , लखमी अभिहि अबीह । अनुपम फूलनी माला , निरमल शशी सुकुमाला ॥२॥ तेज तरणि अति दीपे,इन्द्रधजा जगजीपे । पूरण कलस पंडूर, पद्मसरोवर पूर ॥३॥ इग्यारमें रयणायर, देखे माताजी गुणसायर । बार में भुवन विमान,तेरमें रतन निधान ॥४॥ अगनि शिखा निरधुम , देखे मा-ताजी अनोपम । हरखी राय ने भाषे , राजा अरथ प्रकाशे ॥५॥ जगपति जिनवर सुखकर , होशे पुत्र म-नोहर । इन्द्रादिक जसु नमसे , सकल मनोरथ फल-से ॥६॥ (वस्तु) पुन्य उदय ए , उपना जिन नाह । माता तव रयणी समें , देखि सुपन हरखंत जागीय । सुपन कही निज कंतने , सुपन अरथ सांभलो सोभागीय।

त्रिभुवन तिलक महागुणी , होस्ये पुत्र निधान। इंद्रादिक जसु पाय नमी, करसे सिद्धि विधान ॥१॥

(ढाल)— चन्द्रा- उल्लालानी। मोहमपति आसन कंपीयो, देई अवधे मन-आणंदीयो। मुज आतमनिस्तरण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जिनराज ॥१॥ भव अटवीपारग सत्थवाह , केवलनाणाई गुण अगाह । शिव साधन गुणअंकुर जेह, कारण उलस्यो आसाढ मेह ॥ २॥ हरखे विकस्ये, तब रोमराय, वलयादिक में निज तनु न माय। सिंहासणथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन-आनन्द कंद ॥३॥ सगअड पय सामो आवि-तत्थ, करी अंजली प्रणमिय मत्थ-मत्थ। मुख भाखे ए क्षण आज सार, तिय लोय पहु दीठो उदार ॥ ४॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानिल तापित तनु समेव। तसु शान्तिकरण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरुडवान॥५॥ ते मिथ्यादृष्टिक अगनारण सम-रत्थ, प्रगट्यो तसु प्रणमी हुओ समत्थ। इम जंपी शक्र स्तव करेवि, तब देव देवी हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तब रंभा गीतगान, सुरलोक हुओ मंगल निधान। नरक्षेत्रे आरज वंशठाम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥७॥ पिता माता घरे- उच्छव अशेष, जिनशासन मंगल अति विशेष। सुरपति देवादिक हरखसंग, संयम

लता धरै। सुभलगनेंजी ज्योतिसचक्र ते संचरै॥ जिन जनम्याजी तिन अवसर माता घरै। तिण अवसरजी इंद्रासन पण थरहरे॥ (त्रुटक) थरहरे आसन इंद्र चिंते कौन अवसर ए बन्यो। जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपन्यो॥ निज सिद्ध संपति हेतु जिनवर जागि भगतें उमच्यो। विकसंत वदन प्रमोद वधतै देवनायक गहगह्यो॥ १॥

(ढाल) तब सुरपतिजी घंटानाद कराव ए। सुरलोके जी घोषणा एह दियराव ए। नरक्षेत्रेंजी जिनवर जनम हुवो अछे। तसु भगतें जी सुरपति मंदिर गिरि गच्छे॥ (त्रुटक) गच्छेति मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिन तणो। जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुरगणो॥ तुम सुद्ध समकित थासे निरमल देवाधिदेव निहालतां। आपणा पातिक सर्व जासे नाथ चरण पखालतां॥२॥

(ढाल) इम सांभलीजी सुरवर कोडि बहु मिली, जिन वंदनजी मंदरगिरि साहमी चली। सोहमपतिजी जिन जननी घर आविया, जिन माताजी वंदी स्वामि वधाविया॥ (त्रुटक) वधाविया जिनवर हर्ष बहुलें धन्य हूं कृतपुन्य ए, त्रैलोक्यनायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए। हे जगत जननी पुत्र तुमचो

मेरु मज्जन घर करी, उत्संग तुमचे धरिय थापिय आतमा पुन्यें भरी ॥ ३ ॥

(ढाल) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठव्या, पांच रूपें जी अतिशय महिमायें स्तव्या। नाटक विधिजी नव बत्तीस आगल करे, सुर कोडिजी जिन दरशणें उमटे, (त्रुटक) सुर कोडाकोडी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती, अपछरा कोडी हाथ जोडी हाथ भाव दिखावती। जयो जयो तुं जिनराज जगगुरु एम दे आशीसए. अम त्राण शरण आधार जीवन एक तुं जगदीश ए ॥ ४॥

(ढाल) सुरगिरिवर जी पांडुक वनमें चिहुं दिशें, गिरिशिला पर जी सिंहासन सासय वसे । तिहां आवीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या, चोसठ जी तिहां सुरपति आव्या रह्या ॥ (त्रुटक) आवीया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि बनाय ए, सिद्धार्थ प्रमुख तीर्थऔषधि सर्व वस्तु अणाय ए। अच्युतपति तिहां हुकम कीनो देव कोडा कोडिनें, जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सवे सुर कर जोडिनें ॥ ५ ॥

यहां स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेकर खड़ा रहे, और आगे मुजब मुखसे पढ़े—

(ढाल) आंसिनें कारणे इंद्र कलशा भरे, ए

ध्याल ॥ आत्म साधन रसी देव कोडी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिशी। पउमदह आदि दह गंग पमुहानई तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥१॥ जाति अड कलश करि सहसअठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासण सुभतरा । उपगरण पुप्फचंगेरि पमुहासवे, आगमें भासिया तेम आणी ठवे ॥२॥ तीर्थ जल भरिय करी कलश करि देवता, गावता भावना धर्म्म उन्नतिरता। तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम्ह सगति सुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपिता, कलश पाणीमिसें भक्तिजल सींचता । मेरुसिहरे चैर सर्व आव्या वही, शक्रउच्छंग जिन देखी मन गह गही ॥ ४ ॥

(गाथा) हंहो देवा ! अणाइ कालो अदिट्ठपुव्वो, तिलोयतारणो । तिलोयबंधु, मिच्छत्तमोह विद्धंसणो। अणाइ सिसा विणासणो, देवाहि देवो दिट्ठव्वो हियकामेहिं ॥ १ ॥

(ढाल मेहउ) एम पभणंति वण भुवन जोइसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा। केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा, केइ वरइमणा वयणेण अइउच्छगा ॥ ४ ॥

(वस्तु) तत्थ अच्चुअ इन्द्र आदेश, करजोडी सर्व देवगण। लेइ कलश आदेश पामीय, अदभुत रूप

सरूप जुग । कलश गह पुरंमि सार्मीण, इंद्र कहै जग-
मार्ग्यां। पारग असुरपरमेस। नायक ज्ञायक धम्मनिहि,
करीए नस्तु अभिषेक ॥ १ ॥

(ढाल ६ मी) नीचे कमल पर उदक भरीने, पुप
कर सागर अति. ए चाल॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी
धारा, जिनवर अंग नामें । आतम निरमल भाव
करंता, वधतें शुभ परिणामें । अच्युतादिक सुरपति
मज्जन, लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी प्रमुखा
इम अभिषेक करंत ॥ १ ॥ पू० ॥ गाथा ॥ तव ईसान
सुरिंदा, सरं पभणेइ करि ए सुपसाओ । तुम्ह अंके
मत्ताहो, जिणमिणं खाण करेह ॥ २ ॥ तास धुरं
पभणाई, साहम्मिम धक्कलेमि बहुलाहो। आणाइ धम्मो
निसह होइ कयत्थाओ ॥ ३ ॥

[illegible]
१. [illegible]

(ढाल) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि, न्हवण
करे प्रभु अंगे । करिय विलेपन पुष्प माल ठवि पर
आभरण अभंग ॥ सो० ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु
जय जय रव करें, नाचे धरी आनंद । मोक्ष मारग
सारथ पति पाम्यो, भांजिसु हिव भवफंद ॥ सो० ॥
॥ २ ॥ कोडि बत्रीस सोवन उवारी, वाजिंत्र वजाई ।

सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीनें सुप्रसादे ॥सो०
॥ ३ ॥ आणी थापै एम पयंपे अम्ह निसतरिया आज,
पुत्र तुम्हारो धणीय हमारो , तारण तरण जहाज ।
॥ सो०॥ ४ ॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें, तुम्ह
सुत अम्ह आधार । सुरपति भगति सहित नंदिसर ,
करै जिनभगति उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ निय निय कल्प
गया सवि निर्झर, कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल
ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥सो०६ ॥खरतर
गच्छ जिन आणारंगी , राजसागर उवझाय । ज्ञान
धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरु नयो सुपसाय ॥सो०७॥
देवचंद जिन भगतें गायो. जनम महोच्छव छंद । बोध
बीज अंकूरो उह्लस्यो , संघ सकल आणंद ॥ सो०८ ॥

(ढाल)इम पूजा भगतें करो, आतम हित काज ।
तजिय विभाव निज भावना, रमतां शिवराजा॥इ०॥१॥
काल अनंत ते जे हुआ, होस्ये जेह जिणंद । संपई
सीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणंद ॥इ०॥२॥जनम म-
होच्छव इणि परे, श्रावक रुचिवंत। विरचै जिन प्रतिमा
तणो, अनुमोदन खंत ॥इ०॥३॥ देवचंद जिन पूजना,
करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी, कही
सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ४ ॥

॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जन्तुमहोदयकारणं। जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

इस जल पूजा [illegible] होता है तथा [illegible] और [illegible] आदि से [illegible] होता है

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमोहतमिस्रविनाशनं, परमशीतलभावयुतं जिनं। विनयकुंकुमदर्शनचन्दनैः, सहजतत्त्वविकाशकृतेऽर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनन्ता० ज्ञान० जन्म जरा० निवा० श्रीमज्जिने० चन्दनं यजामहे स्वाहा ॥ इति चन्दन पूजा ॥ यह कह कर चन्दन चढ़ावे ॥

इस चंदन पूजा से [illegible] मिथ्या अज्ञान तथा [illegible] का नाश होता है, हृदय में शान्ति और समता उत्पन्न होती है तथा देव गुरु और धर्म में विनय और भक्ति का विकास होता है।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्धमनोरमै-र्विशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं हि यजामहे ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ यह कहकर पुष्प चढ़ावें ॥

इस पुष्पपूजा में मन कायामें सद्भावना जागृत होती है, जिस की निराशा होकर शुभ परिणामों का उदय होता है तथा यथार्थ तत्त्व का बोध होता है।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं । अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षितः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ इति धूप पूजा ॥ यह कहकर धूप अगरबत्ती खेवें ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मरूप इंधन का दाहक निर्मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का अंत परिशाटन होकर कर्मबंधन छूटता जाता है तथा अंतःकरण में रागद्वेषादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

भविकनिर्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं । सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीपपूजा ॥ सप्तमीदीपक प्रकार ॥

इस दीपपूजा से भव्यजनों के हृदय में निर्मल बोधरूप विकाश होता है, उससे प्रकार के सद्गुणों के उपार्जन में रुचि उत्पन्न होती है तथा उन सद्गुणों के उपार्जन के द्वारा मनुष्य आत्मिक सुख का पात्र बनता है।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमङ्गलकेलिनिकेतनं, परममङ्गलभावमयं जिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोऽक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अष्टम पावन प्रकार ॥

इस अक्षत पूजा से मनुष्य भोगों की श्रेणी का स्थान बनता है, उसका सदा मङ्गलमय बन जाता है, उसके सर्व कार्य उसके लिये मंगलकारी होते हैं तथा उसकी पवित्र कीर्ति सर्वत्र विस्तृत होती है।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्धमनोरमै-विंशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं हि यजाम्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ यह कहकर पुष्प चढ़ावें ॥

इस पुष्पपूजा से मन रूपी में सद्भावना जागृत होती है, चित्त की निर्मलता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है तथा यथार्थ तत्त्व का बोध होता है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं । अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षितः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ इति धूप पूजा ॥ यह कहकर धूप भगवान्को खेवें ॥

इस धूप पूजा से आठ प्रकार के कर्मरूप ईंधन का दाहक, निर्मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का आने परिशाटन होकर कर्मबंधन छूटता जाता है तथा अंतःकरण से रागद्वेषादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

भविकनिर्म्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं । सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीपपूजा ॥ [illegible] ॥

इस दीपपूजा से अज्ञानों के हृदय में निश्चय ज्ञान का विकाश होता है, उसके प्रकाश से सद्गुणों के उपार्जन में रुचि उत्पन्न होती है तथा आगे सद्गुणों के उपार्जन के द्वारा क्रमश शान्ति [illegible] का पार करता है ।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमङ्गलकेलिनिकेतनं, परममङ्गलभावमयं जिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोऽक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ [illegible] ॥

इस अक्षत पूजा से [illegible] का कल्याण होता है, उसका सदाचार मङ्गलमय बन जाता है, उसके [illegible] मङ्गलकारी होते हैं तथा उसकी पवित्र कीर्ति सर्वत्र विस्तृत होती है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्धमनोरमैः-विशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं हि यजाम्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ यह कहकर पुष्प चढ़ावें ॥

इस पुष्पपूजा से भव्य आत्मामें सद्भावना जागृत होती है, जिस की निर्मलता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है तथा परमतत्त्व का बोध होता है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं । अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षितः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ इति धूप पूजा ॥ यह कहकर धूप आगरबत्ती खेवें ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मरूप ईंधन का दाहक निर्मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का शनैः परिशाटन होकर कर्मबन्धन छूटता जाता है तथा अंतःकरण में रागद्वेषादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

भविकनिर्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभदीपकदीपनं । सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृते जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने॰ दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीपपूजा ॥ अनर्गदीपक मदाने ॥

इस दीपपूजा से भव्यजनों के हृदय में निर्मल बोध का विकाश होता है, उसके प्रभाव से सद्गुणों के उपार्जन में रुचि उत्पन्न होती है तथा आगे सद्गुणों के उपार्जन के द्वारा मनुष्य शान्ति-भाव का पात्र बनता है ।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमङ्गलकेलिनिकेतनं, परममङ्गलभावमयं जिनं । श्रयति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोऽक्षतस्वस्तिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने॰ अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ प्रगट मानव प्रताप ॥

इस अक्षत पूजा से मनुष्य सम्पूर्ण मंगलों का स्थान बनता है, उसका सद्भाव मङ्गलमय बन जाता है, उसके सर्व कार्य उसके लिये मंगलकारी होते हैं तथा उसकी पवित्र कीर्ति सर्वत्र विस्तृत होती है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्धमनोरमै-र्विशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं हि यजाम्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥ यह कहकर पुष्प चढावे ॥

इस पुष्पपूजा से मन कायमें सद्भावना जागृत होती है, चित्त की स्थिरता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है तथा यथार्थ तत्त्व का बोध होता है।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं । अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षितः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ ॥ इति धूप पूजा ॥ यह कहकर धूप अगरबत्ती खेवे ॥

इस धूप पूजा से आठ प्रकार के कर्मरूप इंधन का दाहक निर्मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का ज्ञान परिशाटन होकर कर्मबंधन छूटता जाता है तथा अंतःकरण में रागद्वेषादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है .

अथ [illegible] ॥

श्लोक ॥

[illegible] इमनादि [illegible]

[illegible] परमात्मनां [illegible]

[illegible] परमात्मने० [illegible] यजामहे स्वाहा

इति [illegible]

[illegible] है, [illegible]

[illegible] है [illegible]

अथ [illegible] पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेन्धनदाहनं विमलसंवरभावसुधूपनं ।
अशुभपुद्गलगन्धविवर्जितं जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहर्षितः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
॥ इति धूप पूजा [illegible] समाप्ता [illegible] ॥

[illegible] दहन का सूचक [illegible] है अर्थात् कर्म पुद्गलों का धीरे परि-शाटन [illegible] जाता है तथा अंतःकरण से रागद्वेषादि का विनाश [illegible] आनंद का संचार होता है।

॥ अथ अर्घपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकलगुण-
धानं देववन्द्यं स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं सत्यमु-
त्सपन्ति, परमसकलरूपं मोक्षसौख्यं भजन्ति ॥ १ ॥
० ह्रीं परमात्मने० अर्घ्यं यजामहे स्वाहा । घंटा
[illegible] थाल ॥ इति अर्घपूजा ॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

॥ [illegible] ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोप-
विष्टस्नपनावसाने । दध्याक्षतैः कुसुमचन्दनगन्ध-
धैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥ १ ॥
तद्वत् श्रावकवर्ग एव विधिनालंकारवस्त्रादिकं, पूजा
र्थकृतां करोति सततं शक्त्यानुसाराद्बुधः । संसार-
स्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्या-
स्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षयाकाङ्क्षया ॥२॥ ॐ
ह्रीं० परमात्मने०, वस्त्रेण यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्र चढावे ॥

॥ इति प्राप्त प्रकारी पूजा ॥

———

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलपुद्गलसङ्गविवर्जनं, सहजचेतनभावविलासकं । सरसभोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ नैवेद्य मिठाई पकवान चढ़ावें ॥

इस नैवेद्यपूजा से मनुष्य का मन [illegible] होने के कारण [illegible] दर्पण के समान बन जाता है, उसमें [illegible] आत्मा का साक्षात् दर्शन होता है तथा उसी [illegible] का अंत हो जाता है।

॥ अथ फलपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं । विहितमोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥८॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ [illegible] ॥

[illegible]

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६	८	निग्गामगाद्दाण	निग्गामणगाद्दाण
६०	१९	द्विथमिणं	देथमिणं
६१	५	गिरिहामि	गरिहामि
७०	१५	द्विट्ठि	द्विट्ठि
७२	१	अवस्संति	अविस्संति
७५	४	गिरिहामि	गरिहामि
७८	७	भरिते	भरिमे
८३	११	जयणिज्जं	जावणिज्जं
८३	१८	गिरिहामि	गरिहामि
८४	१३	अणुजाह	अणुजाणह
८५	१०	जयणिज्जं	जायणिज्जं
८६	१७	द्विट्ठि	दिट्ठि
९१	६	जयणिज्जं	जावणिज्जं
९१	१३	गिरिहामि	गरिहामि
९७	१	डहं	डहेत्
९३	१३	अहणा	अहेणा
९४	९	"वनवलक"	"वरवलक"
९५	१६	पाच्छित्त	पायच्छित्त
१००	१७	महत्मागारेणं	महत्मागारेणं

शुद्धाशुद्ध पत्र ॥

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	१०	उमभिग्णं	ऊमभिग्गं
९	७	फुल्लिग	फुलिंग
१०	६	भमलीए	भमलिए
१३	१८	देवसिगं	गाइगं
२७	४	यदे	यंदे
३८	२७	दुणए	दुणए
४०	१४	मङ्कगा	मङ्कगा
४८	४	जम्बू	जम्बु
४८	१३	श्रीगद	श्रीगद्य
४७	१	गाम	गामं
५८	२१	गणगहिं	गणगहिं
५०	१८	नाहणं	नाहणं
६१	१८	अवसंणि	अविसंणि
६१	१८	संगई	संगइ
६२	१४	निरिणेगण ग	निरिणेगण
६४	१७	अवसंणि	अविसंणि
६४	१७	संगई	संगइ

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६६	८	निप्रात्कारा	निप्रात्कारा
१६९	११	सम्परस्य	सम्परस्यं
१७०	७	मोक्षोपायेति	मोक्षोपाय इति
१७१	१९	सर्पर्यवमति	सर्पर्यवसित
१७१	२०	अपर्यवमति	अपर्यवसित
१७६	३	कथित	कथित

९६ १ले भान्तु—

अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं, ॥इच्छं॥

जगचिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण ।

जगबंधव जगसत्थवाह , जगभावविअक्खण ।

अट्ठावयसंठविअरूव, कम्मट्ठविणासण ।

चउवीसंपि जिणवर जयंतु ,



पृष्ठ	पङ्क्तिः	अशुद्ध	शुद्ध
१०७	८	गोमरामि	घोमिरामि
१०८	४	दिगमोहेयं	दिसामोहेणं
१०८	८	महसारागरेणं	महसागरेणं
१०९	२०	महसागरेणं	महसागरेणं
११०	८	गोमरामि	घोमिरामि
१११	२	गोमरामि	गोमिरामि
११५	१	अहगिल्ल	अणहिल्ल
११३	१६	देवागमाणि	देवागमाणि
१२८	१३	[illegible]	[illegible]
१२८	१४	कुजराण	कुंजराण
१५१	१	[illegible]	[illegible]
१६१	३	[illegible]	[illegible]
१६७	४	[illegible]	[illegible]
१६७	५	[illegible]	[illegible]
१६४	२	[illegible]	[illegible]
१६४	५	[illegible]	[illegible]
१६५	३	[illegible]	[illegible]
१६७	३	[illegible]	[illegible]
१६७	१०	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६६	८	निग्रहस्थान	निग्रहस्थान
१६९	१२	सम्यक्त्व	सम्यक्त्वं
१७०	२	मोक्षोपायेति	मोक्षोपाय इति
१७१	१९	सपर्यवसति	सपर्यवसित
१७१	२०	अपर्यवसति	अपर्यवसित
१७६	३	कथित	कथित

२७१से आगे—

अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करूं. ॥इच्छं॥
जगचिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण ।
जगबंधव जगसत्थवाह , जगभावविअक्खण ।
अट्ठावयसंठविअरूव, कम्मट्ठविणासण ।
चउवीसंपि जिणवर जयंतु ,



पृष्ठ	पङ्क्तिः	अशुद्ध	शुद्ध
७	८	वोमरामि	वोमिरामि
८	४	दिमगोहेगं	दिमामोहेणं
८	८	महत्तरागरेणं	महत्तरागारेणं
९	२०	महसागरेणं	महसागारेणं
०	८	वोमरामि	वोसिरामि
१	२	वोमरामि	वोसिरामि
४	१	अहगिल्ल	अणहिल्ल
३	१२	देशामगार्मा	देसावगासी
८	१३	अर्गडाग	अर्थडिग
८	१४	कुजरस्म	कुंजरस्म
१	१	आपागा	अपापा
१	३	ऊस	ऊम
२	४	ऊसमि०	ऊममि०
२	५	फरि	फिर
४	६	उपाध्याय	उपाध्यायाय
४	७	सुग	सूय
५	६	अवध्य	अवन्ध्य
०	७	प्राणायाम	प्राणायुः
०	१०	पंचविंशत्यां	पञ्चविंशत्सु

जैनाचार्य श्री जिनकीर्तिसूरि विरचित —

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

यानें

नवकारमंत्रकल्प.

यदि आपको परमकल्याणकारक [illegible] नवकार मंत्र [illegible] मंत्र का महत्त्व तथा इसका प्रभाव चमत्कारिक प्रकार [illegible] जानना हो तो [illegible] इसको मंगवा कर पढ़िये।

इसमें उपासना विधि सहित [illegible] करने [illegible] गणस्थ प्रकार, आनुपूर्वी गुणने की विधि, प्रस्तार, [illegible], [illegible] उद्दिष्ट, नवकार मंत्र के [illegible] अर्थ, अष्ट सिद्धियों का वर्णन [illegible] प्राणायाम (योगमार्ग) आदि अनेक उपयोगी विषयों का वर्णन है [illegible] ग्रन्थ जैन [illegible] इसलिये हिन्दी अनुवाद भी [illegible] पूर्वक किया गया है।

[illegible] लगभग [illegible] पृष्ठ [illegible] रु. ३॥ [illegible] है। किन्तु इसका [illegible] प्रचार करने के लिए [illegible] [illegible] रु. २) कर दिया गया है।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस

बीकानेर (राजपूताना)

जैनाचार्य श्री जिनकीर्तिसूरि विरचित—

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

याने

नवकारमंत्रकल्प.

यदि आपको परममांगलिक पंचपरमेष्ठि नमस्कार रूप नवकार मंत्रका महत्व तथा इसका महान् चमत्कारिक प्रभाव जानना हो तो इसको मंगवा कर पढ़िये।

इस में उपासना विधि याने उस का जप या ध्यान करने का समस्त प्रकार, आनुपूर्वी गुणने की विधि, प्रस्तार, भंगसंख्या, नष्ट, उद्दिष्ट, नवकार मंत्र के १०८ अर्थ, अष्ट सिद्धियों का वर्णन और प्राणायाम (योगमार्ग) आदि अनेक उपयोगी विषयों का वर्णन है। समस्त जन लाभ उठा सकें इसलिये हिन्दी अनुवाद भी विस्तार पूर्वक किया गया है।

रॉयल आठ पेजी साइज़के लगभग ३०० पृष्ठ होने पर मूल्य रू. ३॥ रखा है। किंतु इसका विशेष प्रचार करने के लिए दाम घटाकर फकत रू. २) कर दिया गया है।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस

बीकानेर (राजपूताना)

जैनाचार्य श्री जिनकीर्तिसूरि विरचित—

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

याने

नवकारमंत्रकल्प.

यदि आपको परममाङ्गलिक पंचपरमेष्ठि नमस्कार रूप नवकार मंत्रका महत्त्व तथा उसका महान् चमत्कारिक प्रभाव जानना हो तो इसको मंगवा कर पढ़िये।

इस में उपासना विधि याने इस का जप या ध्यान करने का समस्त प्रकार, आनुपूर्वी गुणने की विधि, प्रस्तार, भंगसंख्या, नष्ट, उद्दिष्ट, नवकार मंत्र के १०८ अर्थ, मन्त्र सिद्धियों का वर्णन और प्राणायाम (योगमार्ग) आदि अनेक उपयोगी विषयों का वर्णन है। समस्त जन लाभ उठा सकें इसलिये हिन्दी अनुवाद भी विस्तार पूर्वक किया गया है।

रायल आठ पेजी साइज़के लगभग ४०० पृष्ठ होने पर मूल्य रू. ३॥) रक्खा है। किंतु इसका विशेष प्रचार करने के लिए दाम घटाकर फकत रू. २) कर दिया गया है।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेस

बीकानेर (राजपूताना)

सरूप जुग । कलशा गह पुठंलि सामीप, इंद्र कहे जग-तारणो। पारग अम्हपरमेस। नायक दायक धम्मनिहि, करीय तसु अभिषेस ॥ १ ॥

(ढाल ६ मी) मीर्थ कमल पर उदक भरीने, पुष्कर सागर आवे, प ञाल॥ पूर्ण कलश सुनि उदकनी धारा, जिनवर थीग नामें । आतम निरमल भाव करंता, वधमें शुभ परिणामें । अच्चुतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत । सामानिक इंद्राणी पमुहा इम अभिषेक करंत ॥ १ ॥ पू० ॥ गाहा ॥ नव ईसान सुरिंदो, मर्ध पभणेइ करि एु सुपसाओ । तुम अंके महनाहो, खिणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ १ ॥ मामवंदा पभणइ, साहम्मीय वच्छलंमि बहुलाहो । आणाइ धंमंग निणह होउ फलन्धाओ ॥ २ ॥

इतना कहके सो० [illegible] करत कलश पुष्प

[illegible] नाचे गुनार मुंग २१

(ढाल) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि,न्हवण करी प्रभु अंगे । करिय विलेपण पुष्प माला ठवि वर आभरण अभंग ॥ सो० ॥ १ ॥ तब सुरवर बहु जय जय रव करे, नाचे धरी आणंद । मोक्ष मारग साथ पति पाम्यो, भांजिसु हिव भवफंद ॥ सो० ॥ ॥ २ ॥ कोडिवर्मीस सोवन उवरी, वाजिंत्र वरनादे ।

ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोडी हसी, उल्लसीनें धसी खीरसागर दिशी। पउमदह आदि दह गंग पमुहानई तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥१॥ जाति आठ कलश करि सहसअठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासणं सुभतरा । उपगरण पुष्फचंगेरि पमुहासवे, आगमें भासिया तेम आणी ठवे ॥२॥ तीर्थ जल भरिय करी कलश करि देवता, गायना भावता धर्म्म उन्नतिरता। तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम्ह सगति सुचि भगति इम भावना ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपिता, कलश पाणीमिसें भक्तिजल सींचता । मेरुसिहरो वरे सर्व आव्या वही, शक्रउच्छंग जिन देखी मन गह गही ॥ ४ ॥

(गाथा) हंहो देवा न अणाइ कालो अदिट्ठपुव्वो, तिलोयतारणो । तिलोयबंधू, मिच्छत्तमोह विद्धंसणो। अणाइ तिण्हा विणासणो, देवाहि देवो दिट्ठव्वो हियय कामेहिं ॥ १ ॥

(ढाल तेहज) एम पभणंति वण भुवन जोइसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा। केवि कप्पट्ठिया केवि मित्ताणुगा, केई वरमणा वयणेण अइउच्छुगा ॥२॥

(वस्तु) तत्थ अच्चुयर इन्द्र आदेश, करजोडी सवि देवगण। लेइ कलश आदेश पामीय, अद्भुत रूप

॥ अथ अष्टप्रकारी पूजा लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं। जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंतज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

इस जल पूजा से आत्मा मे [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] है

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमोहतमिस्रविनाशनं, परमशीतलभावयुतं जिनं। विनयकुंकुमदर्शनचंदनैः, सहजतत्वविकाशकृतेऽर्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनंतानं० ज्ञान० जन्म जरा० निवा० श्रीमज्जिने० चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति चन्दन पूजा ॥ [illegible]

इस चन्दन पूजा से [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

।

सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जनर्नाने सुपसाई ॥सो० ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे अम्ह निसतरिया आज, पुत्र तुम्हारो धणीय हमारो, तारण तरण जहाज । ॥ सो०॥ ४ ॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें, तुम्ह सुत अम्ह आधार । सुरपति भगति सहित नंदिसर, करे जिनभगति उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्जर, कहिनां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥सो०६ ॥खरतर गच्छ जिन आणारंगी, राजसागर उवझाय । ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरु तणो सुपसाय ॥सो०७॥ देवचंद जिन भगतें गायो. जनम महोच्छव छंद । बोध बीज अंकुरो उल्लस्यो, संघ सकल आणंद ॥ सो०८ ॥

(ढाल)इम पूजा भगतें करो. आतम हित काज। तजिय विभाव निज भावना, रमतां शिवराज॥इ०॥१॥ काल अनंत ते जे हुआ, होस्ये जेह जिणंद । संपई सीमंधर प्रभु, केवल नाण दिणंद ॥इ०॥२॥जनम महोच्छव इणि परे, श्रावक रुचिवंत। विरचै जिन प्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत॥इ०॥३॥ देवचंद जिन पूजना, करता भवपार । जिन पडिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ४ ॥

॥ इति स्नात्रपूजा विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ अर्घ्यपूजा ॥

॥ श्लोकः ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकलगुणनिधानं देवमर्हं स्तुवन्ति । प्रतिदिवसमनल्पं तत्त्वमुद्भासयन्ति, परमपदस्वरूपं मोक्षसौख्यं भजन्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अर्घ्यं यजामहे स्वाहा । [illegible] ॥ इति अर्घ्यपूजा ॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

॥ [illegible] ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरिनिहितस्नपनावसाने । दध्यक्षतैः कुसुमचन्दनगन्धधूपैः, कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एव विधिनालंकारवस्त्रादिकं, पूजार्थं सुजनं करोति सततं [illegible] । संसारस्य निरञ्जनस्य विजितारातेस्त्रिलोकीपतेः, स्वस्य [illegible] जनस्य निर्वृतिकृते [illegible] ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं० परमात्मने०. वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ [illegible] ॥

॥ इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलपुद्गलसङ्गविवर्जितं, सहजचेतनभावविलासकं। सरसभोजननव्यनिवेदनात्, परमनिर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ नैवेद्य मिठाई पकवान चढ़ावें ॥

[illegible] नैवेद्य [illegible] अन्न [illegible] रहित होने [illegible] समान बन जाता है उससे सहज [illegible] होता है [illegible] जसे मोक्ष मे [illegible] है।

॥ अथ फलपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं। विहितमोक्षफलस्य प्रभोः पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजना ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ [illegible]

[illegible] और [illegible] जाता है, सब [illegible] का नाश हो [illegible] प्राप्ति होती है तथा उत्तम मोक्ष भाव मे [illegible] शाश्वत शांति सुख का भोग करता है।

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६	७	निग्गामाद्दाण	निग्गामगमाद्दाण
६०	१९	दिवसियं	देवसियं
६१	५	णिरिहामि	गरिहामि
७०	१५	दिट्ठि	दिट्ठि
७८	१	अपस्संनि	अविस्संनि
७०	४	णिरिहामि	गरिहामि
७८	७	णरिसे	णरिसे
८३	११	जवणिज्जं	जावणिज्जं
८३	१८	णिरिहामि	गरिहामि
८४	१३	अणुजाण	अणुजाणह
८४	१०	जवणिज्जं	जावणिज्जं
८६	१८	दिट्ठि	दिट्ठि
९१	६	जवणिज्जं	जावणिज्जं
६१	१६	णिरिहामि	गरिहामि
६२	१	डहैं	डैंम
६३	१३	अइणा	अईणा
९४	८	"वनचलक"	"वरचलक"
६५	१६	पाविछम	पायविछम
१००	१७	सहस्सागारेणं	सहस्सागारेणं

শুদ্ধাশুদ্ধ পত্র ॥

পৃষ্ঠা	পংক্তি	অশুদ্ধ	শুদ্ধ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६	७	निग्गामणद्वाग	निग्गामणद्वाग
६०	१०	द्विवमिणं	इंदमिणं
६१	५	तिरिहामि	गरिहामि
७०	१५	द्विठ्ठि	दिट्ठि
७२	१	अणस्मंनि	अविरमंि
७५	४	तिरिहामि	गरिहा
७८	७	चरित्ते	चरिभे
८३	११	जवणिअं	जावणि
८३	१८	तिरिहामि	गरिहा
८४	१३	अणुजाद	अणुजा
८४	१५	जवणिअं	जावि
८६	१०	द्विठ्ठि	दिट्ठि
९१	६	जवणिअं	जावि
९१	१३	तिरिहामि	गरिह
९२	१	ॐ	ॐम
९३	१३	अइणा	अइ
९४	२	"बनरुनक"	"धरम
९५	१६	पाविछम	पावि
१०५	१७	महमाणोरेणं	महम

[illegible]

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

मेहिया जैन प्रिंटिंग प्रेस, [illegible]

बीकानेर (राजपू[illegible]

[illegible] –

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

[illegible]

नमस्कारमंत्रकल्प.

[illegible]

इसमें [illegible] प्रकार, आनुपूर्वी गुणने की विधि, [illegible] आदि [illegible] हिन्दी अनुवाद [illegible] किया गया है।

[illegible] पृष्ठ [illegible] है। किंतु इसका विशेष प्रचार करने के [illegible] कर दिया गया है।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

सेठिया जैन प्रिंटिंग प्रे[illegible]

बीकानेर (राजपू[illegible]